दैनिक
देवव्रत
Dainik DEVVRAT
www.dainikdevvrat.in

आजमगढ़, उ.प्र.
वर्ष 35, अंक 131
पृष्ठ 8, मूल्य 3.00
30 जनवरी 2026, शुक्रवार

लखनऊ, नई दिल्ली, कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी, सोनभद्र (राबर्ट्सगंज, अनपरा, शक्तिनगर), सिंगरौली, मिर्जापुर, अयोध्या, गोरखपुर, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, मऊ, अम्बेडकरनगर एवं आजमगढ़ से प्रसारित

E-mail : dainikdevvrat@gmail.com
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इकोनामिक सर्वे : अनहेल्दी फूड भरेगा सरकार का खजाना

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने गुरुवार को संसद में आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26 पेश किया। इसमें एक नई तरह की टैक्स पॉलिसी का संकेत मिलता है। सर्वे अनहेल्दी फूड पर भारी टैक्स लगाने का सुझाव देता है। इसकी वजह देश में मोटापे की लहर है। इकोनॉमिक सर्वे में आगाह किया गया है कि भारत में मोटापे के बढ़ते मामले लंबे समय में स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी पड़ सकते हैं। सर्वे के अनुसार, मोटापे से जुड़ी बीमारियां अब एक बार के अस्पताल इलाज के बजाय लगातार आउट पेशेंट देखभाल की मांग कर रही हैं। इससे स्वास्थ्य सेवाओं, जांचों और प्राथमिक देखभाल सुविधाओं पर दबाव बढ़ेगा। ये बीमारियां सामान्य बीमारियों की तरह नहीं हैं जिनमें एक बार इलाज के बाद छुटकारा मिल जाता है। मोटापे से जुड़ी बीमारियों में मरीजों को नियमित जांच, फॉलो–अप और लंबे समय तक इलाज की जरूरत होती है। इससे डॉक्टरों से सलाह लेने, जांच कराने और बार–बार फॉलो–अप के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की मांग बढ़ेगी।

सर्वे ने मोटापे को गैर–संचारी रोगों (NCD) और डिजिटल लत जैसी प्रमुख स्वास्थ्य चिंताओं के साथ जोड़ा है। इसमें कहा गया है कि इन समस्याओं से निपटने के लिए केवल सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। हेल्थ पर फोकस्ड चौप्टर में मोटापे, गैर–संचारी रोगों और डिजिटल लत के प्रबंधन में निजी क्षेत्र और नागरिकों की भूमिका पर जोर दिया गया है। 2019–21 के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों के

अनुसार, सर्वेक्षण में बताया गया है कि 24% भारतीय महिलाएं और 23% भारतीय पुरुष अधिक वजन वाले या मोटे हैं। 15–49 वर्ष की आयु के वयस्कों में 6.4% महिलाएं और 4% पुरुष मोटे हैं। पांच साल से कम उम्र के बच्चों में अधिक वजन की समस्या 2015–16 में 2.1% से बढ़कर 2019–21 में 3.4% हो गई है।

सर्वे ने बचपन के मोटापे को एक गंभीर चिंता का विषय बताया है। इसमें कहा गया है कि 2020 में भारत में 3.3 करोड़ से अधिक बच्चे मोटे थे। यह संख्या 2035 तक 8.3 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। सर्वेक्षण ने मोटापे के बढ़ते स्तर के पीछे जीवनशैली से जुड़े कारणों पर रोशनी डाली है। इनमें शारीरिक गतिविधि में कमी, स्क्रीन टाइम में बढ़ोतरी और खान–पान की आदतों में बदलाव शामिल हैं, खासकर बच्चों और युवाओं में।

एक मुख्य कारण भारतीय खान–पान में अल्ट्रा–प्रोसेस्ड फूड्स (UPFs) का तेजी से प्रसार है। सर्वे में कहा गया है, भारत UPFs की बिक्री के लिए सबसे तेजी से बढ़ते बाजारों में से एक है। इसमें 2009 से 2023 तक 150% से अधिक की बढ़ोतरी हुई है। 2006 में UPFs की खुदरा बिक्री 0.9 अरब डॉलर से बढ़कर 2019 में लगभग 38 अरब डॉलर हो गई। इसी अवधि में पुरुषों और महिलाओं दोनों में मोटापे का स्तर लगभग दोगुना हो गया। सर्वेक्षण ने UPFs की बढ़ती खपत के आर्थिक प्रभाव पर भी ध्यान आकर्षित किया। इसमें कहा गया है, UPFs के बढ़ते इस्ध्तेमाल से स्वास्थ्य खर्च में बढ़ोतरी, उत्पादकता में कमी और दीर्घकालिक वित्तीय बोझ के जरिये एक महत्वपूर्ण आर्थिक लागत आती है।

राजकोषीय उपायों की भी रूपरेखा तैयार की गई। सर्वेक्षण में कहा गया है, श्चीनी, नमक या वसा के लिए निर्धारित सीमा से ज्ध्यादा न्च्ये पर जीएसटी का सबसे ऊंचा स्लैब और सरचार्ज लगाने की संभावना पर विचार किया जा सकता है। इससे प्राप्त राजस्व का इस्ध्तेमाल पोषण शिक्षा और गैर–संचारी रोग रोकथाम कार्यक्रमों का समर्थन करने के लिए किया जा सकता है। साथ ही, सर्वे में चल रहे सरकारी हस्तक्षेपों की रूपरेखा भी बताई गई। एनसीडी की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत 31.5 करोड़ से अधिक वयस्कों की जांच की गई है। 8.47 करोड़ को अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त पाया गया है। मोटापे में बढ़ोतरी को धीमा करने के प्रयासों के हिस्से के रूप में आहार जागरूकता, शारीरिक गतिविधि और तेल की खपत को कम करने पर केंद्रित अभियानों का जिक्र किया गया।

नीतीश कैबिनेट ने किया SC-ST छात्रों की छात्रवृत्ति में 100% का इजाफा

पटना, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। बिहार बजट सत्र शुरू होने से पहले आज नीतीश कैबिनेट की महत्वपूर्ण बैठक हुई। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में 31 प्रस्तावों को मंत्रिपरिषद ने अपनी मंजूरी दी है। बिहार सरकार ने सरकारी और मान्यता प्राप्त स्कूलों में पढ़ने वाले अनुसूचित जाति (एसी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्र–छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति की राशि को दोगुना कर दिया है। सरकार के इस कदम से राज्य के लगभग 27 लाख छात्रों की शिक्षा को बल मिलेगा।

नीतीश कैबिनेट ने शिक्षा के प्रति बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्ति के स्लैब में बड़ा बदलाव किया गया है। इसके तहत कक्षा 1 से 4 के बच्चों को अब 600 के बदले 1200 मिलेंगे। जबकि कक्षा 5 से 6 बच्चों की राशि 1200 से बढ़ाकर 2400 कर दी गई है। जबकि कक्षा 7 से 10 से विद्यार्थियों को अब 1800 की जगह 3600 वार्षिक मिलेंगे।

कैबिनेट हॉस्टल में रहने वाले कक्षा 1 से 10 तक के छात्रों के लिए वार्षिक सहायता 3000 से बढ़ाकर 6000 कर दी गई है। मुख्यमंत्री पिछड़ा वर्ग एवं अत्यंत पिछड़ा वर्ग छात्रावास अनुदान योजना के तहत मिलने वाली सहायता में भी सरकार ने दरियादिली दिखाई है। अब छात्रों को मिलने वाले 1000 के मासिक अनुदान को बढ़ाकर 2000 कर दिया गया है। बढ़ी हुई यह राशि 1 जनवरी 2026 से लागू होगी, जिसके लिए सरकार ने 19.56 करोड़ का बजट मंजूर किया है।

सरकार का मानना है कि इस योजना पर खर्च होने वाले 519.64 करोड़ रुपये दलित और आदिवासी समाज के बच्चों में ड्रॉपआउट (बीच में पढ़ाई छोड़ना) की दर को कम करेंगे। यह फैसला समाज के अंतिम पायदान पर खड़े परिवारों के आर्थिक सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है।

कैबिनेट बैठक में केवल शिक्षा ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे के विकास और प्रशासनिक सुधारों से जुड़े 31 अन्य प्रस्तावों को भी स्वीकृति दी गई है। बजट सत्र से पहले लिए गए ये फैसले राज्य के ग्रामीण विकास और सामाजिक सुरक्षा की दिशा में सरकार की प्राथमिकता को दर्शाते हैं।

न्यायालय का काम सिर्फ फैसले सुनाना नहीं
किसी पर जुल्म, उत्पीड़न और नाइंसाफी न हो यह सुनिश्चित करना भी है-अखिलेश

लखनऊ, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने तीखे और आक्रामक तेवर में कहा कि सच्चा न्याय वही है जिसमें किसी के साथ रत्ती भर भी अन्याय न हो। उन्होंने कहा कि न्यायालय का काम सिर्फ फैसले सुनाना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि न किसी पर जुल्म हो, न उत्पीड़न और न ही किसी के साथ नाइंसाफी। कानून की भाषा साफ होनी चाहिए, लेकिन उससे भी ज्यादा साफ नीयत होनी चाहिए। अखिलेश यादव ने कहा कि देश में संविधान है, कानून है, फिर भी अगर भेदभाव और अन्याय हो रहा है तो यह सीधे–सीधे सत्ता की नाकामी और दुर्भावना को दर्शाता है। उन्होंने दो टूक कहा कि किसी भी व्यवस्था में दोषी को बचाना और निर्दोष को फंसाना सबसे बड़ा अपराध है, जिसे समाजवादी पार्टी किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करेगी। संविधान साफ कहता है। भेदभाव नहीं चलेगा।

फिर भी अगर भेदभाव और अन्याय हो रहा है तो यह सीधे–सीधे सत्ता की नाकामी और दुर्भावना को दर्शाता है

यूजीसी के नियमों पर भाजपा सरकार को कठघरे में खड़ा करते हुए श्री यादव ने कहा कि 2012 में भी रेगुलेशन आए थे, तब उनसे क्या सबक लिया गया? विश्वविद्यालयों में कैसे–कैसे अन्यायपूर्ण व्यवहार हुए, यह किसी से छिपा नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार शिक्षा को भी अपने एजेंडे का शिकार बना रही है और संविधान की आत्मा को कुचलने पर आमादा है।

भाजपा सरकार पर करारा हमला बोलते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि आज नौजवान बेरोजगारी की आग में झुलस रहा है। नौकरी और रोजगार देने के वादे हवा–हवाई साबित हुए हैं। महंगाई आसमान छू रही है और आम जनता की कमर टूट चुकी है। किसान, मजदूर, कर्मचारी कोई भी वर्ग सुरक्षित नहीं है। खेती की लागत लगातार बढ़ रही है, लेकिन किसानों को उनकी फसल का सही दाम नहीं मिल रहा। बिचौलिये फल–फूल रहे हैं और सरकार तमाशबीन बनी हुई है। उन्होंने कहा कि किसानों की आय दोगुनी करने का वादा एक क्रूर मजाक बन चुका है। भाजपा सरकार ने जनता से किया गया एक भी वादा पूरा नहीं किया है। अब जनता सब देख रही है और समय आने पर इस जनविरोधी, किसान–विरोधी और संविधान–विरोधी सरकार को करारा जवाब देगी।

UGC के नए नियमों पर रोक
सुप्रीम कोर्ट के आदेश की हो रही है आलोचना

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। सुप्रीम कोर्ट ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के नए नियमों पर गुरुवार 29 जनवरी को अंतरिम रोक लगा दी। चीफ जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की पीठ ने सुनवाई के दौरान कहा कि ये नियम पहली नज़र में ही अस्पष्ट हैं और इनका दुरुपयोग होने की संभावना है। अदालत ने केंद्र सरकार और यूजीसी को नोटिस जारी करते हुए कहा कि नियमों की भाषा इतनी अस्पष्ट है कि ये समाज को विभाजित करने की क्षमता रखते हैं। सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश का विरोध उसी समय हो गया जब चीफ जस्टिस सूर्यकांत आदेश को पढ़ रहे थे। मशहूर वकील इंदिरा जयसिंह ने चीफ जस्टिस को टोकते हुए कहा– हमारी बात सुने बिना नियमों पर रोक लगाना उचित नहीं है। ऐसा नहीं हो सकता कि आप कानून–व्यवस्था की समस्या पैदा करें और फिर रोक लगाने के लिए अदालत में आए। इंदिरा जयसिंह ने तर्क दिया कि ये नियम उच्च शिक्षा में समानता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक थे और बिना सभी पक्षों को सुनकर रोक लगाना अनुचित है। अदालत ने उनकी बात सुनी, लेकिन अंतरिम रोक का फैसला बरकरार रखा।

इस फैसले के बाद विभिन्न संगठनों और प्रमुख व्यक्तियों की प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। जहां सवर्ण समुदाय के लोग इस रोक को अपनी जीत मान रहे हैं वहीं दलित, एससी–एसटी, ओबीसी और अन्य पिछड़े वर्ग के संगठन इसकी कड़ी आलोचना कर रहे हैं। वंचित बहुजन अघाड़ी पार्टी के अध्यक्ष और बाबा साहब आंबेडकर के प्रपौत्र प्रकाश आंबेडकर ने कहा है कि यदि यूजीसी के उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा देने संबंधी नए विनियम, 2026 के संबंध में चल रही चर्चा का स्तर निंदनीय था, तो इन नियमों पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा लगाई गई रोक उसी चर्चा के प्रति न्यायिक आत्मसमर्पण का एक चिंताजनक उदाहरण है

प्रकाश आंबेडकर ने कहा– यह रोक संवैधानिक सिद्धांतोंऔर वास्तविक समानता, सामाजिक न्याय और शिक्षा तक लोकतांत्रिक पहुंच के वादे के विरुद्ध है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नए विनियम ष्समाज को विभाजित करेंगेष्! लेकिन क्या समाज पहले से ही विभाजित नहीं है? जाति के आधार पर!? और ये विनियम तो जातिगत भेदभाव से बचाव के लिए ही तो बनाए गए थे! मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि कोई बुनियादी समानता के उपायों का विरोध कैसे कर सकता है; विरोध प्रदर्शन स्वयं रोहित वेमुला, पायल ताडवी और उन हजारों लोगों की यादों पर चोट थे, जिन्होंने शिक्षण संस्थानों में जातिगत भेदभाव का सामना किया है और आज भी कर रहे हैं। यह एक दुखद दिन है!

'झंडा यूनियनों' से कई इंडस्ट्रीज तबाह, रुका देश का औद्योगिक विकास-CJI सूर्यकांत

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। काम के लिए न्यूनतम मजदूरी मांगने पहुँचे थे और सीजेआई सूर्यकांत ने उल्टे देश का विकास रोकने का इल्जाम मढ़ दिया। दरअसल, घरेलू कामगारों के लिए न्यूनतम मजदूरी और कल्याणकारी उपायों की मांग के लिए सुप्रीम कोर्ट में

याचिका दायर की गई थी। गुरुवार को सुनवाई के दौरान सीजेआई ने कहा कि ट्रेड यूनियनों की वजह से देश की औद्योगिक वृद्धि काफी हद तक रुक गई है। कई फैक्ट्रियाँ और पारंपरिक उद्योग बंद हो गए हैं और इसके लिए ज़्यादातर ज़िम्मेदार ट्रेड यूनियनें हैं।

सुप्रीम कोर्ट में एक पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन यानी पीआईएल की सुनवाई हो रही थी। यह याचिका पेन थोजिलारगल संगम और अन्य यूनियनों ने दाखिल की थी। वे घरेलू कामगारों के लिए न्यूनतम मजदूरी और कल्याणकारी उपायों की मांग कर रहे थे। याचिका में कहा गया था कि घरेलू कामगारों को न्यूनतम मजदूरी अधिसूचना के तहत शामिल किया जाए।

सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच यूनियनों द्वारा दायर पीआईएल पर सुनवाई कर रही थी। लाइव लॉ की रिपोर्ट के अनुसार सुनवाई की शुरुआत में ही सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि वे इस मामले को ज़्यादा आगे नहीं बढ़ाना चाहते, क्योंकि इससे हर घर में मुकदमेबाज़ी शुरू हो जाएगी। उन्होंने कहा, हर घर मुकदमे में फँस जाएगा।

जब याचिकाकर्ताओं के वकील राजू रामचंद्रन ने कहा कि सामूहिक सौदेबाजी काम करती है और यूनियनें वैध हैं तो सीजेआई ने ट्रेड यूनियनों पर तीखी बात कही। उन्होंने कहा– देश में कितनी इंडस्ट्रियल यूनिट्स ट्रेड यूनियनों की वजह से बंद हुई हैं? हकीकत जान लीजिए। सारे पारंपरिक उद्योग इन झंडा यूनियनों की वजह से बंद हो गए हैं, पूरे देश में। सीजेआई ने आगे कहा, वे काम नहीं करना चाहते। ये ट्रेड यूनियन लीडर देश की औद्योगिक वृद्धि रोकने के लिए ज्यादातर जिम्मेदार हैं। हां, शोषण होता है, लेकिन शोषण रोकने के दूसरे तरीके हैं। लोगों को उनके व्यक्तिगत अधिकारों के बारे में जागरूक करना चाहिए, उन्हें ज्यादा स्किल्ड बनाना चाहिए, कई अन्य सुधार होने चाहिए थे। सीजेआई ने कहा कि ट्रेड यूनियन लीडर मजदूरों को बीच में छोड़ देते हैं। बड़े शहरों में अब एजेंसियां घरेलू कामगारों की सेवाएं दे रही हैं और वे ही असली शोषक हैं। उन्होंने एक मिसाल दी कि सुप्रीम कोर्ट ने एक एजेंसी को प्रति कामगार 40000 रुपये दिए थे, लेकिन कामगार को सिर्फ 19000 रुपये मिले।

सीजेआई ने चेतावनी दी कि अगर न्यूनतम मजदूरी तय कर दी गई तो लोग घरेलू कामगार रखना बंद कर देंगे। इससे बेरोजगारी बढ़ेगी और मज़दूरों को और नुक़सान होगा। उन्होंने कहा, न्यूनतम मज़दूरी तय करने की जल्दबाजी में हम अनजाने में और शोषण बढ़ा देते हैं। मांग और आपूर्ति का सवाल है। न्यूनतम मज़दूरी तय की तो लोग नहीं रखेंगे और और मुश्किलें आएंगी।

सीजेआई और जस्टिस बागची की बेंच ने याचिका खारिज कर दी। कोर्ट ने कहा कि वे केंद्र या राज्यों को क़ानून बनाने का आदेश नहीं दे सकते। यह विधायी मामला है। हालाँकि, कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं से कहा कि वे राज्यों और केंद्र को घरेलू कामगारों की समस्या बताते रहें। उम्मीद है कि राज्य और केंद्र कोई अच्छा तरीका निकालेंगे।

प्रदेश के 15 लाख शिक्षक व शिक्षणेत्तर कर्मियों को मिली निजी अस्पतालों में कैशलेस इलाज की सुविधा

लखनऊ, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। उत्तर प्रदेश सरकार ने शिक्षा जगत से जुड़े लाखों कर्मियों को बड़ी राहत दी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में गुरुवार को हुई कैबिनेट बैठक में यह तय किया गया कि अब प्रदेश के माध्यमिक व बेसिक शिक्षा विभाग से जुड़े शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मी और उनके आश्रित परिवार सरकारी के साथ–साथ निजी अस्पतालों में भी कैशलेस इलाज करा सकेंगे। मुख्यमंत्री ने बीते वर्ष शिक्षक दिवस पर इसकी घोषणा की थी, जिस पर अब कैबिनेट ने मुहर लगा दी है। इससे बेसिक व माध्यमिक शिक्षा से जुड़े लगभग 15 लाख शिक्षक व शिक्षणेत्तर कर्मी लाभान्वित होंगे। इस पर समग्र रूप से लगभग 448 करोड़ रुपये

का व्यय होगा। वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने प्रेसवार्ता में कैबिनेट के निर्णयों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बैठक में कुल 32 प्रस्ताव आए, जिनमें 30 को कैबिनेट की स्वीकृति मिली।

फैसले के तहत माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अनुदानित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों (व्यावसायिक शिक्षा के विषय विशेषज्ञों एवं मानदेय शिक्षकों सहित), संस्कृत शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त अनुदानित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों (मानदेय शिक्षकों सहित), माध्यमिक शिक्षा परिषद व संस्कृत शिक्षा परिषद के मान्यता प्राप्त स्ववित्तपोषित विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों और माध्यमिक शिक्षा विभाग के राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में मानदेय पर कार्यरत व्यावसायिक शिक्षा के विषय विशेषज्ञों को आईपीडी (अंतरूरोगी विभाग) इलाज की कैशलेस सुविधा मिलेगी। इस सुविधा का लाभ उनके आश्रित भी उठा सकेंगे। प्रेसवार्ता में माध्यमिक शिक्षा मंत्री गुलाब देवी ने बताया कि सरकार की इस पहल का लाभ 2.97 लाख से अधिक लोगों को मिल सकेगा, जबकि इस पर 89.25 करोड़ रुपये का व्यय अनुमानित है। इसी तरह, बेसिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों एवं बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों (अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित) में कार्यरत शिक्षकों, शिक्षामित्रों, विशेष शिक्षकों, अनुदेशकों, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में कार्यरत वार्डेन, पूर्ण कालिक/ अंशकालिक शिक्षकों/ शिक्षिकाओं एवं प्रधानमंत्री पोषण योजना के रसोइयों और उनके आश्रितों को भी इसका लाभ मिलेगा।

दो बंदियों के फरार होने के मामले में अयोध्या के जेलर–डिप्टी जेलर समेत 10 निलंबित

अयोध्या, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। अयोध्या जेल से दो बंदियों के फरार होने के मामले में वरिष्ठ जेल अधीक्षक जेलर, डिप्टी जेलर समेत दस कर्मियों को निलंबित कर दिया गया है। अयोध्या रेंज के डीआईजी की प्रारंभिक रिपोर्ट के आधार पर इन सभी पर कार्रवाई की गई।अमेठी के मुसाफिरखाना निवासी गोलू अग्रहरि उर्फ सूरज पर दुष्कर्म के केस में 14 सितंबर 2025 से जेल में बंद था।

वहीं सुल्तानपुर के रौदी निवासी शेर अली डकैती के केस में 28 नवंबर 2024 से जेल में था। दोनों पर हत्या, हत्या के प्रयास, चोरी व छेड़खानी के भी मामले दर्ज हैं। बुधवार रात बैरक की दीवार को तोड़कर दोनों भाग निकले। डीजी जेल पीसी मीणा ने बताया कि मामले की प्रारंभिक जांच अयोध्या रेंज के डीआईजी शैलेंद्र कुमार मैत्रेय को सौंपी गई थी। प्रारंभिक जांच में जेल के वरिष्ठ अधीक्षक तीन अफसर समेत दस कर्मी दोषी पाए गए। उसी जेल के वरिष्ठ अधीक्षक उदय प्रताप मिश्र, जेलर जितेंद्र कुमार यादव, डिप्टी जेलर मयंक त्रिपाठी, हेड जेल वार्डर हरिहर प्रसाद व त्रिपुरारी मिश्र और जेल वार्डर सुरेश कुमार दुबे, जयप्रकाश यादव, सुनील कुमार, रमेश सहानी, रवि यादव व मनोज को निलंबित कर दिया गया है। सभी के खिलाफ विभागीय जांच के भी आदेश दिए गए हैं। विस्तृत विभागीय जांच पूरी होने के बाद इन सभी पर दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

बीएचयू में दो हॉस्टल के छात्र आपस में भिड़े

वाराणसी, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी के छात्रों के दो गुटों में विवाद के बाद पथराव हुआ है। पथराव में एक छात्र घायल हुआ है। पुलिस मौके पर पहुंच गई। वह ड्रोन से हॉस्टल की निगरानी कर रहा है। प्रॉक्टोरियल बोर्ड हॉस्टल में रह रहे अनधिकृत छात्रों की पहचान कर उन्हें बाहर निकालने की कवायद कर रहा है। बताया जा रहा है कि बीएचयू के बिरला और रुइया हॉस्टल के दो छात्रों के बीच किसी बात पर विवाद हो गया। इसके बाद दोनों ही हॉस्टल के छात्र एक–दूसरे पर पथराव करने लगे। इस पथराव में एक छात्र को चोट लगी है। बताया जाता है कि वह पीजी का छात्र है। उसे इलाज के लिए भेजा गया है। बीएचयू में दो छात्रावासों के छात्र आमने–सामने आ गए हैं। 4 डिबार छात्रों ने रुइया छात्रावास के एक छात्र को पीटा।

भारत-पाकिस्तान मैच के लिए श्रीलंका ने बनाया 'स्पेशल सिक्योरिटी प्लान' कमांडो रहेंगे तैनात

कोलंबो में होगा भारत और पाकिस्तान का टी–20 विश्व कप मुकाबला

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। भारत और पाकिस्तान का टी20 विश्व कप 2026 में मुकाबला श्रीलंका में खेला जाएगा। 15 फरवरी को कोलंबो में दोनों टीमों की टक्कर होगी। इस टूर्नामेंट के दौरान विशेष कमांडो यूनिट्स की तैनाती की जाएगी, जो विदेशी राष्ट्राध्यक्षों की सुरक्षा में लगाई जाती हैं। वहीं भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले मैच पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। श्रीलंका में विश्व कप के 20 मुकाबले खेले जाएंगे। अगर पाकिस्तान सेमीफाइनल और फाइनल में पहुंचता है तो वो भी श्रीलंका में ही होंगे। श्रीलंका के खेल मंत्री सुनील कुमार गामगे ने एएफपी को सुरक्षा तैयारियों के बारे में बताया, श्जब वे एयरपोर्ट से बाहर निकलेंगे और जब तक वे अपने एयरक्राफ्ट में वापस नहीं चले जाते, तब तक उन्हें हथियारबंद गार्ड्स सुरक्षा देंगे। श्रीलंका ने टूर्नामेंट को सुचारू रूप से चलाने को सबसे ज्यादा प्राथमिकता दी है और भारत–पाकिस्तान मैचों पर खास ध्यान दिया जा रहा है। पाकिस्तान अपने सभी मैच श्रीलंका में खेलेगा। बांग्लादेश

ने शेड्यूल जारी होने के बाद अपने मैच भारत से श्रीलंका शिफ्ट करवाने की मांग की थी। आईसीसी ने इसे रिजेक्ट करते हुए उसे टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। भारत–बांग्लादेश विवाद के दौरान श्रीलंका ने पूरी तरह चुप्पी साधे रखी। क्रिकेट सेक्रेटरी बंदुला दिसानायके ने एएफपी को बताया कि कोलंबो क्षेत्रीय विवादों में शामिल होने से बचना चाहता है। उन्होंने कहा– भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच इन विवादों में हम न्यूट्रल रह रहे हैं। ये सभी दोस्ताना देश हैं। भारत के साथ श्रीलंका टूर्नामेंट का को–होस्ट है। श्रीलंका के तीन मैदानों पर टूर्नामेंट का आयोजन किया जाएगा। इसमें आर प्रेमदासा स्टेडियम के साथ सिंहली स्पोर्ट्स क्लब और पल्लेकेले इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम पर मुकाबले खेले जाएंगे। टूर्नामेंट का पहला मुकाबला श्रीलंका में ही होगा। पाकिस्तान की टक्कर 7 फरवरी को नीदरलैंड से होगी।

टी-20 मैच की पहली ही गेंद पर आउट होने वाले भारतीय बल्लेबाज में अभिषेक-सैमसन की भी एंट्री

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। टीम इंडिया के स्टार ओपनिंग बल्लेबाज अभिषेक शर्मा न्यूजीलैंड के खिलाफ चौथे टी20 में बिना खाता खोले पहली ही गेंद पर आउट हो गए। ऐसा ही कुछ इस सीरीज में संजू सैमसन के साथ भी हुआ था। क्रिकेट इतिहास में ऐसे ही 5 ही भारतीय बल्लेबाज रहे हैं जो मैच शुरू होते ही पहले ही गेंद पर आउट हुए हैं। उन्हीं खिलाड़ियों की बात हम आगे इस रिपोर्ट में करने वाले हैं। केएल राहुल के साथ ऐसा 2016 में जिम्बाब्वे के खिलाफ हरारे में हुआ था। वह वनडे सीरीज जीतकर आए थे और उन्हें श्टेस्ट–स्पेशलिस्टश का टैग हटाने का मौका मिला था। लेकिन, उनके टी20 इंटरनेशनल डेब्यू पर उन्हें पहली ही गेंद पर आउट होना पड़ा। यह पहला मौका था जब भारत ने टी20 पारी की शुरुआत पहली ही गेंद पर विकेट गंवाकर की थी। इसी तरह, 2021 में श्रीलंका के खिलाफ कोलंबो में पृथ्वी शॉ के साथ भी ऐसा ही हुआ। वनडे में शानदार प्रदर्शन के बाद उन्हें टी20 टीम में ओपनिंग का मौका मिला था। लेकिन, श्रीलंका के खिलाफ टी20 सीरीज के पहले मैच में, टॉस जीतकर पहले गेंदबाज़ी करने वाली श्रीलंकाई टीम के लिए खेलते हुए, पृथ्वी शॉ को पहली ही गेंद पर पवेलियन लौटना पड़ा। यह उनके वनडे फॉर्म के बिल्कुल

विपरीत एक चौंकाने वाली शुरुआत थी। 2022 में वेस्टइंडीज के खिलाफ बेसटेरे में रोहित शर्मा को भी ऐसी ही निराशा झेलनी पड़ी। सीरीज के पहले टी20 में उन्होंने मैच जिताऊ अर्धशतक लगाया था और टीम के कप्तान के तौर पर अच्छी शुरुआत की थी। लेकिन, दूसरे मैच में, वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाज ओबेद मैककॉय ने रोहित शर्मा को पहली ही गेंद पर आउट कर दिया, जो भारतीय कप्तान के लिए एक श्गोल्डन डकश था। 2026 में न्यूजीलैंड के खिलाफ गुवाहाटी में संजू सैमसन के लिए भी यह अनुभव कड़वा रहा। 154 रनों का पीछा करते हुए, मैट हेनरी की गेंद पर संजू सैमसन ने फ्लिक मारने की कोशिश की, लेकिन गेंद अंदर की तरफ आई और उनके स्टंप को उड़ा दिया। यह गोल्डन डक सीरीज में उनका तीसरा लगातार फ्लॉप शो था, क्योंकि वह पहले के मैचों में 10 और 6 रन ही बना पाए थे। इससे उनके अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निरंतरता पर सवाल उठने लगे। इसी साल (2026) विशाखापत्तनम में न्यूजीलैंड के खिलाफ अभिषेक शर्मा को भी पहली गेंद पर ही आउट होना पड़ा। भारत 216 रनों के बड़े लक्ष्य का पीछा कर रहा था और उन्हें अच्छी शुरुआत की जरूरत थी। लेकिन, मैट हेनरी की सटीक गेंदबाजी के सामने अभिषेक शर्मा पहली ही गेंद पर आउट हो गए। डीवॉन कॉनवे ने डीप बैकवर्ड पॉइंट से दौड़कर एक शानदार कैच लपका। एक गेंद में एक विकेट गिरने से भारत तुरंत ही दबाव में आ गया।

सस्ते कर्ज ने शेयर बाजार को बहुत महंगा कर दिया-नागेश्वरन

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वरन ने गुरुवार को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की ओर से संसद में आर्थिक समीक्षा पेश किए जाने के बाद मीडिया से बात की। सीईए ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक उथल–पुथल के बीच एक उम्मीद करार दिया, लेकिन साथ ही बाजारों, एआई और घरेलू नीतियों को लेकर स्पष्ट चिंता भी जाहिर की। नागेश्वरन का सबसे बड़ा बयान शेयर बाजार के मौजूदा वैल्युएशन को लेकर आया, जो निवेशकों के लिए सतर्क रहने का संकेत है। सीईए अनंत नागेश्वरन ने स्टॉक मार्केट में चल रही तेजी पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा, आसान नकदी के दौर का नतीजा यह हुआ है कि स्टॉक मार्केट बहुत महंगा हो गया है। यह बयान ऐसे समय आया है जब खुदरा निवेशक बाजार में भारी निवेश कर रहे हैं। उनका इशारा स्पष्ट है कि लिक्विडिटी (तरलता) के दम पर चल रही रैली में वैल्युएशन जमीनी हकीकत से दूर हो सकते हैं। सीईए ने बताया कि वित्त वर्ष 2026–27 के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर 6.8: से 7.2% के बीच रहने का अनुमान है। संभावित क्षमतारू उन्होंने कहा कि भारत की संभावित जीडीपी वृद्धि दर 7% है। यदि मैन्युफैक्चरिंग और विकास से जुड़े सुधारों को सही ढंग से लागू किया जाता है, तो यह आंकड़ा 7.5: से 8% तक पहुंच सकता है। वैश्वीकरणके बदलते स्वरूप पर नागेश्वरन ने दो टूक कहा कि अब व्यापार पारस्परिक नहीं रहा और बाजार तटस्थ नहीं रहे। उन्होंने रणनीतिक स्वदेशी को समय की मांग बताया। यह सिर्फ आयात कम करने के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और सप्लाई चेन की मजबूती के लिए जरूरी है। सिस्टम में बदलावः भारत को रणनीतिक रूप से अपरिहार्य बनाने के लिए औपनिवेशिक काल की नौकरशाही को बदलने और उद्यमी राज्य की अवधारणा अपनाने की जरूरत है। टेक्नोलॉजी सेक्टर, विशेष रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर सीईए ने एक गंभीर जोखिम की ओर इशारा किया। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि एआई बूम उम्मीद के मुताबिक उत्पादकता बढ़ाने में विफल रहता है, तो संपत्ति के मूल्यांकन में भारी गिरावट आ सकती है। इससे वित्तीय बाजारों में बड़ी उथल–पुथल देखने को मिल सकती है। सीईए ने भारत में बढ़ते मोटापे को जनसांख्यिकीय लाभांश के लिए खतरा बताया। उन्होंने निजी क्षेत्र को सुझाव दिया कि पैकेज्ड फूड पर स्पष्ट लेबलिंग होनी चाहिए ताकि लोग यह जान सकें कि वे क्या खा रहे हैं। सर्वे में यह भी सुझाव दिया गया है कि शिशु दूध और बेवरेजेज की मार्केटिंग पर प्रतिबंध लगाने या सख्त नियम बनाने पर विचार किया जाना चाहिए। नागेश्वरन ने कहा कि बाहरी मोर्चाफिलहाल कोई खतरे की घंटी नहीं बजा रहा है और भारत के पास पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार है। हालांकि, उन्होंने साफ किया कि मुद्रा की मजबूती देश की औद्योगिक क्षमता पर निर्भर करती है, न कि केवल वित्तीय प्रवाह पर। मुख्य आर्थिक सलाहकार साफ तौर पर कहा कि भारत के फंडामेंटल मजबूत हैं, लेकिन सस्ते पैसे के नशे में बाजार की चाल और एआई के अति–उत्साह से बचने की जरूरत है। सरकार का फोकस अब केवल ग्रोथ पर नहीं, बल्कि रणनीतिक सुरक्षा और गुणवत्तापूर्ण जीवन (स्वस्थ नागरिक) पर शिफ्ट हो रहा है।

इंडिगो दुनिया की शीर्ष आठ एयरलाइनों में शामिल

नई दिल्ली, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो ने भारतीय विमानन क्षेत्र में अपनी मजबूत स्थिति को और मजबूत किया है। इंडिगो के सीईओ पीटर एल्बर्स ने कहा कि जहां दुनिया के कई हिस्सों में विमानन उद्योग अभी भी कोविड–पूर्व स्तर तक पहुंचने के लिए संघर्ष कर रहा है, वहीं भारत में विमानन विकास कोविड से पहले के स्तर से कहीं आगे निकल चुका है। पीटर एल्बर्स ने बताया कि इंडिगो इस साल अपने संचालन के 20 वर्ष पूरे कर रही है। उन्होंने कहा कि 31 दिसंबर तक इंडिगो ने वर्ष का समापन 124 मिलियन यात्रियों के साथ किया, जबकि पिछले वर्ष यह आंकड़ा 113 मिलियन था। इस आधार पर इंडिगो आज संचालन के आकार के लिहाज से दुनिया की शीर्ष 7 से 8 एयरलाइनों में शामिल हो चुकी है। इंडिगो वर्तमान में प्रतिदिन लगभग 2200 उड़ानों का संचालन कर रही है और इसके नेटवर्क में कुल 141 गंतव्य शामिल हैं। एयरलाइन के बेड़े में 440 विमान हैं। एल्बर्स ने बताया कि पिछले साल इंडिगो ने पहली बार 10 अरब डॉलर (10 बिलियन डॉलर) से अधिक राजस्व वाली कंपनी बनने का मुकाम हासिल किया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2015 में इंडिगो देश के केवल 21 शहरों के लिए उड़ानें संचालित करती थी, जबकि आज एयरलाइन भारत के 96 शहरों को जोड़ रही है। इसका मतलब यह है कि भारत की लगभग 90 प्रतिशत आबादी इंडिगो द्वारा सेवित किसी न किसी हवाई अड्डे से 100 किलोमीटर के दायरे में रहती है।

सूचना

सत्र 2025–26 भगवान आर्दश महाविद्यालय बी.टी.सी. संस्थान चक्रपाणिपुर (कनैला) आजमगढ़ (अल्पसंख्यक संस्था) सम्बद्ध राज्य शैक्षिक अनुसंधान शिक्षा परिषद लखनऊ व शासन द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान में बी.टी.सी. सीटों पर प्रवेश आनलाइन आवेदन हेतु www.babtccollege.org.in पर आवेदन करें एवं पंजीकृत डाक द्वारा दो फोटोग्राफ, बायोडाटा, फोन नं. तथा समस्त अंकपत्र एवं प्रमाणपत्र की छायाप्रति के साथ आवेदन आमंत्रित है। अल्पसंख्यक छात्रों से रिक्त सीटों पर अन्य अभ्यर्थियों का प्रवेश मेरिट के आधार पर होगा। योग्यता शासनादेश के अनुसार। प्रबंधक– 9415443050, 9450500450

अदालती नोटिस

सम्मन वगरज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाविता दीवानी सन् 1908)
बअदालत उपजिलाधिकारी सदर, आजमगढ़
अपील सं. टी 202515060113336 व 3337 सन् 2025
धारा 35 (2) रेवेन्यू कोड मौजा देवखरी
काली प्रसाद सिंह पुत्र स्व. रूद्रनरायण सिंह साकिन कम्हेनपुर तप्पा अठ्सी परगना निजामाबाद तहसील सदर जनपद आजमगढ़। –अपीलकर्ता
बनाम
हरिओम सिंह पुत्र अम्बिका सिंह साकिन कटहन परगना बेलहाबास तहसील मेंहनगर जनपद आजमगढ़ 2. गांवसभा बजरिये प्रधान ग्राम पंचायत देवखरी तप्पा अठ्सी परगना निजामाबाद तहसील सदर जनपद आजमगढ़ 3. उ.प्र. सरकार बजरिये जिलाधिकारी महोदय आजमगढ़। –उत्तरवादीगण
वाजेह हो कि वादी ने आपके नाम एक नालिस दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारिख 25 माह 02 सन् 2026 ई0 बवक्त 10 बजे हाजिर हुजिए जवाबदेही कीजिए और हरगाह व तारीख जो आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल मुकदमा के तजबीज हुई है। आपको लाजिम है कि उस रोज अपने गवाहों को जिनके शहादत पर नाज जुमला दस्तावेज जिन पर अपनी जवाबदेही करना चाहते हों उस रोज को कीजिए और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर वरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में मसमुआ और फैसला होगा। बसक्त मेरे अदालत और मेरे मुहर अदालत के आज बतारिख 28 माह 01 सन् 2026 ई0 जारी किया गया। –आज्ञा से हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वगरज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाविता दीवानी सन् 1908)
बअदालत उपजिलाधिकारी सगड़ी, आजमगढ़
धारा 116 उ.प्र.रा.सं. 2006 मौजा मैगापुर
आरती बनाम अखिलेश कुमार आदि
बनाम–अखिलेश 2. अनुपम 3. अरूण कुमार 4. अरविन्द कुमार 5. आनन्द कुमार पुत्रगण भानुप्रताप 6. पार्वती पत्नी भानुप्रताप साकिनान बगहीडाड़ 7. अवधेश 8. सुरेश 9. गनेश पुत्रगण रामजीत 10. प्रभावती पत्नी रामजीत साकिन मैगापुर 11. सुशील 12. सुनील पुत्रगण विजय प्रताप साकिन बगहीडाड़ परगना व तहसील सगड़ी जनपद आजमगढ़ 13. गांवसभा बजरिये प्रधान ग्राम पंचायत मैगापुर परगना व तहसील सगड़ी जनपद आजमगढ़। –प्रतिवादीगण
वाजेह हो कि वादी ने आपके नाम एक नालिस दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारिख 07 माह 02 सन् 2026 ई0 बवक्त 10 बजे हाजिर हुजिए जवाबदेही कीजिए और हरगाह व तारीख जो आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल मुकदमा के तजबीज हुई है। आपको लाजिम है कि उस रोज अपने गवाहों को जिनके शहादत पर नाज जुमला दस्तावेज जिन पर अपनी जवाबदेही करना चाहते हों उस रोज को कीजिए और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर वरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में मसमुआ और फैसला होगा। बसक्त मेरे अदालत और मेरे मुहर अदालत के आज बतारिख 17 माह 01 सन् 2026 ई0 जारी किया गया। –आज्ञा से हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वगरज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाविता दीवानी सन् 1908)
बअदालत उपजिलाधिकारी सगड़ी, आजमगढ़
धारा 116 उ.प्र.रा.सं. 2006 मौजा हादीपुर
जोगिन्दर बनाम दीनबन्धु आदि
बनाम–दीनबन्धु पुत्र परमेश्वर साकिन हादीपुर 2. राजू पुत्र अनमोल 3. रेयाज पुत्र इलियास 4. सोहराव पुत्र शमसुद्दीन साकिनान विन्दवल परगना व तहसील सगड़ी जनपद आजमगढ़ 5. गांवसभा बजरिये प्रधान ग्राम पंचायत हादीपुर परगना व तहसील सगड़ी जनपद आजमगढ़। –प्रतिवादीगण
वाजेह हो कि वादी ने आपके नाम एक नालिस दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारिख 03 माह 02 सन् 2026 ई0 बवक्त 10 बजे हाजिर हुजिए जवाबदेही कीजिए और हरगाह व तारीख जो आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल मुकदमा के तजबीज हुई है। आपको लाजिम है कि उस रोज अपने गवाहों को जिनके शहादत पर नाज जुमला दस्तावेज जिन पर अपनी जवाबदेही करना चाहते हों उस रोज को कीजिए और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर वरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में मसमुआ और फैसला होगा। बसक्त मेरे अदालत और मेरे मुहर अदालत के आज बतारिख 19 माह 01 सन् 2026 ई0 जारी किया गया। –आज्ञा से हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वगरज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाविता दीवानी सन् 1908)
बअदालत उपजिलाधिकारी सगड़ी, आजमगढ़
धारा 116 उ.प्र.रा.सं. 2006 मौजा केशवपुर महमूद पट्टी
बृजमोहन बनाम दयाराम आदि
बनाम–दयाराम व विन्धयाचल पुत्रगण विश्वनाथ साकिनान नूरूद्दीनपुर परगना व तहसील सगड़ी जनपद आजमगढ़। –प्रतिवादीगण
वाजेह हो कि वादी ने आपके नाम एक नालिस दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारिख 07 माह 02 सन् 2026 ई0 बवक्त 10 बजे हाजिर हुजिए जवाबदेही कीजिए और हरगाह व तारीख जो आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल मुकदमा के तजबीज हुई है। आपको लाजिम है कि उस रोज अपने गवाहों को जिनके शहादत पर नाज जुमला दस्तावेज जिन पर अपनी जवाबदेही करना चाहते हों उस रोज को कीजिए और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर वरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में मसमुआ और फैसला होगा। बसक्त मेरे अदालत और मेरे मुहर अदालत के आज बतारिख 17 माह 01 सन् 2026 ई0 जारी किया गया। –आज्ञा से हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वगरज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाविता दीवानी सन् 1908)
बअदालत उपजिलाधिकारी
(न्यायिक) लालगंज, आजमगढ़
मु.नं. टी 202515060413964/2025
धारा 116 उ.प्र.रा.सं. 2006 मौजा गिड़उर
इन्दू देवी बनाम अभय आदि
बनाम–अभय 2. जय सिंह 3. विनोद 4. शिवप्रकाश पुत्रगण कवलधारी 5. लालती देवी पत्नी कवलधारी 6. अमरनाथ 7. समरनाथ पुत्रगण पलकधारी 8. फूलवासी पत्नी पलकधारी 9. अमरेज 10. शिवकुमार पुत्रगण बालगोविन्द 11. दुलारी पत्नी बालगोविन्द साकिनान गिड़उर परगना देवगांव तहसील लालगंज जनपद आजमगढ़ 12. गांवसभा बजरिये प्रधान/अध्यक्ष ग्राम पंचायत गिड़उर परगना देवगांव तहसील लालगंज जनपद आजमगढ़ 13. उ.प्र. सरकार बजरिये जिलाधिकारी महोदय आजमगढ़। –प्रतिवादीगण
वाजेह हो कि वादी ने आपके नाम एक नालिस दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारिख 11 माह 02 सन् 2026 ई0 बवक्त 10 बजे हाजिर हुजिए जवाबदेही कीजिए और हरगाह व तारीख जो आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल मुकदमा के तजबीज हुई है। आपको लाजिम है कि उस रोज अपने गवाहों को जिनके शहादत पर नाज जुमला दस्तावेज जिन पर अपनी जवाबदेही करना चाहते हों उस रोज को कीजिए और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर वरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में मसमुआ और फैसला होगा। बसक्त मेरे अदालत और मेरे मुहर अदालत के आज बतारिख 28 माह 01 सन् 2026 ई0 जारी किया गया। –आज्ञा से हाकिम

अदालती नोटिस

न्यायालय न्यायाधिकारी ग्राम न्यायालय सिकन्दरपुर, बलिया
प्रार्थना पत्र संख्या 159/2023
धारा–12 घ० हिं० अधि० से महिला हिंसा अधि० से 2005 थाना सिकन्दरपुर जिला बलिया ता० पेशी 07.02.2026
ताजिबुल निशा उम्र तकरीबन 43 वर्ष पत्नी मुस्लिम शेख साकिन डुमरिया बोझ थाना नगरा जनपद बलिया पुत्री–अली खा नाबालिग पुत्र गण हाल मु० विछीबोझ थाना सिकन्दरपुर बलिया 1. शब्बो उम्र तकरीबन 14 वर्ष 2. सायला उम्र तकरीबन 9 वर्ष 3. साकिम उम्रतकरीबन 8 वर्ष पुत्री गण 4. सैफ उम्र तकरीबन 4 वर्ष पुत्रगण। –सायला
बनाम
मुस्लिम शेख उम्र तकरीबन 45 वर्ष पुत्र शकूर खा डुमरिया बोझ थाना नगरा जनपद बलिया।
चूंकि आपकी उपस्थिति 12 घरेलू हिंसा अपराध के आरोप के उत्तर देने के लिये आवश्यक है, अतएव आपको एतदद्वारा आदेश दिया जाता है कि स्वयं / अधिवक्ता द्वारा उपर्युक्त न्यायालय के समक्ष सन् ई० के मास के दिवस को उपस्थिति हो, ऐसा करने में त्रुटि न हो। –न्यायाधीश

अदालती नोटिस

सम्मन वगरज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाविता दीवानी सन् 1908)
बअदालत उपजिलाधिकारी बूढ़नपुर, आजमगढ़
वाद सं. टी 202515060611154/2025
धारा 116 उ.प्र.रा.सं. 2006 मौजा रतनावे
रामचन्द्र पुत्र स्व. बिरजू निवासी ग्राम रतनावे परगना अतरौलिया तहसील बूढ़नपुर जनपद आजमगढ़। –वादी
बनाम
इन्द्रेश 2. संतोष पुत्रगण स्व. लोचई राम 3. साधना पुत्री स्व. लोचई राम 4. तारा देवी पत्नी स्व. लोचई राम 5. सुबाष चन्द्र पुत्र चौथी 6. संजय कुमार 7. सन्तलाल पुत्रगण हरिचरन साकिनान रतनावे परगना अतरौलिया तहसील बूढ़नपुर जनपद आजमगढ़ 8. गांवसभा बजरिये प्रधान ग्राम पंचायत रतनावे परगना अतरौलिया तहसील बूढ़नपुर जनपद आजमगढ़। –प्रतिवादीगण
वाजेह हो कि वादी ने आपके नाम एक नालिस दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारिख 30 माह 01 सन् 2026 ई0 बवक्त 10 बजे हाजिर हुजिए जवाबदेही कीजिए और हरगाह व तारीख जो आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल मुकदमा के तजबीज हुई है। आपको लाजिम है कि उस रोज अपने गवाहों को जिनके शहादत पर नाज जुमला दस्तावेज जिन पर अपनी जवाबदेही करना चाहते हों उस रोज को कीजिए और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर वरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में मसमुआ और फैसला होगा। बसक्त मेरे अदालत और मेरे मुहर अदालत के आज बतारिख 29 माह 01 सन् 2026 ई0 जारी किया गया। –आज्ञा से हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वगरज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाविता दीवानी सन् 1908)
बअदालत अपर जिलाधिकारी
(वित्त व राजस्व), आजमगढ़
वाद सं. आर.एस.टी. 00163/2019
डी 201915060000163
रामबचन बनाम गांव पंचायत
बनाम–गांवसभा बजरिये प्रधान ग्राम पंचायत चकखैरूल्लाह परगना निजामाबाद तहसील सदर जनपद आजमगढ 2. राकेश 3. राजकेश पुत्रगण मंगल साकिनान भावारायपुर पट्टी परगना व तहसील सगड़ी जनपद आजमगढ़ हाल मुकाम चकखैरूल्लाह परगना निजामाबाद तहसील सदर जनपद आजमगढ़। –प्रतिवादीगण
वाजेह हो कि वादी ने आपके नाम एक नालिस दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारिख 11 माह 02 सन् 2026 ई0 बवक्त 10 बजे हाजिर हुजिए जवाबदेही कीजिए और हरगाह व तारीख जो आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल मुकदमा के तजबीज हुई है। आपको लाजिम है कि उस रोज अपने गवाहों को जिनके शहादत पर नाज जुमला दस्तावेज जिन पर अपनी जवाबदेही करना चाहते हों उस रोज को कीजिए और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर वरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में मसमुआ और फैसला होगा। बसक्त मेरे अदालत और मेरे मुहर अदालत के आज बतारिख 28 माह 01 सन् 2026 ई0 जारी किया गया। –आज्ञा से हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वगरज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाविता दीवानी सन् 1908)
बअदालत उपजिलाधिकारी बूढ़नपुर, आजमगढ़
वाद सं. 405/टी 202615060601195
धारा 116 उ.प्र.रा.सं. 2006 मौजा मुबारकपुर
राजेश आदि बनाम गांवसभा
बनाम– गांवसभा बजरिये प्रधान ग्राम पंचायत बड़ागांव, मुबारकपुर परगना अतरौलिया तहसील बूढ़नपुर जनपद आजमगढ़ 2. राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 233 भारत सरकार परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जिलाधिकारी आजमगढ़ 3. पूनम पत्नी राघवेन्द्र साकिन जानापुर जनपद अयोध्या 4. निरूपमा पत्नी सुनील कुमार साकिन देवगढ़ जनपद अयोध्या 5. सिद्धार्थ 6. सिद्धार्थ द्वितीय पुत्रगण सत्येन्द्र 7. सुभद्रा पत्नी सतेन्द्र 8. इन्द्रभूषण 9. संजील पुत्रगण गोरखनाथ 10. सौदागर 11. श्यामलाल पुत्रगण राजबली 12. शशिभूषण 13. अखिलेश पुत्रगण दूधनाथ साकिनान भीलमपुर छपरा परगना अतरौलिया तहसील बूढ़नपुर जनपद आजमगढ़। –प्रतिवादीगण
वाजेह हो कि वादी ने आपके नाम एक नालिस दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारिख 04 माह 02 सन् 2026 ई0 बवक्त 10 बजे हाजिर हुजिए जवाबदेही कीजिए और हरगाह व तारीख जो आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल मुकदमा के तजबीज हुई है। आपको लाजिम है कि उस रोज अपने गवाहों को जिनके शहादत पर नाज जुमला दस्तावेज जिन पर अपनी जवाबदेही करना चाहते हों उस रोज को कीजिए और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर वरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में मसमुआ और फैसला होगा। बसक्त मेरे अदालत और मेरे मुहर अदालत के आज बतारिख 00 माह 00 सन् 2026 ई0 जारी किया गया। –आज्ञा से हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वगरज इनफिसाल मुकदमा (आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाविता दीवानी सन् 1908)
बअदालत उपजिलाधिकारी सगड़ी, आजमगढ़
धारा 116 उ.प्र.रा.सं. 2006 मौजा अल्लीपुर
शायब 2. अब्दुल राशिद 3. आरिफ खान 4. शारिक खान 5. तारिक खान पुत्रगण अब्दुल बहाव साकिनान अल्लीपुर परगना व तहसील सगड़ी जनपद आजमगढ़। –वादीगण
बनाम
मुहम्मद शाह आलम पुत्र मुहम्मद यासीन मोहम्मद परवेज 3. जावेद 4. मोहम्मद फिरोज पुत्रगण फकरे आलम 5. खुस्तरी बानो पुत्री हाजी मुस्ताक साकिनान अल्लीपुर परगना व तहसील सगड़ी जनपद आजमगढ़ 6. गांवसभा बजरिये प्रधान/अध्यक्ष भूमि प्रबन्धक समिति ग्राम पंचायत अल्लीपुर परगना व तहसील सगड़ी जनपद आजमगढ़। –प्रतिवादीगण
वाजेह हो कि वादी ने आपके नाम एक नालिस दायर की है लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारिख 04 माह 02 सन् 2026 ई0 बवक्त 10 बजे हाजिर हुजिए जवाबदेही कीजिए और हरगाह व तारीख जो आपकी हाजिरी के लिए मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल मुकदमा के तजबीज हुई है। आपको लाजिम है कि उस रोज अपने गवाहों को जिनके शहादत पर नाज जुमला दस्तावेज जिन पर अपनी जवाबदेही करना चाहते हों उस रोज को कीजिए और आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर वरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में मसमुआ और फैसला होगा। बसक्त मेरे अदालत और मेरे मुहर अदालत के आज बतारिख 00 माह 00 सन् 2026 ई0 जारी किया गया। –आज्ञा से हाकिम

संस्थापक :
स्मृतिशेष श्री ठाकुर प्रसाद यादव
सम्पादक :
श्री विजय कुमार यादव
स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक श्री विजय कुमार यादव के लिए स्वाभिमान प्रकाशन, शहीद द्वार (सिविल लाईन) आजमगढ़ से मुद्रित कराकर 'देवव्रत' हिन्दी दैनिक कार्यालय, 31 शहीद द्वार आजमगढ़–276001 से प्रकाशित।
पो.रजि.नं. : आ./एन.पी.–92
टेली फैक्स : 05462–297576
मोबाइल : 9415370246
RNI NO. 56765/92

देश की 97 प्रतिशत ग्राम पंचायतों में भारतनेट कनेक्टिविटी उपलब्ध-ज्योतिरादित्य सिंधिया

नई दिल्ली, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बृहस्पतिवार को कहा कि देशभर की 97 प्रतिशत ग्राम पंचायतों में भारतनेट कनेक्टिविटी उपलब्ध करा दी गई है। राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान पूरक प्रश्नों का उत्तर देते हुए सिंधिया ने कहा कि भारतनेट दुनिया की सबसे बड़ी ग्रामीण दूरसंचार परियोजनाओं में से एक है और इसे चरणबद्ध तरीके से देश की सभी ग्राम पंचायतों तक ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से लागू किया जा रहा है।

उन्होंने कहा, ह्लभारतनेट-एक और दो परियोजनाओं के तहत चिन्हित लगभग 2,22,000 ग्राम पंचायतों में से 2,15,000 ग्राम पंचायतों को पहले ही कनेक्टिविटी प्रदान की जा चुकी है। इसका अर्थ है कि 97 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 100 प्रतिशत कवरेज हासिल न हो पाने के पीछे कुछ क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति, उनसे जुड़ी कठिनाइयां और वामपंथी उग्रवाद जैसी चुनौतियां प्रमुख कारण हैं। उन्होंने बताया कि शेष लगभग तीन प्रतिशत लक्ष्य, यानी करीब 7,000 ग्राम पंचायतों में अब तक कनेक्टिविटी नहीं पहुंच पाई है, क्योंकि ये क्षेत्र अत्यंत पहाड़ी, दुर्गम हैं और कुछ स्थानों पर वामपंथी उग्रवाद की समस्या भी है।

सिंधिया ने कहा कि परियोजना के शुरूआती चरण में ह्याराइट ऑफ वेह्लप्राप्त करने में काफी कठिनाई हो रही थी, जिसके बाद सरकार ने इस संबंध में राजपत्रित अधिसूचना जारी की। उन्होंने बताया कि ह्याराइट ऑफ वेह्ल का तात्पर्य सार्वजनिक और निजी संपत्तियों पर दूरसंचार सेवा प्रदाताओं द्वारा बुनियादी ढांचे की स्थापना करने और उनके संचालन से जुड़े नियमों और अधिकारों से है। सिंधिया ने कहा कि अब संबंधित राज्य सरकारों को यह बताया जा रहा है कि ह्याराइट ऑफ वेह्ल प्राप्त करने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। भारतनेट परियोजना को 25 अक्टूबर 2011 को केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी मिली थी।इस परियोजना का क्रियान्वयन एक विशेष प्रयोजन इकाई ह्यभारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेडह्ल (बीबीएनएल) द्वारा किया जा रहा है, जिसकी स्थापना 25 फरवरी 2012 को भारतीय कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत की गई थी। उन्होंने बताया कि 30 अप्रैल 2016 को दूरसंचार आयोग ने इस परियोजना को तीन चरणों में लागू करने की स्वीकृति दी थी।

दोषसिद्धि दर अदालतों के कामकाज का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब नहीं-अर्जुन राम मेघवाल

नई दिल्ली, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। सरकार ने बृहस्पतिवार को कहा कि दोषसिद्धि दर अदालतों के कामकाज का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब नहीं होती और इसे आपराधिक न्याय प्रणाली के सभी घटकों को ध्यान में रखते हुए समग्र रूप से देखा जाना चाहिए। राज्यसभा को एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने बताया कि दोषसिद्धि दर में पुलिस, फॉरेंसिक प्रयोगशालाओं और वकीलों आदि की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। त्वरित अदालतों (फास्ट ट्रैक अदालतों.... एफटीसी) में कथित रूप से घटती दोषसिद्धि दर से जुड़े एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि अदालतें कानून के अनुसार न्याय देने के लिए बाध्य होती हैं और इसमें आरोपी को बरी किया जाना भी शामिल हो सकता है। न्यायाधीशों, अभियोजकों और अदालतों के कर्मचारियों की भर्ती का उल्लेख करते हुए मेघवाल ने कहा कि त्वरित अदालतों सहित जिला और अधीनस्थ अदालतों में न्यायिक अधिकारियों के रिक्त पदों को भरना संबंधित राज्य या केंद्र शासित प्रदेश की सरकारों और संबंधित उच्च न्यायालयों की जिम्मेदारी है।उन्होंने कहा कि संवैधानिक ढांचे के तहत संविधान के अनुच्छेद 309 के प्रावधानके साथ अनुच्छेद 233 और 234 के तहत प्रदत्त शक्तियों के अनुसार, संबंधित राज्य या केंद्र शासित प्रदेश की सरकारें अपने-अपने उच्च न्यायालयों से परामर्श कर न्यायिक अधिकारियों की भर्ती और नियुक्ति से संबंधित नियम बनाती हैं।

महिला रोजगार योजना के लाभुकों को दो लाख रुपए तक अतिरिक्त सहायता देने की प्रक्रिया शुरू -नीतीश

पटना, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बृहस्पतिवार को कहा कि मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत चयनित लाभुकों को दो लाख रुपए तक की अतिरिक्त वित्तीय सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। मुख्यमंत्री ने बताया कि यह राशि चरणबद्ध तरीके से दी जाएगी, बशर्ते पूर्व में दी गई सहायता राशि का सदुपयोग कर लाभुकों ने रोजगार शुरू किया हो। उन्होंने कहा कि यदि रोजगार सुचारू रूप से चल रहा हो तो आवश्यकता के अनुसार एकमुश्त राशि भी प्रदान की जा सकती है।

नीतीश कुमार ने ह्यएक्सह्ल पर एक पोस्ट में लिखा, ह्यह्यमहिलाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना की शुरूआत की गई है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य की महिलाओं को स्वरोजगार के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना है, ताकि प्रत्येक परिवार की एक महिला, उद्यमी के रूप में स्थापित हो सके।ह्लह्लउन्होंने बताया कि इस योजना के प्रथम चरण में प्रत्येक परिवार की एक महिला को 10 हजार रुपए की राशि दी गई है। अब तक एक करोड़ 56 लाख लाभुकों के खातों में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के माध्यम से राशि अंतरित की जा चुकी है।मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में शेष आवेदकों को भी नियमानुसार डीबीटी के माध्यम से शीघ्र ही उनके खातों में राशि भेजी जाएगी। उन्होंने बताया कि योजना के तहत महिलाओं द्वारा रोजगार शुरू करने के छह माह बाद आकलन किया जाएगा और आवश्यकता के अनुसार दो लाख रुपए तक की अतिरिक्त सहायता राशि दिए जाने का प्रावधान है।

टेक्सटाइल सेक्टर को मिलेगी नई जान, स्टालिन ने की 20% सब्सिडी की घोषणा

तमिलनाडु, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने गुरुवार को कपड़ा क्षेत्र को और मजबूत करने के तमिलनाडु सरकार के प्रयासों के तहत उन्नत कपड़ा और परिधान मशीनरी की खरीद पर 20 प्रतिशत की पूंजी सब्सिडी की घोषणा की। कोयंबटूर के कोडिसिया व्यापार मेला परिसर में चल रहे अंतर्राष्ट्रीय वस्त्र सम्मेलन को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि तमिलनाडु, देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, सामाजिक न्याय के साथ समावेशी विकास सुनिश्चित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।स्टालिन ने कहा कि द्रविड़ शासन मॉडल के तहत, कपड़ा क्षेत्र ने ऑटोमोबाइल, जैसे क्षेत्रों के बराबर तीव्र वृद्धि दर्ज की है। मुख्यमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि तमिलनाडु पिछले पांच वर्षों से भारत का सबसे बड़ा रेडीमेड वस्त्र निर्यातक रहा है, जो देश के कुल वस्त्र व्यापार का 33 प्रतिशत हिस्सा है जिनमें से 60 प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं, जो महिला सशक्तिकरण में इस क्षेत्र की भूमिका को रेखांकित करता है।राज्य सरकार द्वारा इस क्षेत्र के महत्व को देखते हुए एक अलग वस्त्र विभाग के गठन का उल्लेख करते हुए, स्टालिन ने तमिलनाडु के वस्त्र उद्योग को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने की दिशा में किए गए प्रयासों के लिए हथकरघा और वस्त्र मंत्री आर गांधी और अधिकारियों को बधाई दी।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में समकालीन संस्कृत गद्य साहित्य की नवीन प्रवृत्तियों पर हुआ व्याख्यान का आयोजन

प्रयागराज , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्यभाषा विभाग में आज ऋषि व्याख्यानमाला के अंतर्गत एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के गंगानाथ झा परिसर, प्रयागराज में वेदवेदाङ्गविज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. बनमाली बिस्वाल ने समकालिक संस्कृत गद्यसाहित्य की नवीन प्रवृत्तियां विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया।

प्रो. बिस्वाल ने कहा कि वर्तमान समय में आधुनिक संस्कृत साहित्य में अनेक नवीन काव्य प्रवृत्तियां एवं प्रविधियां विकसित हुई हैं। आधुनिक रचनाओं में नई शैली, तथ्य और शिल्प स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। उन्होंने बताया कि पद्य साहित्य में दूतकाव्य, विनोद काव्य, एकबिम्बात्मक काव्य, लोकगीत, प्रगतिशील काव्य, हाईकू, तांका, आत्मकथा, पत्र, पैरोडी, प्रतीकात्मक काव्य, गजल, नवगीत एवं शास्त्र काव्य जैसी अनेक विधाएं प्रचलन में हैं। वहीं गद्य साहित्य में उपन्यास, ललितकाव्य, पत्रकाव्य, दैनन्दिनी, निबंध, एकांकी, छाया नाटक, अनुवाद, पत्रकारिता, समीक्षा तथा चित्रकथा जैसी

विधाएं आधुनिक संस्कृत साहित्य को समृद्ध कर रही हैं।उन्होंने समकालीन काव्यों की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आधुनिक काव्य में प्रतिमान भिन्न होना चाहिए। आधुनिक काव्यशास्त्र में नवीन और पुरातन दोनों परम्पराओं का समन्वय दिखाई देता है। अपने ग्रंथ काव्यतत्त्वसमन्विति के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया कि पद्य की अपेक्षा गद्य की लोकप्रियता अधिक रही है, इसी कारण कहा गया है– गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति। प्रो. बिस्वाल ने आधुनिक संस्कृत साहित्य में सरलता, सहजता और सामाजिक विषयों के समावेश को समय की आवश्यकता बताया तथा लघुकथा, टुप्कथा, ललितकथा, चित्रकथा, स्पर्शकथा, त्रासदकथा और कान्तारकथा जैसी नवीन विधाओं का परिचय दिया।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. प्रयाग नारायण मिश्र ने कहा कि आधुनिक संस्कृत साहित्य में निरंतर सृजन हो रहा है। प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी और प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र जैसे विद्वान शताब्दी ग्रंथों की रचना कर रहे हैं, जिससे आधुनिक संस्कृत साहित्य अत्यंत समृद्ध हो रहा है और शोध कार्यों में भी निरंतर वृद्धि हो रही है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में वैदिक मंगलाचरण रामकुमार पाण्डेय, लौकिक मंगलाचरण शिवरात्री चौरसिया, स्वागत गीत प्रांजलि पांडेय तथा वाचिक स्वागत श्रद्धा मिश्रा द्वारा प्रस्तुत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन सूर्यप्रकाश तिवारी एवं शांति पाठ रामकुमार पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन शोध छात्र दीनबंधु यादव ने किया।इस अवसर पर संस्कृत विभाग की डॉ. निरूपमा त्रिपाठी, डॉ. मीनाक्षी जोशी, डॉ. लेखराम दन्नाना, डॉ. तेज प्रकाश, डॉ. संत प्रकाश तिवारी, डॉ. प्रचेतस्, डॉ. आशीष कुमार त्रिपाठी, डॉ. भूपेंद्र बालखडे, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. सतरुद्र प्रकाश, डॉ. रेनू कोछड़ शर्मा, डॉ. कल्पना कुमारी, डॉ. ललित कुमार, रश्मि यादव, डॉ. रजनी गोस्वामी, डॉ. प्रतिभा आर्या सहित बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

लापता युवक का शव नाले से बरामद

मोदीनगर , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। पिछले चार दिनों से लापता 24 वर्षीय एक युवक का शव बृहस्पतिवार को यहां मोदीनगर में एक नाले से बरामद किया गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि मृतक की पहचान रोरी गांव के रहने वाले रिंकू के रूप में हुई है। रिंकू कुछ दिन पहले घर से निकला था लेकिन वापस नहीं लौटा, जिसके बाद उसके पिता इंद्रजीत ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस के मुताबिक, परिवार वालों और स्थानीय लोगों की काफी तलाश के बाद रिंकू का शव एक नाले में मिला। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। सहायक पुलिस आयुक्त (मोदीनगर) अमित सक्सेना ने बताया कि मेडिकल जांच के बाद मौत के सही कारणों का पता चलेगा।उन्होंने कहा कि शुरूआती जांच से पता चलता है कि रिंकू नशे का आदी था। पुलिस ने बताया कि परिवार वालों ने आरोप लगाया है कि रिंकू की हत्या कर शव नाले में फेंका गया है। पुलिस ने कहा कि मामले की गहन जांच की जा रही है।

सीमा पार तस्करी की कोशिश नाकाम हथियार और दो किलो हेरोइन जब्त

नई दिल्ली, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। पंजाब पुलिस ने बृहस्पतिवार को कहा कि सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के समन्वय से उसने फाजिल्का जिले में सीमा पार तस्करी की एक बड़ी साजिश को नाकाम कर हथियारों, गोला-बारूद और मादक पदार्थों का जखीरा बरामद किया है। बीएसएफ के जवानों ने भारतीय क्षेत्र में नशीले पदार्थों और हथियारों की तस्करी करने की कोशिश कर रहे पाकिस्तानी तस्करों पर कथित तौर पर गोलियां भी चलाईं। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने एक्स पर कहा कि फरीदकोट पुलिस की काउंटर-इंटेलिजेंस इकाई ने बीएसएफ के साथ समन्वय में फाजिल्का के तेजा राहेला गांव के पास सीमा पार तस्करी की एक बड़ी कोशिश को नाकाम कर दिया और हथियारों व गोला-बारूद के साथ हेरोइन की एक बड़ी खेप बरामद की। पुलिस प्रमुख ने बताया कि पुलिस ने एक गफ्फार पिस्तौल, 20 अन्य पिस्तौल, 39 मैगजीन, 310 गोलियां, दो बैग और 2.160 किलोग्राम हेरोइन बरामद की है। डीजीपी ने कहा, प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि जीरो लाइन के पास सक्रिय पाकिस्तानी तस्करों ने घने कोहरे और रात में अंधेरे का फायदा उठाकर भारतीय क्षेत्र में हथियार और नशीले पदार्थ पहुंचाए। उन्होंने कहा,ह्यबीएसएफ के जवान हाई अलर्ट पर थे, उन्होंने घुसपैठ को रोकने के लिए कई राउंड गोलिया चलाईं, जिसके बाद एक संयुक्त तलाशी अभियान में हथियारों और मादक पदार्थों की बरामदगी की गई।

मेधा पाटकर की ओर से दायर मानहानि मामले में उपराज्यपाल सक्सेना बरी

नई दिल्ली, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। राष्ट्रीय राजधानी की एक अदालत ने कार्यकर्ता मेधा पाटकर द्वारा दायर 25 साल पुराने मानहानि मामले में दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना को बृहस्पतिवार को बरी कर दिया और कहा कि शिकायतकर्ता अपने आरोपों को साबित करने में नाकाम रहीं। यह आदेश प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट राघव शर्मा ने दिया। मार्च 2025 में, अदालत ने मामले में अतिरिक्त गवाहों की गवाही के लिए पाटकर के आवेदन को यह कहते हुए खारिज कर दिया था कि यह वास्तविक आवश्यकता के बजाय मुकदमे में देरी करने का जानबूझकर किया गया प्रयास है। पाटकर और सक्सेना के बीच वर्ष 2000 से ही कानूनी विवाद चल रहा था। पाटकर ने उनके और नर्मदा बचाओ आंदोलन के खिलाफ विज्ञापन प्रकाशित कराने के लिए सक्सेना के विरुद्ध मुकदमा दायर किया था। उस समय अहमदाबाद स्थित काउंसिल फॉर सिविल लिबर्टीज नामक एक गैर सरकारी संगठन के प्रमुख रहे सक्सेना ने भी 2001 में पाटकर के खिलाफ दो मुकदमे दायर किए थे और आरोप लगाया था कि पाटकर ने उनके खिलाफ एक टीवी चैनल पर अपमानजनक टिप्पणी की है और प्रेस में मानहानिकारक बयान जारी किए।

सहायक लेखाधिकारी समेत तीन कर्मचारी रिश्वत लेते गिरफ्तार

नई दिल्ली, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। राजस्थान में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की टीम ने बृहस्पतिवार को अनूपगढ़ नगरपालिका के सहायक लेखाधिकारी, स्टोरकीपर और कम्प्यूटर ऑपरेटर को 48,000 रुपए की कथित रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया।

पाकिस्तान की सेना में बड़ा बदलाव किया जा रहा है-मुनीर

करांची, 29 जनवरी (एजेंसी/ देवव्रत संवाद)। पाकिस्तानी रक्षा बलों के प्रमुख (सीडीएफ) फील्ड मार्शल आसिम मुनीर ने बृहस्पतिवार को कहा कि पाकिस्तान की सेना कई क्षेत्रों में बड़े बदलाव से गुजर रही है। मुनीर ने दोहराया कि वे देश की क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए हर तरह के खतरों से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

सेना द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, मुनीर ने बहावलपुर छावनी के दौरे के दौरान ये टिप्पणियां कीं। इस दौरान उन्हें कोर के विभिन्न परिचालन, प्रशिक्षण और प्रशासनिक पहलुओं के बारे में जानकारी दी गई, जिसमें बहु-आयामी युद्ध की तैयारियों पर विशेष ध्यान दिया गया। सैनिकों को संबोधित करते हुए मुनीर ने उनके उच्च मनोबल, पेशेवर दक्षता और परिचालन तत्परता की सराहना की। पाकिस्तानी सेना के भी प्रमुख मुनीर ने इस बात की पुष्टि की कि सशस्त्र बल पाकिस्तान की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए हर तरह के खतरों के खिलाफ पूरी तरह से तैयार हैं।

उन्होंने भविष्य के युद्धक्षेत्र और सुरक्षा चुनौतियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिकतम तत्परता बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया।सेना ने कहा, ह्यह्यसीडीएफ और सेना प्रमुख ने इस बात पर प्रकाश डाला कि पाकिस्तानी सशस्त्र बल कई क्षेत्रों में बड़े बदलाव से गुजर रहे हैं।

अजित पवार की पत्नी महाराष्ट्र की डिप्टी सीएम बन सकती हैं

मुंबई, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। अजित पवार के निधन के बाद उनकी पत्नी सुनेत्रा पवार को महाराष्ट्र का डिप्टी उट बनाया जा सकता है। सूत्रों के मुताबिक प्रफुल्ल पटेल, छगन भुजबल, धनंजय मुंडे और सुनील तटकरे ने सुनेत्रा से मुलाकात की है। सुनेत्रा फिलहाल राज्यसभा सांसद हैं, वे अब अजित पवार की बारामती सीट से चुनाव लड़ सकती हैं।इस प्रस्ताव पर एनसीपी के नेता सीएम देवेंद्र फडणवीस से भी मुलाकात करेंगे। उधर एनसीपी पार्टी का शरद गुट से भी विलय हो सकता है।दरअसल अजित पवार का बुधवार को बारामती एयरपोर्ट पर प्लेन क्रैश में निधन हो गया था। वे 66 साल के थे।हादसे में पवार के सुरक्षाकर्मी, दो पायलट और एक महिला क्रू समेत 5 लोगों की मौत हुई। पवार के निधन पर महाराष्ट्र में 3 दिन का राजकीय शोक रखा गया है।

केंद्रीय एविएशन मिनिस्टर राम मोहन नायडू ने बताया कि पायलट ने बारामती एयरपोर्ट पर लैंडिंग की कोशिश की थी, लेकिन रनवे साफ दिखाई नहीं दिया तो वह प्लेन को वापस ऊंचाई पर ले गया। दोबारा लैंडिंग की कोशिश की गई। इस दौरान विमान रनवे से पहले ही गिर गया और उसमें आग लग गई।विमानन कंपनी श्रफवेंचर्स ने कहा है कि पायलट को 16 हजार घंटे का फ्लाइंग एक्सपीरियंस था।

कार्यालय अधिशासी अभियंता कार्यालय, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड-आजमगढ़। विकास भवन, आजमगढ़, पिनकोड-276001

ई-प्रोक्योरमेन्ट निविदा सूचना

पत्रांक- 1787/ ग्रा०अ०वि० / ई-टेण्डर/वरि०सहा0/2025-26 / दिनांक 19.01.2026

1:- महामहिम राज्यपाल महोदय उत्तर प्रदेश की ओर से, अधिशासी अभियंता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड आजमगढ़,निम्न कार्यों हेतु उत्तर प्रदेश ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग में अर्ह एवं पंजीकृत ए, बी, सी और डी श्रेणी के पात्र ठेकेदारों/फर्मों से प्रतिशत दरों पर अधोलिखित कार्य हेतु ई-निविदा आमंत्रित करते है।

2:- योजना का नाम विधायक निधि

3:- कार्य का नाम सारणी के अनुसार-

क्र० स०	जनपद का नाम	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में)	धरोहर धनराशि (लाख में)	निविदा मूल्य (रुपये में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6	7
1	आजमगढ़	ग्रामसभा कुशहा गोसाई वि०ख० कोयलसा में कप्तानगंज अहरौला पिच रोड शिनोद यादव के घर से देवनाथ गौड़ के घर होते हुए अखिलेश गौड़ के घर की तरफ सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	19.42	0.39	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
2		ग्रामसभा बनारखुर्द वि०ख० अहरौला में नहर पिच रोड से श्री जगेरू राम एवं श्यामप्रीत राम के घर की तरफ सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	17.62	0.35	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
3		ग्रामसभा तमरुआ वि०ख० कोयलसा में पिच रोड छोटेलाल मौर्य के घर से श्री पदमाकर निषाद के घर तक सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	12.78	0.26	225+500+131 =856.00+250.0 Total 1106.00	तीन माह
4		ग्रामसभा भिऊरा महरूपुर वि०ख० अतरौलिया में श्री अनिल गौड़ के घर की तरफ से सुनीता गौड़ के घर होते हुए श्री गयादीन यादव के घर की तरफ सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	16.10	0.32	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
5		ग्रामसभा पकडी वि०ख० अहरौला में श्री लालचन्द्र यादव के घर से वंशराज मौर्य के घर होते हुए श्री रामअक्षेवर मौर्य के घर के आगे तक सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	16.61	0.33	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
6		ग्रामसभा पोखरपुर मु० सिहोरा वि०ख० कोयलसा में श्री घनश्याम निषाद के घर की तरफ से उदय भान राजभर के घर होते हुए श्रीनाथ प्रजापति के घर तक सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	15.01	0.30	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
7		ग्रामसभा कुशमहरा वि०ख० अहरौला में हेतुगंज कोईनहा नहर मार्ग अंगद पाण्डेय के खेत से खरगूराम के घर से विरेन्द्र सिंह के घर तक खडण्जा निर्माण कार्य	10.65	0.21	225+500+131 =856.00+250.0 Total 1106.00	तीन माह
8		ग्रामसभा गादेपुर वि०ख० कोयलसा में सी०सी०रोड श्री मेवालाल वर्मा के घर से पिच रोड श्री नन्दू हरिजन के घर तक सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	11.37	0.23	225+500+131 =856.00+250.0 Total 1106.00	तीन माह
9		ग्रामसभा चतुरपुर मघईपट्टी (ढोढनपुर) वि०ख० अतरौलिया में पिच रोड से सत्यनरायन तिवारी के घर होते हुए आँगनबाड़ी केन्द्र एवं प्राथमिक विद्यालय के प्रागंण खडण्जा से पिच रोड त्रिलोकी नाथ तिवारी के घर तक खडण्जा निर्माण कार्य	11.27	0.23	225+500+131= 856.00+250.00 Total1106.00	तीन माह
10		ग्रामसभा रतनावे वि०ख० कोयलसा में श्री उजागीर हरिजन के घर से श्री चन्द्रबली राजभर के घर तक सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	11.27	0.23	225+500+131= 856.00+250.00 Total1106.00	तीन माह
11		ग्रामसभा गजेन्धरपट्टी अजगरा वि०ख० अहरौला में सी०सी०रोड श्री सुबाष गौड़ के घर से पिच रोड श्री अशोक गुप्ता के घर के आगे तक सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	17.05	0.34	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
12		ग्रामसभा गौरी वि०ख० अहरौला में श्री दयाराम कन्नौजिया के घर से श्री देव प्रकाश कन्नौजिया के घर तक नाली एवं सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	11.70	0.23	225+500+131= 856.00+250.00 Total1106.00	तीन माह
13		ग्रामसभा अहरौला वि०ख० अहरौला में श्री रामलीला मैदान से रामलखन यादव के घर तक सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	16.22	0.32	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
14		ग्रामसभा कोठरा वि०ख० अहरौला में श्री राधेश्याम यादव के खेत से श्री बासुदेव यादव के खेत तक खडण्जा निर्माण कार्य	13.83	0.28	225+500+131= 856.00+250.00 Total1106.00	तीन माह
15		ग्रामसभा घरौली बसेवा वि०ख० अहरौला में श्री अन्हरिया बाबा के स्थान से पिच रोड की तरफ खडण्जा निर्माण कार्य	11.59	0.23	225+500+131= 856.00+250.00 Total1106.00	तीन माह
16		ग्रामसभा एकड़गी बिहारपुर वि०ख० कोयलसा में हरिराम राजभर के घरकी तरफ से श्री अखिलेश चन्द्र मिश्रा के घर होते हुए सी०सी०रोड डीह स्थान तक खडण्जा निर्माण कार्य	12.24	0.24	225+500+131= 856.00+250.00 Total1106.00	तीन माह
17		ग्रामसभा कन्तालपुर वि०ख० अतरौलिया में छितौनी एदिलपुर पिच मार्ग से मौर्या बस्ती तक सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	16.28	0.33	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
18		ग्रामसभा धनघटा वि०ख० कोयलसा में सी०सी०रोड डीह स्थान से श्री रामधारी यादव के घर तक सी०सी०रोड निर्माण कार्य	14.79	0.30	225+500+131= 856.00+250.00 Total1106.00	तीन माह
19		ग्रामसभा डीगुरपुर निजाम वि०ख० कोयलसा में डीह स्थान से श्री राजेन्द्र राम के घर तक पिच रोड का निर्माण कार्य	20.93	0.42	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
		विधान परिषद सदस्य				
20		ग्रामसभा रिठीया वि०ख० अतरौलिया में श्री रामकरन प्रजापति के घर से जमालुद्दीन के घर होते हुए विमल कुमार के घर की तरफ सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	16.71	0.33	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
21		ग्रामसभा पियरिया वि०ख० कोयलसा मे श्री वृजभूषण राजभर के घर से सुरेन्द्र राजभर के घर होते हुए वृजभान राम के घर की तरफ सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	16.37	0.33	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
22		ग्रामसभा करमहा डिगुरपुर वि०ख० कोयलसा में सी०सी० रोड श्री राजकुमार विश्वकर्मा के घर से पिच रोड विमलेश विश्वकर्मा के घर की तरफ सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	15.15	0.30	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
23		ग्रामसभा सधनपट्टी वि०ख० कोयलसा में श्री राम मिलन निषाद के घर से मोहित निषाद के घर होते हुए पिच रोड की तरफ सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	14.19	0.28	225+500+131= 856.00+250.00 Total1106.00	तीन माह
24		ग्रामसभा कुशमहरा वि०ख० अहरौला में पिच रोड कुड़ा स्थान से श्री इन्द्र बहादुर सिंह के खेत होते हुए श्री अन्हरिया जी बाबा स्थान की तरफ खडण्जा निर्माण	15.41	0.31	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह
25		ग्रामसभा भीलमपुर वि०ख० महराजगंज में श्री चन्द्रबली यादव के घर से जितेन्द्र यादव के घर होते हुए पिच रोड श्री प्रहलाद सिंह के ट्यूबेल तक सी०सी०रोड का निर्माण कार्य	24.23	0.48	300+500+144 =944.00+250.0 Total 1194.00	तीन माह

4:- बेवसाइड पर निविदा की उपलब्धता तिथि 12.02.2026 से 20.02.2026

5:- ई-निविदा प्राप्त करने की अंतिम तिथिः 20.02.2026, समयः 12.00 बजे

6:- ई-निविदा खोलने की तिथिः 20.02.2026, समयः-01.00 बजे

7:- निविदाकर्ता को आई०टी०बी० के क्लाज-9 के अनुसार परिवर्तन/कोरिजेण्डम का अधिकार है, जो किसी भी समाचार पत्र में प्रकाशित नहीं कराया जायेगा। सभी निविदादाताओं को सलाह दी जाती है कि ई-निविदा पोर्टल को नियमित रूप से अवलोकन करते रहे।

ई-निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण बेवसाइट www.etender.up.nic.in पर उपलब्ध है। बिड डाक्यूमेन्ट बेवसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है।

अधिशासी अभियंता,
ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग,
प्रखण्ड-आजमगढ़।

UPID NO.244775 DATE.28.01.2026 यह विज्ञापन सूचना विभाग की वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

अजीत पवार को उनके दांव पेंचों के लिए याद किया जायेगा

बुधवार सुबह बारामती के पास हुई एक विमान दुर्घटना में महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री अजित पवार व चालक दल के सदस्यों समेत पांच लोगों की दुखद मृत्यु हो गई। मुंबई से बारामती आ रहा चार्टर विमान मौसम की खराबी के कारण रनवे के करीब दुर्घटनाग्रस्त हो गया। दुर्घटना के कारणों का असली पता जांच के बाद ही चलेगा, मगर प्रथम दृष्टया धुंध के कारण दृश्यता में कमी ही बताया जा रहा है। महाराष्ट्र में छह बार उप मुख्यमंत्री रहे अजित पवार के राज्य में राजनीतिक योगदान को नकारा नहीं जा सकता। राज्य में तीन दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की गई है और राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व अन्य विपक्षी दलों ने उनके निधन पर गहरा दुख जताया है। हालांकि, ममता बनर्जी ने उनकी मौत को लेकर कुछ सवाल खड़े किए हैं, लेकिन उनके राजनीतिक गुरु व चाचा शरद पवार ने उनकी मृत्यु को लेकर राजनीतिक बयानबाजी को खारिज किया है। निश्चय ही महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री और नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी यानी एनसीपी के नेता अजित पवार की असामयिक दुर्घटना में मृत्य ने महाराष्ट्र की राजनीति में एक शून्य जरूर पैदा कर दिया है। वहीं डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन यानी डीजीसीए के मुताबिक दुर्घटना क्रैश लैंडिंग के दौरान हुई। रनवे के निकट हुए हादसे में विमान में आग लग गई और स्थानीय लोगों के प्रयासों के बावजूद किसी को बचाया नहीं जा सका। विमान लियरजेट-45 सोलह साल पुराना था। घटना पर राज्य के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने तीन दिन के राजकीय शोक की घोषणा की है। निस्संदेह, अजित पवार जनता के नेता थे और जमीनी स्तर पर लोगों से उनका गहरा जुड़ाव था। बताया जाता है कि प्रशासनिक मामलों में उनकी समझ गहरी थी। वे वंचित वर्ग को सशक्त करने के प्रयासों के लिये जाने जाते रहे हैं।

बहरहाल, अजित पवार को महाराष्ट्र की राजनीति में उनके बदलते दांव-पेचों के लिये याद किया जाता रहेगा। उनके बारे में कहा जाता रहा है कि वे उस कहावत को हकीकत बनाते रहे हैं कि राजनीति में कोई स्थायी दोस्त नहीं होता और ना ही स्थायी दुश्मन। वे अपनों के साथ तो रहे, गैरों को भी रास आए। उन्होंने चाचा और अपने राजनीतिक गुरु शरद पवार से राजनीति के गुर सीखे। शरद पवार को महाराष्ट्र की राजनीति का चाणक्य कहा जाता रहा है, लेकिन अजित पवार ने उनसे अलग होकर अपनी नई राह भी बनायी। यूं तो उन्होंने चाचा शरद के साथ राजनीतिक पारी शुरू की लेकिन साल 2023 आने तक वे एकला चलो की राजनीति करने लगे। हालांकि, उन्होंने चाचा शरद पवार की छत्रछाया में राजनीति का ककहरा सीखा लेकिन एक समय वे पार्टी का सिंबल भी ले जाने में कामयाब रहे। फिर शरद पवार को नई पार्टी बनाकर उपस्थिति दर्ज करानी पड़ी। बारहवीं तक पढ़ाई के बावजूद वे अनुभवी नीतिकारों की सहायता से एक बेहतर प्रशासक भी साबित हुए। सहकारी चीनी मिलों से राजनीति की शुरूआत करने वाले पवार विधायक से लेकर सांसद तक चुने जाते रहे। वे राज्य में छह बार उप मुख्यमंत्री बने। साल 1991 में पहली बार बारामती से कांग्रेस के टिकट पर सांसद बने, लेकिन चाचा शरद पवार के लिये बाद में सीट खाली भी की। वे सबसे पहले 1995 में महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर विधायक बने। उनकी लोकप्रियता का आकलन इस बात से किया जा सकता है कि वे सात बार विधायक चुने गए। फिर वे विलासराव देशमुख की कांग्रेस-एनसीपी गठबंधन सरकार में पहली बार सिंचाई मंत्री बने। फिर ग्रामीण विकास मंत्री भी रहे। बाद में वे एनसीपी-कांग्रेस गठबंधन में जल संसाधन मंत्री भी रहे। साल 2019 में महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद उनके अचानक भाजपा गठबंधन के साथ आने और उप मुख्यमंत्री बनने ने सबको चौंकाया था। फिर पवार साल 2023 में महायुति गठबंधन का हिस्सा बनकर पांचवीं बार उप मुख्यमंत्री बने। हालांकि, एनसीपी में विभाजन के बाद शरद पवार परिवार से संबंध बनाये रखे। इसके बावजूद कि उन्होंने एनसीपी का नाम और सिंबल तक ले लिया था। महाराष्ट्र की राजनीति में अजित पवार को कई मायनों में हमेशा याद किया जाएगा।

अच्छी-सच्ची पत्रकारिता की कसौटी पर खरे उतरे मार्क टुली

● विश्वनाथ सचदेव

किसी भी पत्रकार के लिए मार्क टली जैसा विश्वास पाना किसी तमगे से कम नहीं है। वैसे उन्हें तमगे भी कम नहीं मिलेङ्क भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री और पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया और इंग्लैंड की महारानी ने उन्हें सर का खिताब दिया।

यह मेरा दुर्भाग्य ही है कि मुझे बीबीसी के भारत स्थित संवाददाता स्वर्गीय मार्क टली से मिलने का कभी अवसर नहीं मिला, पर हकीकत यह भी है कि मैं पिछले चार-पांच दशकों में उनसे अक्सर मिलता रहा हूं। यह मिलना बीबीसी रेडियो के माध्यम से होता था। दशकों से रेडियो बीबीसी विश्वसनीय खबरों का एक पर्याय बन चुका हुआ था, और मेरे जैसे लाखों-करोड़ों श्रोता बीबीसी के माध्यम से ही खबरों की विश्वसनीयता परखा करते थे। बीबीसी को यह श्रेय जहां संस्थान की रीति-नीति के कारण मिलता था, वहीं सर मार्क टली जैसे सजग और ईमानदार पत्रकारों ने बीबीसी की विश्वसनीयता बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

आज मार्क टली हमारे बीच नहीं हैं। भारत में ही जन्मे सर टली के निधन से ईमानदार पत्रकारिता का एक उत्कृष्ट उदाहरण हमारे बीच से उठकर चला गया। वे चाहते थे कि उनका निधन भारत में ही हो और यह संयोग मात्र नहीं है कि भारत के बनते इतिहास का यह साक्षी अपनी जन्मभूमि से ही विदा हुआ। आज जब रेडियो के माध्यम से समय की सच्चाई जानने वाले श्रोता उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं, तो उस व्यक्ति के साथ ही उस पत्रकारिता की बात भी होनी चाहिए, जिसके लिए वह जाना जाता रहा। और यह अवसर इस बात का भी है कि हम पत्रकारिता, विशेषकर भारत की पत्रकारिता के बारे में भी सोचें, यह आकलन करने की कोशिश करें कि आज हमारी पत्रकारिता की स्थिति क्या है, और जैसी है, वैसी क्यों है?

अच्छी और सच्ची पत्रकारिता की शायद सबसे बड़ी कसौटी यह है कि विश्वसनीयता के संदर्भ में वह कहां ठहरती है। था एक जमाना जब यह माना जाता था कि अखबार में यदि कुछ छपा है तो वह सही ही होगा, जो अखबार जितनी ज्यादा तटस्थ और सही खबरें देता था, वह उतना ही बेहतर माना जाता था।

अब जबकि अखबार के साथ टेलीविजन और सोशल मीडिया भी खबरों की दुनिया का हिस्सा, प्रमुख हिस्सा कहा जाना चाहिए, बन गया है, तो विश्वसनीयता का महत्व और बढ़ जाता है। जिसकी जितनी ज्यादा पहुंच है, उससे उतनी ही ज्यादा ईमानदारी की अपेक्षा की जाती है। यह ईमानदारी ही मीडिया के कद को नापती है।

मुझे याद है जब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 1984 में हत्या हुई तो राजीव गांधी दिल्ली से बाहर (बंगाल में) थे। तब उन्होंने बीबीसी रेडियो के माध्यम से ही समाचार की पुष्टि की थी। ज्ञातव्य है कि ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) ने तो शाम छह बजे तक उनकी मृत्यु की आधिकारिक घोषणा नहीं की थी। कारण कुछ भी बताये जायें, पर यह हकीकत अपनी जगह है कि राजीव गांधी को तब इंग्लैंड का बीबीसी रेडियो ही विश्वसनीय लगा था। यह तथ्य जहां बीबीसी के महत्व को दशार्ता है, वहीं इस बात को भी रेखांकित करता है कि मीडिया की विश्वसनीयता उसकी सबसे बड़ी ताकत होती है। यह दुर्भाग्य ही है कि आज हमारा रेडियो सरकारी सूचनाओं का भोंपू बनकर रह गया है! दुर्भाग्य यह भी है कि आज हमारे मीडिया का एक बड़ा हिस्सा विश्वसनीयता के संकट का शिकार हो गया है।

लगभग आधी सदी पहले जब 1975 में देश में आपातकाल लागू किया गया था तो उसका सबसे बुरा असर मीडिया पर ही पड़ा था। अखबारों पर सेंसरशिप लगा दी गयी थी, कुछ भी छापने से पहले सरकारी एजेंसियों से अनुमति लेनी होती थी। उस कठिन समय में जिन गिने-चुने साहसी पत्रकारों ने सरकार के इस आदेश का पालन करने से इनकार किया, उनमें बीबीसी रेडियो के भारत स्थित संवाददाता मार्क टली का नाम बड़ी प्रमुखता से लिया जाता है। तब उन्हें चौबीस घंटे में भारत छोड़कर जाने का आदेश तत्कालीन सरकार ने दिया था। सरकार के आगे घुटने टेकने के बजाय मार्क टली ने अपने देश लौट जाना बेहतर समझा। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार और पत्रकारिता की विश्वसनीयता को बनाये रखने के लिए वे इंग्लैंड लौट गये। पर सरकार उनकी वाणी पर प्रतिबंध नहीं लगा पायी थी। लंदन में रहते हुए भी वह भारत स्थित अपने सूत्रों से सही सूचनाएं प्राप्त करते रहे– भारत समेत दुनिया भर के श्रोताओं तक उन्हें पहुंचाते रहे।

यह सही है कि उस काल की भारत की पत्रकारिता पर अपयश के काले धब्बे लगे थे। आपातकाल के बाद बनी जनता पार्टी की सरकार में सूचना एवं प्रसारण मंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने तब कहा था, ह्यजब हमारे पत्रकारों को घुटने टेकने के लिए कहा गया तो वे रेंगने लगे थे।ह्ल पर सच यह भी है कि उस स्थिति के लिए सिर्फ पत्रकार ही दोषी नहीं थे, पत्रकारों से कहीं ज्यादा डर तब मीडिया-मालिकों, प्रबंधकों को था। लेकिन यह कथित विवशता आपातकाल में हमारी पत्रकारिता पर लगे धब्बों को नहीं मिटा सकती। दुर्भाग्य की बात तो यह भी है कि आज भी हमारी पत्रकारिता पर विश्वसनीयता का संकट मंडरा रहा है। मीडिया का बहुत बड़ा हिस्सा आज ह्यगोदी मीडियाह्ल कहलाता है। यह स्थिति निश्चित रूप से चिंताजनक है।

बीबीसी से सेवानिवृत्त होने के बाद भी मार्क टली ने भारत को ही अपना देश बनाया। वे भारत और भारत की चुनौतियों को अच्छी तरह समझते थे, और उनका मानना था कि जनता तक सही और समुचित जानकारी पहुंचाना पत्रकारिता का दायित्व है। उनका स्पष्ट कहना था कि पत्रकारिता का एक ही नियम हैङ्क अपने आप से यह पूछिए कि कोई आप पर क्यों विश्वास करता रहे। यदि आप दिमाग में यह सवाल बनाए रखेंगे तो स्वयं ही पता चल जाएगा कि आप रिपोर्ट कैसे करें। एक बार यदि विश्वास टूट जाये तो फिर से प्राप्त करना लगभग असंभव है। जितना आप सत्ता के निकट रहेंगे, इस विश्वास पर उतना अधिक जंग लगेगा।पत्रकार टली सत्ता के नहीं, जनता के निकट रहना पसंद करते थे। उनकी संवेदना जनता के ही निकट रहती थी, पर इस बात का भी ध्यान उन्हें हमेशा रहा कि संवेदना भावुकता का रूप न ले ले। जनता से उनकी निकटता का यह परिणाम था कि जनता के मूड या भावना को वह आसानी से समझ जाते थे। उनके साथी पत्रकार अक्सर उनके इस गुण की चर्चा किया करते थे। यह जनता से उनकी निकटता का ही परिणाम (या प्रमाण) है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक दौरे के दौरान एक ग्रामीण ने उनके साथियों से कहा ह्यटली साहब कह रहे हैं तो सच ही होगा !ह्ल किसी भी पत्रकार के लिए इस तरह का विश्वास पाना अपने आप में किसी तमगे से कम नहीं है। वैसे उन्हें तमगे भी कम नहीं मिलेङ्क भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री और पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया और इंग्लैंड की महारानी ने उन्हें ह्यसरह्ल का खिताब दिया। दो सरकारों द्वारा इस तरह से सम्मानित करना अपने आप में एक विशेष उपलब्धि से कम नहीं है, पर सर मार्क टली के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार अपने पाठकों-श्रोताओं का विश्वास प्राप्त करना था। इस तरह विश्वास अर्जित करने वाले पत्रकार कम ही होते हैं। यह विश्वास ही सच्ची-अच्छी पत्रकारिता की पहचान है।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

घर पर बनाएं पनीर गट्टे की सब्जी उंगलियां चाटते रह जाएंगे सब

अक्सर होता है कि महिलाएं दोपहर का लंच हो या फिर रात की डिनर कौन-सी दाल या सब्जी बनाए इसे लेकर कंफ्यूज रहती हैं। सर्दियों में होता है कि घर में बार-बार हरा साग बनता है जिसका नाम सुनते ही बच्चे मुंह सिकोड़ लेते हैं। ऐसे में अक्सर मम्मियां खाने में कुछ ऐसा बनाने की कोशिश करती है कि, जो सब लोग बड़े ही प्यार खा लें। खासतौर पर पनीर की भुजिया या फिर मटर पनीर को हर कोई खा लेता है। लेकिन आप कुछ अलग बनाना चाहती हैं, तो पनीर गट्टे की सब्जी जरुर ट्राई करें। आइए आपको इसकी रेसिपी बताते हैं।

पनीर गट्टे की सब्जी कैसे बनाएं?

- एक साफ थाली या कटोरे में एक कप बेसन लें। इसमें 1/4 कप दही मिलाएं, फिर 1 छोटा चम्मच हल्दी पाउडर, 1 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1 छोटा चम्मच धनिया पाउडर, स्वाद के अनुसार नमक डालें। इसके बाद कसूरी मेथी और अजवाइन मिलाकर सभी चीजों को अच्छी तरह मिला लें ताकि मसाले बेसन में समान रूप से घुल जाएं।

- अब इसमें थोड़ा पानी डालकर सब कुछ एक साथ मिलाएं और इसका नरम आटा गूंथ लें।

- फिर आप पनीर को कद्दूकस करें और स्वादनुसार नमक डालें, इसकी छोटी-छोटी गोलियां बना लें।

- अब इसे बेसन के आटे में भरें और इन गोलियों को पानी में 4-5 मिनट तक उबालें।

- अब आधा कप अच्छी तरह फेंटा हुआ दही लें। इसमें आधा छोटा चम्मच हल्दी पाउडर, एक बड़ा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, धनिया पाउडर और जीरा पाउडर डालें। सभी मसालों को दही में अच्छी तरह मिलाएं ताकि एक समान और चिकना मिश्रण तैयार हो जाए।

- इसके बाद एक कढ़ाई में तेल डाले और इसमें 1 बड़ा चम्मच जीरा, बारीक कटे प्याज डालें और हल्का गुलाबी होने तक भूनें।

- अब 1 टमाटर की प्यूरी डालें और तेल अलग होने तक पकाएं।

- एक मिनट के लिए गैस बंद कर दें और दही का मिश्रण डालें।

- इसको आप लगातार चलाते हुए पकाएं।

- तेल अलग होने लगे तो इसमें 1 छोटा चम्मच गरम मसाला, स्वादानुसार नमक और 1/2 कप पानी डालें।

- 2-3 मिनट तक पकाने के बाद इसमें भरवां गट्टे डालकर 4-5 मिनट और पकाएं।

- इसको अब ताजा धनिया और क्रीम से गर्निश करें और फिर गरम-गरम फुल्के या रोटी/पराठे के साथ सर्व कर सकते हैं।

मूली के पराठे बेलते वक्त फट जाते हैं आजमाएं, बनेंगे एकदम परफेक्ट

सर्दियों के मौसम में सबसे ज्यादा पराठे ही खाए जाते हैं। तरह-तरह के पराठे इस मौसम में खाना सभी को काफी पसंद होता है। ठंड में गरमा-गरम मूली के पराठे न बनें, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। मूली के पराठे स्वाद में काफी टेस्टी होते हैं लेकिन इन्हें बनाना बड़ा टास्क होता है। कई बार लोगों की शिकायत रहती हैं कि पराठे बेलते समय फट जाते हैं या मूली पानी छोड़ देती है जिससे आटा गीला हो जाता है। यदि आपके साथ भी यही होता है तो परेशान न हो। बस इन जादुई ट्रिक्स को अपनाकर आप बिल्कुल गोल, फूले हुए और बिना फटे मूली के पराठे बना सकते हैं।मूली में नैचुरल रूप से पानी की मात्रा काफी ज्यादा होती है। अगर इसे बिना तैयारी के सीधे आटे में भर दिया जाए, तो पराठा बनाते समय उसके फटने की पूरी संभावना रहती है। इसलिए पहले मूली को कद्दूकस कर लें और उसमें थोड़ा नमक मिलाकर करीब 10ङ्क15 मिनट तक रख दें। नमक मिलाने से मूली का अतिरिक्त पानी बाहर निकल आता है,जिससे पराठा सही तरीके से बनता है। इसके बाद, एक सूती कपड़े में मूली को डालकर अच्छे से निचोड़ लें।

सिने जगत

रणवीर सिंह के बाहर होने के बाद डॉन 3 होल्ड पर

फिल्ममेकर फरहान अख्तर ने रणवीर सिंह को डॉन 3 से बाहर कर दिया है। इसके बाद फिल्म को अस्थायी रूप से होल्ड पर रख दिया गया और अब नए एक्टर की तलाश जारी है। इसी बीच फरहान अपनी दूसरी फिल्म जी ले जरा पर ध्यान दे रहे हैं। इस फिल्म में प्रियंका चोपड़ा, कटरीना कैफ और आलिया भट्ट नजर आएंगी।पिंकविला की रिपोर्ट के अनुसार, फरहान अख्तर के लिए डॉन 3 की कास्टिंग बेहद अहम है। वह पूरी तरह सुनिश्चित होना चाहते हैं कि इस भूमिका के लिए सही एक्टर ही चुना जाए, इसी वजह से यह प्रक्रिया लंबी चल रही है।इसी कारण फरहान फिलहाल जी ले जरा पर फोकस कर रहे हैं। यह फिल्म उनके लिए हमेशा से खास रही है। बताया जा रहा है कि वह कटरीना कैफ, आलिया भट्ट और प्रियंका चोपड़ा जोनास से फिर से संपर्क कर रहे हैं, ताकि प्रोजेक्ट को अंतिम रूप दिया जा सके।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि फिल्म की स्क्रिप्ट पूरी हो चुकी है और उसे लॉक भी कर दिया गया है, लेकिन तीनों एक्ट्रेसेस की शूटिंग डेट्स का मेल न बैठ पाने की वजह से देरी हो रही है। जैसे ही तीनों की डेट्स फाइनल होती हैं, फिल्म की शूटिंग शुरू की जा सकती है।

हालांकि, फरहान अख्तर इस चुनौती का समाधान निकालने की कोशिश कर रहे हैं और तीनों एक्ट्रेसेस के साथ लगातार बातचीत कर रहे हैं, ताकि शूटिंग के लिए कोई शेयर समय तय किया जा सके। बता दें, पहले खबरें थीं कि रणवीर सिंह डॉन-3 से अलग हो गए हैं। एक्टर ने ये फैसला धुरंधर की सफलता की वजह से लिया था। लेकिन फिर नई जानकारी आई थी कि रणवीर ने ये फिल्म नहीं छोड़ी बल्कि उनके अनुचित मांगों और क्रिएटिव डिफरेंस की वजह से उन्हें फिल्म से निकाला गया है।

इंडिया टुडे के रिपोर्ट के मुताबिक, रणवीर की फिल्म छोड़ने की खबर पूरी तरह अफवाह है। मेकर्स और रणवीर के बीच क्रिएटिव मतभेद थे। इसका नतीजा ये हुआ कि मेकर्स ने एक्टर को फिल्म से बाहर निकाल दिया।

मेकर्स रणवीर की मांगों से सहमत नहीं थे।सोर्स ने ये भी दावा किया था कि रणवीर की पिछले तीन फिल्में लगातार फ्लॉप रहीं लेकिन उसके बाद भी फरहान अख्तर और रितेश सिधवानी ने उन्हें मौका दिया। फिल्में फ्लॉप होने की वजह से संजय लीला भंसाली ने बैजू बावरा कैंसिल कर दी थी लेकिन फरहान-रितेश उनके साथ खड़े रहे थे।

सिक्योरिटी गार्ड ने शाहरुख का चश्मा उतरवाया

शाहरुख खान का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें मुंबई एयरपोर्ट पर सुरक्षा जांच के दौरान एक्टर से चश्मा उतरवाया जाता है। इस दौरान एक्टर ने नियमों का पालन किया और मुस्कुराते हुए नजर आए। दरअसल, शाहरुख खान को आज सुबह मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया, जहां से वह दुबई के लिए रवाना हुए। शाहरुख खान दुबई मॉल ग्लोबल फैशन अवार्ड्स में शिरकत करेंगे, जहां उन्हें ग्लोबल स्टाइल आइकन अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। पैपराजी ताहिर जासूस द्वारा शेयर किए गए वीडियो में शाहरुख खान एयरपोर्ट पर सिक्योरिटी चेकिंग करते नजर आए। इस दौरान एक्टर सिंपल लेकिन स्टाइलिश लुक में दिखाई दिए। उन्होंने सफेद शर्ट और डेनिम कार्गो पैंट के साथ नीली हुडी कैरी किया था।सामने आए वीडियो में एंट्री गेट पर मौजूद सिक्योरिटी गार्ड ने पहले शाहरुख का पासपोर्ट चेक किया और फिर उन्हें चश्मा उतारने को कहा। शाहरुख खान ने पूरी तरह से सुरक्षा नियमों का पालन किया और बिना किसी हिचक के गाइडलाइंस फॉलो कीं। शाहरुख खान की यह सिक्योरिटी चेकिंग का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। यूजर्स जहां एक तरफ शाहरुख की सादगी और नियमों के प्रति सम्मान की तारीफ कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सिक्योरिटी गार्ड की भी सराहना हो रही है।

अजित पवार : आरोपों से ऊपर उठे राजनीति के दादा-पुरुष

● ललित गर्ग

यह खबर केवल एक व्यक्ति के निधन की नहीं है, बल्कि महाराष्ट्र की राजनीति के एक पूरे युग के अचानक थम जाने की सूचना है। 28 जनवरी 2026 की सुबह जब बारामती में हुए विमान हादसे में उपमुख्यमंत्री अजित अनंतराव पवार के असामयिक निधन की पुष्टि हुई, तो वह क्षण केवल पवार परिवार के लिए नहीं, बल्कि समूचे महाराष्ट्र और देश की राजनीति के लिए गहरे शोक और स्तब्धता का कारण बन गया। जिस नेता को लोग अधिकार, अनुभव और निर्णय क्षमता का पर्याय मानते थे, उसका इस तरह अचानक चले जाना सत्ता, प्रशासन और राजनीतिक संतुलन में एक बड़ा रिक्त स्थान छोड़ गया है। एक संभावनाओं भरी महाराष्ट्र की राजनीति एवं राष्ट्रीय विचारों का सफर ठहर गया, उनका निधन न केवल महाराष्ट्र के लिये, भारत की राष्ट्रवादी सोच के लिये बल्कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रवादी राजनीति पर एक गहरा आघात है, अपूरणीय क्षति है। उनके निधन से सहकारी आन्दोलन को भी गहरा धक्का लगा है।अजित पवार का जीवन किसी राजसी विरासत की सहज कहानी नहीं था। 22 जुलाई 1959 को अहमदनगर जिले के देओली प्रवरा क्षेत्र में जन्मे अजित पवार ने जीवन को बहुत करीब से संघर्ष करते हुए देखा। उनके पिता अनंतराव पवार फिल्म जगत से जुड़े रहे, राजकमल स्टूडियो में काम किया, लेकिन पारिवारिक परिस्थितियां साधारण रहीं। औपचारिक शिक्षा माध्यमिक स्तर तक ही सीमित रही, किंतु जीवन की व्यावहारिक पाठशाला ने उन्हें वह सिखाया जो बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान भी नहीं सिखा पाते। शायद यही कारण रहा कि अजित पवार की राजनीति किताबों से नहीं, जमीन से निकली हुई राजनीति थी, जिसमें किसानों की पीड़ा, सहकारी संस्थाओं की ताकत और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की नब्ज साफ दिखाई देती थी। राजनीति में उनका प्रवेश किसी बड़े मंच से नहीं, बल्कि सहकारी आंदोलन की प्रयोगशाला से हुआ। 1982 में मात्र बीस वर्ष की आयु में उन्होंने एक चीनी सहकारी संस्था का चुनाव लड़ा। यह वही दौर था जब महाराष्ट्र की राजनीति में सहकारी संस्थाएं सत्ता की रीढ़ मानी जाती थीं। अजित पवार ने बहुत जल्दी समझ लिया कि यदि ग्रामीण महाराष्ट्र को साधना है तो उसे बैंक, चीनी मिल, सिंचाई और बिजली से जोड़ना होगा। यही समझ आगे चलकर उनकी राजनीतिक पहचान की सबसे बड़ी ताकत बनी।

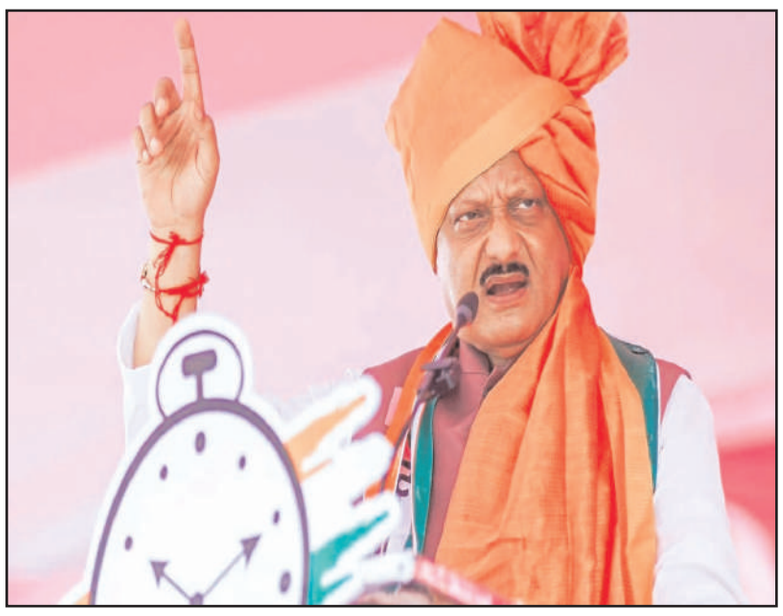

1991 अजित पवार के राजनीतिक जीवन का निर्णायक वर्ष रहा। पुणे जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष बनने के साथ ही उन्होंने वित्तीय प्रशासन और संगठन संचालन में अपनी दक्षता का परिचय दिया। सोलह वर्षों तक इस पद पर बने रहना अपने आप में उनकी विश्वसनीयता और पकड़ को दशार्ता है। उसी वर्ष बारामती से लोकसभा के लिए निर्वाचित होना उनके बढ़ते कद का प्रमाण था, लेकिन उन्होंने यह सीट अपने चाचा शरद पवार के लिए छोड़ दी। यह फैसला केवल पारिवारिक निष्ठा का नहीं, बल्कि राजनीतिक दूरदृष्टि का भी उदाहरण था। इसके बाद विधानसभा में प्रवेश और फिर लगातार बारामती से जीत ने उन्हें जनाधार का वह आधार दिया, जिसे महाराष्ट्र की राजनीति में विरले ही कोई चुनौती दे सका। अजित पवार को सत्ता के गलियारों में पहुंचाने वाली सबसे बड़ी विशेषता उनकी प्रशासनिक पकड़ थी। कृषि, बागवानी, बिजली और जल संसाधन जैसे कठिन और संवेदनशील विभागों को संभालते हुए उन्होंने विकास और विवाद दोनों को नजदीक से जिया। जल संसाधन मंत्री के रूप में कृष्णा घाटी और कोकण सिंचाई परियोजनाओं से उनका नाम जुड़ा। इन परियोजनाओं ने जहां किसानों के लिए पानी और उम्मीद का संदेश दिया, वहीं आलोचनाओं और आरोपों का बोझ भी उनके कंधों पर रखा। इसके बावजूद वे उन नेताओं में रहे जो फाइलों से नहीं, फैसलों से पहचाने जाते थे।

उपमुख्यमंत्री के रूप में उनका सफर महाराष्ट्र की राजनीति में एक अनोखा अध्याय है। छह बार इस पद तक पहुंचना केवल राजनीतिक संयोग नहीं था, बल्कि सत्ता संतुलन, गठबंधन राजनीति और संगठनात्मक ताकत का परिणाम था। वे सरकार में अक्सर संकटमोचक की भूमिका में दिखे। बजट, वित्तीय प्रबंधन और संसदीय रणनीति में उनकी पकड़ ऐसी थी कि विरोधी भी उनके अनुभव को नजरअंदाज नहीं कर पाते थे। उन्हें महत्वाकांक्षी कहा गया, कभी-कभी कठोर और रूखे स्वभाव का नेता भी बताया गया, लेकिन यह भी सच है कि सत्ता की वास्तविकता को वे भावनाओं से नहीं, निर्णयों से देखते थे। विवाद उनके राजनीतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा रहे। सिंचाई घोटाले से लेकर बयानबाजी तक, कई मौके ऐसे आए जब उनकी छवि पर प्रश्नचिह्न लगे। ह्लअगर बांध में पानी नहीं है तो क्या पेशाब करके भरें?ह्ल जैसे बयान ने उन्हें आलोचनाओं के केंद्र में ला खड़ा किया। उन्होंने माफी भी मांगी, सफाई भी दी और समय के साथ उन विवादों से उबरते हुए फिर सत्ता के शीर्ष पर लौटे। यह उनकी राजनीतिक जिजीविषा का प्रमाण था कि आलोचना और आरोप उन्हें रोक नहीं पाए।

शरद पवार के साथ उनके रिश्ते को लेकर भी हमेशा चचार्एं रहीं। कभी मतभेद, कभी दूरी और कभी सियासी अलग राह की अटकलें। लेकिन अजित पवार स्वयं को हमेशा शरद पवार का अनुयायी बताते रहे। उन्हें मिला ह्लदादाह्ल का संबोधन केवल पारिवारिक नहीं था, बल्कि वह एक राजनीतिक ब्रांड बन चुका था, जो उनके समर्थकों में भरोसे और नेतृत्व की भावना जगाता था। वे संगठनकर्ता भी थे और प्रशासक भी, रणनीतिकार भी और जमीनी नेता भी। उन्हें अपनी विविध आयामी भूमिकाओं से अपने को मिले ह्यदादाह्ल के अलंकरण को सार्थक भी किया और जीवंतता भी दी। उनका असामयिक निधन एक क्रूर विडंबना है। जिस नेता ने दशकों तक सत्ता की उड़ान भरी, उसकी जीवन यात्रा एक विमान हादसे में थम गई। कहा जाता है कि दुर्घटना से कुछ समय पहले तक वे पूरी तरह सक्रिय थे, योजनाओं, बैठकों और राजनीतिक समीकरणों में व्यस्त। यह अचानक आई मृत्यु उस अनिश्चितता को रेखांकित करती है, जो सत्ता और जीवन दोनों के साथ जुड़ी है।

अजित पवार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सफल राजनेता, समाज निमार्ता, ग्राम-उद्धारक, सहकारी आन्दोलन पुरोधा, कुशल प्रशासक के रूप में अनेक छवि, अनेक रंग, अनेक रूप में उभरकर सामने आता हैं।

आपके जीवन की दिशाएं विविध एवं बहुआयामी थीं। आपके जीवन की धारा एक दिशा में प्रवाहित नहीं हुई, बल्कि जीवन की विविध दिशाओं का स्पर्श किया। यही कारण है कि कोई भी महत्त्वपूर्ण क्षेत्र आपके जीवन से अछूता रहा हो, संभव नहीं लगता। आपके जीवन की खिड़कियाँ समाज एवं राष्ट्र को नई दृष्टि देने के लिए सदैव खुली रही। उनकी सहजता और सरलता में गोता लगाने से ज्ञात होता है कि वे राजनीतिक सरोकार से ओतप्रोत एक अल्हड़ एवं साहसिक व्यक्तित्व थे। बेशक अजित पवार अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन अपने जुझारु राजनीति जीवन के दम पर वे हमेशा भारतीय राजनीति एवं राष्ट्रवादी सोच के आसमान में एक सितारे की तरह टिमटिमाते रहेंगे।

जिला विद्यालय यान परिवहन सुरक्षा समिति की बैठक हुई

पीडीडीयू नगर(चन्दौली), 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिलाधिकारी अनुश्रवण कक्ष में जिलाधिकारी चंद्र मोहन गर्ग की अध्यक्षता मेंजिला विद्यालय परिवहन यान सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित हुई।बैठक में स्कूली वाहनों के सुरक्षित परिवहन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विस्तृत रूप से चर्चा की गयी।बैठक में जिलाधिकारी ने प्रत्येक विद्यालय में रोड सेफ्टी कमेटी के गठन हेतु उपस्थित विद्यालय प्रबन्धक/प्राचार्य को निर्देशित किया गया एवं कहा गया कि स्कूल वाहनों के चालकों का ड्राइविंग लाइसेंस,स्वास्थ्य परीक्षण व चरित्र को सत्यापित कराने का कार्य शीघ्र पूर्ण करा ले साथ ही स्कूली वाहन चालकों सुरक्षित गति सीमा में विद्यालय वाहन संचालित हेतु निर्देशित करें। उक्त के अतिरिक्त विद्यालय द्वारा नामित नोडल टीचर एवं ट्रान्सपोर्ट इंचार्ज बस में लगे सुरक्षात्मक उपकरण जैसे सी0सी0टी0वी0, अग्निशमन संयंत्र, फर्स्ट-एड-बॉक्स व आपातकालीन खिड़की इत्यादि की समय-समय पर जांच करे उन्होंने स्कूली बच्चों के सुरक्षित परिवहन हेतु विद्यालय प्रबन्धन को समय-समय पर विद्यालय में अभिभावक-अध्यापक संग आयोजित मिटिंगों में अनिवार्य रूप से बच्चों के सुरक्षित परिवहन पर चर्चा करें त्वार पहिया वाहन चलाते समय अनिवार्य रूप से सीट-बेल्ट लगाए। अनफिट स्कूली वाहनों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही करने हेतु सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी को निर्देशित किया गया साथ ही जिला विद्यालय निरीक्षक एवं बेसिक षिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया कि जिन विद्यालयों में अनफिट,बिना वैध प्रपत्रों के संचालन होना पाया जाए एवं लम्बे समय से प्रपत्रों को वैध करायें ऐसे विद्यालय को चिन्हित कर उनकी मान्यता को रद्द करने सम्बन्धी आवश्यक कार्यवाही करें।बैठक के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक अनंत चंद्रशेखर,सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी(प्रषासन/प्रवर्तन)बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं अन्य सम्बन्धित अधिकारी/कर्मचारी व स्कूलों के प्रधानाचार्य/प्रतिनिधि उपस्थित रहें।

सामूहिक प्रयासों से बनेगा बाल श्रम मुक्त चंदौली-अपर जिलाधिकारी

पीडीडीयू नगर(चन्दौली), 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। बाल श्रम मुक्त चंदौली बनाने के लिए जागरूकता रथ का अपर जिलाधिकारी (न्यायिक)रतन वर्मा द्वारा हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ राजकीय आई0टी0आई0 रेवसा से किया गया।बाल श्रम उन्मूलन एवं पुनर्वासन विषय पर एक जनपदीय कार्यशाला का आयोजन राजकीय आई0टी0आई0 रेवसा में किया गया।आयोजन श्रम विभाग,ब्रिटिश एशियन इण्डिया फाउण्डेशन एवं मानव संसाधन एवं महिला विकास संस्थान के सहयोग से किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अपर जिलाधिकारी ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा कि बाल श्रम मुक्त चंदौली बनाने के लिए व्यापार संगठनों, ईंट भट्ठा एसोसिएशन, विभिन्न रेस्टोरेंट मालिकों का सहयोग बहुत जरूरी है इन सभी उपक्रमों को न सिर्फ बाल श्रम मुक्त चंदौली बनाने का प्रण लेना होगा बल्कि अपने एसोसिएशन के अंतर्गत आने वाले सभी प्रतिष्ठानों में यह सुनिश्चित करना होगा कि कोई भी बच्चा काम ना करें साथ ही बाल एवं किशोर प्रतिषेध एवं विनियमन अधिनियम 1986 के अंतर्गत जिन अधिकारियों को बाल श्रम रोकने के लिए अधिसूचित किया गया है,उनको अपने क्षेत्रों में बाल श्रम मुक्ति के लिए अभियान चलाना होगा।साथ ही उन्होंने कहा कि कार्यशाला से निकली कार्ययोजना को

अमली जामा पहनाने के लिए विभिन्न विभागों को साथ में आना होगा।

कार्यशाला में सैय्यद रिजवान अली,राज्य समन्वयक,स्टेट रिसोर्स सेल,श्रम विभाग मुख्यालय कानपुर ने बताया कि प्रदेश सरकार वर्ष 2027 में प्रदेश को बाल श्रम मुक्त करने के लिए संकल्पित है। साथ ही जनपद चंदौली जो कि प्रदेश सरकार द्वारा आकांक्षी जनपद में सम्मिलित है, को वर्ष 2026 में बाल श्रम मुक्त कराया जाना है।साथ ही उन्होंने आगे बताया कि 14 आयु वर्ष तक के बच्चों से किसी भी प्रकार का कार्य कराया जाना पूर्णतया प्रतिबन्धित है। सिर्फ कुछ गैर खतरनाक प्रक्रियाओं एवं व्यवसायों में 14-18 आयु वर्ग के बच्चों से सशर्त कराया जा सकता है जिससे की उनकी शिक्षा बाधित न हो। कार्यशाला के दौरान मानव संसाधन एवं महिला विकास संस्थान की प्रतिनिधि सुश्री शहनाज द्वारा बताया गया कि राज्य स्तर पर ब्रिटिश एशियन ट्रस्ट और श्रम विभाग के बीच पाँच आकांक्षी जनपदों को 2026 तक बाल श्रम मुक्त बनाने के लिए एक लिखित सहमति हुई है। इसी क्रम में ब्रिटिश एशियन ट्रस्ट की सहयोगी संस्था मानव संसाधन एवं महिला विकास संस्थान चंदौली में श्रम विभाग के साथ कार्य रही है।उन्होंने यह भी बताया कि बच्चों की स्कूलों में उपस्थिति एवं नियमितता बनाने में शिक्षा विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है।साथ ही महिला एवं बाल कल्याण विभाग द्वारा ग्राम स्तरीय बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति एवं ब्लॉक स्तरीय ग्राम एवं बाल कल्याण समिति को मजबूत कर बाल श्रम रोकने के लिए कार्य करना होगा। उत्तर प्रदेश को बाल श्रम मुक्त बनाने के दिशा में चंदौली को बाल श्रम मुक्त बनाने की दिशा में बाल श्रम चंदौली बनाने के लिए किए गए कार्य को चर्चा करते हुए बाल श्रम रोकथाम पर विभागीय पहल को बताया और श्रम विभाग के साथ बाल श्रम उन्मूलन एवं पुनर्वासन पर कार्ययोजना चंदौली के श्रम प्रवर्तन अधिकारी द्वारा बनाया गया।कार्यक्रम में जिला प्रोबेशन अधिकारी ने बाल श्रम व बच्चों की शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए विभागीय योजनाओं पर चर्चा किया।भट्ठा संघ के अध्यक्ष श्री रतन श्रीवास्तव द्वारा ये घोषणा की चंदौली में किसी भी भट्ठे पर बाल श्रम नहीं कराया जाएगा प्रत्येक भट्ठा बाल श्रम मुक्त भट्ठा बनाएंगे।कार्यशाला में श्रम प्रवर्तन अधिकारी श्री चन्द्र प्रकाश ने कहा कि श्रम विभाग पूर्णतया प्रतिबद्ध है शीघ्र ही जनपद चन्दौली का बाल श्रम मुक्त कराने का प्रयास किया जायेगा।इसके साथ ही उन्होंने आगे हुए सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया और कार्यशाला का समापन किया।

कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सभी प्रतिभागी द्वारा बाल श्रम मुक्त चंदौली बनाने के लिए कार्ययोजना बनाई गई इस दौरान बाल कल्याण समिति से धर्मेंद्र,ताहिर,श्रम विभाग मुख्यालय कानपुर से मोहम्मद फैसल, रवि जिला बाल संरक्षण इकाई के किशन वर्मा,वन स्टॉप सेंटर से दीक्षा अग्रहरि, संस्था मानव संसाधन एवं महिला विकास संस्थान से देवेंद्र, गणेश,मनोज,जितेंद्र, नारायन, मुकेश,प्रति, संजू,गुलशन उपस्थित रहे।

पानी की आस में सूखे कोतवाली के बाहर लगे फूल-पौधे

पीडीडीयू नगर(चन्दौली), 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। मुगलसराय कोतवाली के बाहर हुए अतिक्रमण को पूर्व कोतवाल गगनराज सिंह द्वारा हटवाने के साथ मुगलसराय कोतवाली को और सुंदर दिखने हेतु मेंन गेट के बाहर सुंदर-सुंदर फूल-पौधे गैलरी बनाकर लगाए गए थे जिसकी स्थानीय लोगों ने काफी सराहना भी की ।मगर फूल पौधों की देखभाल जब तक की गई तब तक फूल-पौधे खिले रहे वहीं पूर्व कोतवाल के जाते ही फूल-पौधे की देखभाल करने वाला कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति सामने नहीं आया ना ही फूल-पौधों को पानी देने की जिम्मेदारी किसी विभाग द्वारा ली गई ।जिसके बाद आज की स्थिति में फूल-पौधे पूरी तरह से मुरझा गए हैं ।आखिरकार विभाग द्वारा ऐसी लापरवाही क्यों।

राष्ट्रीय एवं राज्यीय राजनैतिक दलों के साथ आयोजित होगा बैठक

भदोही , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। अपर जिलाधिकारी (वि०/रा०)/उप जिला निर्वाचन अधिकारी कुँवर वीरेन्द्र मौर्य द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि अर्हता तिथि 01-01-2026 के आधार पर गतिमान विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों के विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण कार्यक्रम के दृष्टिगत भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित मा० रोल प्रेक्षक/आयुक्त,विन्ध्याचल मण्डल, मीरजापुर द्वारा 02 फरवरी 2026 को अपरान्ह 03 बजे कलेक्ट्रेट सभागार, केशवपुर सरपतहां,भदोही में वर्तमान / भूतपूर्व मा०सांसद/मा० विधायकगण एवं समस्त अध्यक्ष/मंत्री मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय एवं राज्यीय राजनैतिक दलों के साथ बैठक आयोजित किया गया है। उक्त बैठक के उपरान्त मा० रोल प्रेक्षक/आयुक्त द्वारा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के कतिपय मतदेय स्थलों एवं ई०आर०ओ०/ए०ई०आर०ओ० कार्यालय का भी निरीक्षण किया जायेगा।

मत्स्य विभाग कल करेगा पंजीकरण कैम्प का आयोजन

भदोही , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद) ।प्रभारी मत्स्य विभाग अमित सिंह द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि जनपद में प्रधानमंत्री मत्स्य किसान सह-समृद्धि योजना लागू है, जिसके अन्तर्गत एनएफडीपी पोर्टल के माध्यम से जनपद भदोही में मत्स्य गतिविधियों (मत्स्य पालन, मत्स्य विपणन, मछली पकड़ना, नाव एवं जाल आदि) से जुड़े व्यक्ति को पंजीकरण कराये जाने पर मत्स्य विकास से सम्बन्धित योजनाओं के लाभ का अवसर प्राप्त होगा। प्रभारी मुख्यकार्यकारी अधिकारी मत्स्य विभाग भदोही द्वारा 31 जनवरी 2026 को रामपुर घाट बेरापुर मेंपूर्वाह्न 10 बजे से पंजीकरण कैम्प आयोजित किया जा रहा है। आयोजित कैम्प के द्वारा मत्स्य गतिविधियों से जुड़े सभी व्यक्तियों का पंजीकरण कराकर योजनाओं से लाभान्वित कराया जायेगा।

महिला व परिजनों पर हमला, जान से मारने की धमकी का आरोप

गोपीगंज, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। थाना क्षेत्र के ग्राम केदारपुर निवासी रंजना गुप्ता पत्नी आनंद गुप्ता ने गांव के ही राहुल सिंह पुत्र महेंद्र सिंह पर मारपीट व जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। पीड़िता के अनुसार 19 जनवरी 2026 की सुबह करीब 9 बजे आरोपी ने भद्दी गालियां देते हुए लाठी-डंडे से मारपीट की। बीच-बचाव करने पहुंचे ससुर और देवर को भी पीटा गया। आरोप है कि 21 जनवरी से लगातार फोन पर गाली-गलौज व जान से मारने की धमकी दी जा रही है, जिसकी रिकॉर्डिंग पीड़िता के पास उपलब्ध है। पुलिस ने तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही में जुटी।

मारपीट व धमकी का मामला, पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर दर्ज हुआ मुकदमा

गोपीगंज, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। थाना क्षेत्र के ग्राम सभा कशिदहा, पोस्ट नथईपुर की निवासी आशा देवी पत्नी सुभाष ने अपने जेठ श्यामलाल पुत्र किसुन यादव पर गंभीर आरोप लगाए हैं। पीड़िता के अनुसार दिनांक 24 जनवरी 2026 को घर की जमीन के बंटवारे को लेकर विवाद हुआ, जिसमें आरोपित ने जबरन निर्माण कार्य शुरू कर दिया ।पीड़िता के विरोध करने पर आरोपित द्वारा गाली-गलौज करते हुए ईंट और लाठी से मारपीट की गई। साथ ही यह कहते हुए जान से मारने की धमकी दी गई कि उक्त जमीन पर उनका कोई अधिकार नहीं है और विरोध करने पर उन्हें व उनके पति को मार दिया जाएगा। घटना के बाद पीड़िता नथईपुर पुलिस चौकी पहुंची, जहां वह अशिक्षित होने के कारण सादे कागज पर हस्ताक्षर कराए जाने का आरोप लगाती है। पीड़िता का कहना है कि पहले उसे चौकी से डांटकर भगा दिया गया, जिससे वह मानसिक रूप से परेशान रही। मामला पुलिस अधीक्षक ज्ञानपुर भदोही के संज्ञान में आने के बाद उनके निर्देश पर संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है और दोषियों के विरुद्ध विधिक कार्रवाई की जाएगी।

गोपीगंज में भूमि विकास बैंक चुनाव को लेकर एफआईआर दर्ज

गोपीगंज, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद) ।भूमि विकास बैंक शाखा ज्ञानपुर, भदोही के शाखा प्रतिनिधि पद के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की ओर से अधिकृत प्रत्याशी विजय बहादुर सिंह हैं। उनका चुनाव चिन्ह वैलेट पेपर पर दूसरे नंबर पर कार है। इसी बीच यह जानकारी सामने आई है कि विरोधी प्रत्याशी अशोक कुमार बिन्द अपने पोस्टर एवं हैंडबिल में स्वयं को भाजपा प्रत्याशी बताकर मतदाताओं को गुमराह कर रहा है। इस कारण मतदाताओं में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो रही है। मामले को गंभीरता से लेते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक मिश्रा की तहरीर पर पुलिस ने संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है तथा आवश्यक विधिक कार्रवाई की जा रही है।

अवैध खनन को लेकर विवाद में ट्रैक्टर मालिक पर जानलेवा हमला, मुकदमा दर्ज

गोपीगंज, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद) ।थाना क्षेत्र अंतर्गत नरउर खमरिया निवासी शिवचन्द यादव पर अवैध खनन के विवाद को लेकर दबंगों ने लाठी-डंडे व ईंट से हमला कर दिया। घटना 23 जनवरी 2026 को दोपहर करीब 12 बजे कनक ईंट भट्ठे के पास की बताई जा रही है। हमले में शिवचन्द यादव के सिर व पैर में गंभीर चोटें आईं। पीड़ित का आरोप है कि खनन अधिकारी को सूचना देने के शक में विपक्षियों ने जान से मारने की धमकी भी दी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नपा कर्मी का निधन दी गई श्रद्धांजलि

गोपीगंज, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद) ।नगर पालिका परिषद गोपीगंज में चपरासी पद पर कार्यरत सुरेंद्र कुमार का निधन हो गया, उनके असामयिक निधन पर नगर पालिका कार्यालय में आयोजित शोक सभा में दिवंगत आत्मा की शांति और परिजनो को सहन शक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की गई,शोक सभा में नगर पालिका परिषद अध्यक्ष अध्यक्ष जितेंद्र गुप्ता, अधिशासी अधिकारी राम बचन यादव, वरिष्ठ लिपिक विष्णु प्रसाद सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

पुलिस की सेवाओं व शासन द्वारा चलाये जा रहें विभिन्न योजनाओं के बारे में जागरूक किया जा रहा है

भदोही , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। मिशन शक्ति अभियान फेज 5.0 के तहत पुलिस अधीक्षक जनपद भदोही श्री अभिमन्यु मांगलिक के निर्देशन में एवं अपर पुलिस अधीक्षक श्री शुभम अग्रवाल के पर्यवेक्षण में जनपद के समस्त थानों की एंटी रोमियो/ महिला मिशन शक्ति टीमों द्वारा महिलाओं व बालिकाओं के बीच व्यापक जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान निम्न थाना क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित किए गए– जागरुक बनें, सुरक्षित रहें।1090 - महिला पावर लाइन (महिलाओं के लिए हेल्पलाइन) 181 - महिला हेल्पलाइन (महिलाओं के लिए आपातकालीन सहायता) की जानकारी दी।

व्यापारी बन्धुओं, उद्यमियों के साथ की गई मासिक गोष्ठी

पीडीडीयू नगर(चन्दौली), 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। पुलिस अधीक्षक चन्दौली आदित्य लांग्हे के निर्देशन में अनन्त चन्द्रशेखर अपर पुलिस अधीक्षक के द्वारा दिन गुरुवार को पुलिस लाइन्स चन्दौली स्थित सभागार कक्ष में व्यापारी बन्धुओं/उद्यमियों/सराफा व्यवसाइयों के साथ मासिक गोष्ठी की गई। व्यापारी बन्धुओं के समस्याओं व शिकायतों को सुन उनके त्वरित निस्तारण हेतु सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये ।गोष्ठी के दौरान अनन्त चन्द्रशेखर अपर पुलिस अधीक्षक ने बताया की व्यापारी बन्धुओं को पुलिस की तरफ से हर समय हर

सम्भव सहायता व सुरक्षा का दिया गया भरोसा तथा यह भी कहा गया कि कोई भी किसी भी समय किसी भी प्रकार की समस्या/शिकायत पुलिस से बता सकता है जिसका गुणवत्तापूर्ण समाधान किया जाएगा ।व्यापार बंधुओं द्वारा उठायी जाने वाली समस्याओं से अवगत होने के बाद उसके निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए ।बैठक में व्यापारियों द्वारा मुख्यतःउठाए गये मुद्दों में नगर निगम, यातायात पुलिस, पुलिस ,विद्युत विभाग एवं नगर पालिका से संबंधित थे ।व्यापारियों द्वारा रेहडी को पटरी पर लगाए जाने से मुख्य बाजारों में अतिक्रमण की समस्या को उठाया गया ।इसके अतिरिक्त महोदय द्वारा व्यापारी बन्धुओं से अपने-अपने दुकानों/प्रतिष्ठानों पर पुलिस महानिदेशक महोदय द्वारा चलाए जा रहे ₹आपरेशन त्रिनेत्र₹के तहत सी0सी0टी0वी0 कैमरे लगवाने की अपील की गई। समस्त थाना क्षेत्र के व्यापारियों,मनी कलेक्शन एजेंट व सम्भ्रान्त व्यक्तियों के साथ की गयी बैठक।

सुरियावां पुलिस ने एल्युमिनियम तार चोरी करने वाले अभियुक्त को किया गिरफ्तार

भदोही , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। थाना सुरियावां पर आवेदक अवर अभियन्ता शैलेन्द्र कुमार मौर्य पुत्र रामनरेश मौर्या 33/11 केवी उपकेन्द्र सुरियावां द्वारा सूचित किया गया कि दिनांक 25-01-2026 को 33/11 के0वी0 उपकेन्द्र सुरियावां के अन्तगत ग्राम कौड़र (कुवरपुर) में 12 स्पैन की ल्ळ लाईन (तार) अज्ञात लोगों द्वारा चोरी कर लिया गया। प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना सुरियावां पर मु0अ0सं0-24/2026 धारा 303 (2) इठर का अभियोग पंजीकृत करते हुए विधिक कार्यवाही प्रचलित की गई। विवेचनात्मक कार्यवाही के क्रम में फूलनदेवी तिराहा पर सीसीटीवी फुटेज के माध्यम से घटना में प्रयुक्त वाहन (छोटा हाथी) वाहन मालिक सुधीर सिंह पुत्र शिवशंकर निवासी पचवल थाना रामपुर जनपद जौनपुर से पंजीकृत पाया गया। अभिमन्यु मांगलिक,पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा जनपद में चुस्त दुरुस्त कानून व्यवस्था के दृष्टिगत चोरी की घटनाओं के शीघ्र अनावरण व पंजीकृत अभियोग से सम्बंधित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु निर्देश के क्रम में श्री शुभम अग्रवाल, अपर पुलिस अधीक्षक भदोही के पर्यवेक्षण में आज दिनांक 29.01.2026 को थाना सुरियावां पुलिस टीम द्वारा देखभाल क्षेत्र/रात्रि चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर धौराहरा से विवेकानन्द चौराहे पर जाने वाले सड़क मार्ग से वांछित अभियुक्त सुधीर सिंह उर्फ जानू पुत्र शिवशंकर सिंह एवं संदीप गुप्ता उर्फ मुन्ना पुत्र संतोष गुप्ता को गिरफ्तार किया।

बॉक्सिंग प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

पीडीडीयू नगर(चन्दौली), 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिला ओलम्पिक संघ के तत्वाधान में चंदौली जिला एमेच्योर बॉक्सिंग एसोसिएशन के द्वारा अलीनगर सकलडीहा मोड़ स्थित ज्योति कॉन्वेंट स्कूल में बॉक्सिंग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें ज्योति कॉन्वेंट स्कूल,प्रयाग इंटरनेशनल स्कूल, सनबीम स्कूल,सेंट्रल पब्लिक स्कूल,नन्द बॉक्सिंग एकेडमी,नगर पालिका,केवी इत्यादि विद्यालय से 68 खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। चंदौली एमेच्योर बॉक्सिंग एसोसिएशन के जिला महासचिव व जिला ओलम्पिक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुमार नन्दजी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में आरपीएफ पीडीडीयू प्रभारी निरीक्षक प्रदीप कुमार रावत तथा विशिष्ट अतिथियों में जिला बॉक्सिंग संघ के जिला अध्यक्ष विनता अग्रहरी,चंदौली शूटिंगबॉल संघ जिला अध्यक्ष सतीश जिंदल,ज्योति कॉन्वेंट स्कूल का चेयरमैन कृष्ण मोहन गुप्ता,जिला ओलंपिक संघ उपाध्यक्ष शालिनी सिंह,इत्यादि ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलित करने के बाद खिलाड़ियों का हाथ

मिलाकर मैच शुरू कराया ।रेफरी के रूप में प्रताप नारायण चौबे,शालिनी जायसवाल रहे ।इस दौरान विशिष्ट अत्यधिक रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर प्रचारक अंकितजी,नगर सहकारवा रोहित यादव,विद्यालय के प्रिंसिपल अनिल मौर्य,वाइस प्रिंसिपल प्रकाश मंडल,तापसी मंडल ने भी विभिन्न फाइट में खिलाड़ियों का हाथ मिलवाकर अच्छे खेल के लिए प्रेरित किया ।उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों में प्रियांश,खुशी,रुद्र, ऋतिका, कुसुम, दीपिका,कार्तिक, आदिति,रूजदा, नूरहसन,इशू, ने गोल्ड मेडल जीते तथा तान्या,काव्या, अनन्या,अंजली,सूर्यांश,प्रीतम,स्वाति,सृष्टि ने सिल्वर मेडल एवं अनुराधा,आरोही,अमृत,अलका,आयुष, अनुजा,शिवा, संस्कृति,अश्विन,आदर्श ने अपने अपने भार वर्ग में ब्रॉन्ज मेडल जीते।

जिला उद्योग बन्धु एवं जिला निर्यात प्रोत्साहन समिति की बैठक संपन्न

भदोही , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिलाधिकारी शैलेष कुमार के मार्गदर्शन में मुख्य विकास अधिकारी बाल गोविंद शुक्ल की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला उद्योग बन्धु एवं जिला निर्यात प्रोत्साहन समिति एवं उद्योग व्यापार मण्डल के व्यापारियों के साथ बैठक आहुत की गयी ।बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी द्वारा उपस्थित उद्यमियों, व्यापारियों से कहा गया कि जिले में व्यापारियों, उद्यमियों निवेशको से संबंधित मामलों का निस्तारण समयबद्ध तरीके से निर्धारित समयावधि में किया जायेगा। व्यापारियों/उद्यमियों के प्रति सहयोगात्मक रूख अपनाया जाये और उद्यमियों के लम्बित प्रकरणों का नियमानुसार प्राथमिकता पर निस्तारण समय से किया जाये, जिससे कि जनपद में अधिक से अधिक रोजगार के साधन सृजित हों, उद्यमी अपने उद्योग को बेहतर ढंग से संचालित कर सके। साथ ही खाद्यय विभाग, विद्युत विभाग, प्रदूषण विभाग, व्यापार कर विभाग एवं अन्य विभाग के उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिया कि व्यापारियों की समस्याओं को प्राथमिकता से निस्तारित कराये। इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही क्षम्य नही होगी।

बैठक में जिला पंचायत भदोही द्वारा बुनकरों को धारा 133 के अन्तर्गत लाइसेंस के लिए प्रेषित नोटिस के संबंध में, बीडा भदोही द्वारा नये उद्योग स्थापित करने हेतु तथा नॉन जेड ए जमीनों पर उद्योग लगाने हेतु नक्शा पास कराने के लिए धारा 80 की मांग को हटाये जाने के संबंध में एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी जीबीसी 5 के अन्तर्गत जनपद भदोही को प्राप्त 700 करोड़ के निवेश प्रस्ताव के लक्ष्य के पूर्ति के संबंध में विस्तार से बल दिया गया। मुख्य विकास अधिकारी ने समीक्षा के दौरान प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजनान्तर्गत विकास खण्डों में

लम्बित होने पर सम्बन्धित खण्ड विकास अधिकारियों को कड़ी हिदायत दी कि जॉच कर एक सप्ताह में रिपोर्ट प्रेषित सम्बन्धित विभाग को सुनिश्चित कराये। सीएम युवा उद्यमी विकास अभियान प्रगति समीक्षा के दौरान सीडीओ ने एलडीएम को निर्देश दिया कि जिन बैंको की प्रगति खराब है, उन बैंको के नोडल अधिकारी अगली बैठक में ससमय उपस्थित रहने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जिन बैंको की प्रगति खराब है उनकी प्रतिदिन मॉनीटरिंग कर रिर्पोट उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। सीडीओ ने लीड बैंक सहित सभी बैंको के अधिकारियों को सख्त निर्देशित किया कि लक्ष्य के सापेक्ष सीएम युवा अभियान को अधिक से अधिक स्वीकृत करें। बैठक में प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना, जनपद भदोही में औद्योगिक निवेश को बढ़ावा देने हेतु लैंड बैंक डाटा उपलब्ध कराने, प्लेज पार्क विकसित करने, सिटी आफ एक्सपोर्ट एक्सलेन्सी, डिस्ट्रिक्ट एक्सपोर्ट हब के क्रियान्वयन पर बल दिया। बैठक में पीएम सूर्यघर मुक्त बिजली योजना के अन्तर्गत अधिक से अधिक लाभार्थियों को संस्तृप्त करने पर बल दिया गया।

ऑपरेशन कन्विक्शन के तहत दोषी अभियुक्तों के विरुद्ध चलाया जा रहा विशेष अभियान

भदोही , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जनपद का टॉप 10 अभियुक्त रामचन्दर मौर्या उर्फ नेता पुत्र स्व0 दयाशंकर मौर्या निवासी कोल्हुआ पाण्डेयपुर थाना सुरियावां जनपद भदोही का एक संगठित अपराधिक गिरोह है जिसका सरगना रामचंदर मौर्य उर्फ नेता उपरोक्त हैं। इसके गिरोह के सक्रिय सदस्य रेहान उर्फ मुन्ना पुत्र बल्ले उर्फ शौकत अली निवासी जगीगंज थाना गोपीगंज जनपद भदोही, मो० जिशान पुत्र मो० तौकीर निवासी वार्ड नंबर 8 नहर के पास कस्बा घोसिया थाना औराई जनपद भदोही, रामचंद मौर्या पुत्र गुनराज मौर्या निवासी कटेवना थाना ज्ञानपुर जनपद भदोही तथा अनिस बिंद पुत्र मुकेश कुमार बिंद निवासी बड़ा कोयलरा थाना गोपीगज जनपद भदोही है। इस गिरोह की सक्रियता अंतर्जनपदीय स्तर पर है, इस गिरोह द्वारा प्रदेश के भिन्न-भिन्न जनपदों में शराब की दुकानों का ताला तोड़कर शराब व नगद रुपए चोरी कर लिया जाता है। उ०प्र० गिरोह बंद एवं समाज विरोधी क्रिया कलाप निवारण अधिनियम थाना गोपीगंज, जनपद-भदोही पंजीकृत कर मा0 न्यायालय में विचारण हेतु प्रेषित किया गया ।पुलिस महानिदेशक, उ0प्र0 लखनऊ के आदेश के क्रम में एवं श्री अभिमन्यु मांगलिक, पुलिस अधीक्षक भदोही के निर्देशन में ₹ऑपरेशन कन्विक्शन" के तहत चिन्हित अपराधों में दोषी अभियुक्तों के विरुद्ध मा0 न्यायालय द्वारा अधिकतम व त्वरित दंडात्मक कार्यवाही हेतु जनपदीय पुलिस द्वारा विशेष अभियान चलाया जा रहा है। पंजीकृत अभियोग में स्थानीय पुलिस, मॉनिटरिंग सेल व विशेष लोक अभियोजक श्री विजय कुमार मिश्रा की प्रभावी पैरवी के फलस्वरुप आज दिनांक 29.01.2026 को मा0 न्यायाधीश लोकेश कुमार मिश्रा, अपर सत्र न्यायाधीश गैंगस्टर अधिनियम ज्ञानपुर भदोही द्वारा उपरोक्त अभियोग में दोषसिद्ध 1.रामचन्दर मौर्या उर्फ नेता पुत्र दयाशंकर मौर्या निवासी कोल्हुआ पाण्डेयपुर थाना सुरियावां जनपद भदोही 2.मो0 जिशान पुत्र मो0 तौकीर निवासी वार्ड नंबर 8 नहर के पास कस्बा घोसिया थाना औराई जनपद भदोही 3.रेहान उर्फ मुन्ना पुत्र बल्ले उर्फ शौकत निवासी जंगीगंज थाना गोपीगंज जनपद भदोही को उ०प्र० गिरोह बंद एवं समाज विरोधी क्रिया कलाप निवारण अधिनियम के अंतर्गत दण्डनीय अपराध के लिए 03 वर्ष 24 दिन का कठोर कारावास की सजा दी गयी।

जिला वृक्षारोपण,पर्यावरण, गंगा समिति की बैठक सीडीओ की अध्यक्षता में सम्पन्न

समीक्षा बैठक में पर्यावरण संरक्षण एवं गंगा स्वच्छता पर जोर

भदोही , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिलाधिकारी शैलेष कुमार के मार्गदर्शन में मुख्य विकास अधिकारी बाल गोबिन्द शुक्ल की अध्यक्षता में जिला वृक्षारोपण समिति व गंगा समिति, पर्यावरण के कार्यों की प्रगति समीक्षा बैठक कलेक्टेज्ट सभागार में सम्पन्न हुई। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि जब पर्यावरण सुरक्षित होगा, तभी हम लोग भी सुरक्षित होंगे, जो पेड़ लगाये गये है उन पेड़ों का बचाव का प्रयास हम करेंगे संकल्प लें। रोपित किए गए पौधों के रखरखाव एवं अन्य बिंदुओं पर बल दिया गया ।जिला पर्यावरण समिति के अंतर्गत जनपद में उत्पन्न हो रहे गीला कचरा के उपचार हेतु उपलब्ध वेट कंपोस्टिंग पिट की कार्यात्मक स्थिति की समीक्षा की गई। जनपद में उत्पन्न हो रहे प्लास्टिक अपशिष्टों को रिसायकल एवं प्रबन्धन (सड़क निर्माण, ऊर्जा निर्माण इत्यादि में) हेतु की जा रही कार्यवाही की गयी। समस्त नगर पालिका एवं नगर पंचायतों में

ठोस अपशिष्ट ट्रांसफर स्टेशन, डम्पिंग साईट क्षमता एवं कार्यात्मक स्थिति की अद्यतन रिपोर्ट पर बल दिया गया। जनपद में उत्पन्न हो रहे कन्स्ट्रक्शन एण्ड डिमालिशन वेस्ट के उचित निस्तारण एवं प्रबन्धन हेतु की जा रही कार्यवाही की गयी। जनपद में उत्पन्न हो रहे ठोस अपशिष्ट के उपचार एवं वैज्ञानिक प्रबन्धन (वेस्ट टू कम्पोस्ट एवं वेस्ट टू एनर्जी) हेतु की जा रही कार्यवाही की समीक्षा की गयी। जनपद में ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन अधिनियम 2016 के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु समस्त नगर पालिका एवं नगर पंचायतों के फण्टलाईन स्टाफ के कार्यात्मक क्षमता की अभिवृद्धि हेतु किये जा रहे कार्यक्रमों पर जोर दिया गया। जनपद में प्रवाहित हो रहे नालों की टैपिंग हेतु की जा रही कार्यवाही की समीक्षा की गयी।

जिला गंगा समिति के अन्तर्गत गंगा किनारे स्थित शव दाह गृह का संचालन विद्युत से किया जाय जिससे नदियों को प्रदूषित होने से बचाया जा सकें। गंगा ग्रामों में किसानो को जैविक खेती हेतु प्रेरित किया जाय तथा रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से होने वाले दुष्प्रभाव के प्रति आम जनमानस में जन जागरूकता हेतु अभियान चलाया जाय। जनपद में संचालित समस्त डाईंग प्लान्ट से निसृत हो रहें तरल अपशिष्ट की गुणवत्ता की जांच की जाय साथ ही गुणवत्ता मानक अनुरूप न होने पर दण्डात्मक कार्यवाही की जायें। मुख्य विकास अधिकारी बाल गोबिन्द शुक्ल ने कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक पे बढ़ते खतरे के जनपदवासियों को जागरूक करते हुए सीडीओ ने जनपदवासियों से कपड़े वाले थैले या बायोडिग्रेबल थैले में समान लेने हेतु प्रेरित किया।

इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक शुभम अग्रवाल,प्रभागीय वनाधिकारी विवेक यादव एवं सम्बन्धित विभागों के अधिकारीगण, संभ्रांत नागरिकगण उपस्थित रहे।

मोरवा विस्थापन की विसंगतियां दूर होंगी, एक सप्ताह में समाधान का कलेक्टर ने दिया आश्वासन

सिंगरौली, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद) मोरवा क्षेत्र में चल रहे विस्थापन को लेकर लंबे समय से उठ रही समस्याओं और विसंगतियों के समाधान की दिशा में एक अहम पहल सामने आई है। मंगलवार को मोरवा विस्थापन संघर्ष समिति के प्रतिनिधियों ने जिला कलेक्टर गौरव बैनल से मुलाकात कर विस्थापित परिवारों की समस्याओं से उन्हें अवगत कराया। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने कलेक्टर को ज्ञापन सौंपते हुए लार (भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता का अधिकार) अधिनियम 2013 तथा कोल इंडिया लिमिटेड की आर एंड आर (रिहैबिलिटेशन एंड रिसेटलमेंट) पॉलिसी 2012 के तहत सभी विस्थापित परिवारों को समान मुआवजा और पुनर्वास लाभ देने की मांग की।

संघर्ष समिति के सदस्यों ने कलेक्टर को बताया कि वर्तमान पुनर्वास योजना में भू-अधिग्रहित और गैर-भू-अधिग्रहित परिवारों के बीच भारी असमानता है। मुआवजा राशि के साथ-साथ आवासीय प्लॉट के आकार में भी बड़ा अंतर रखा गया है, जिससे विस्थापित परिवार स्वयं को उपेक्षित और ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। प्रतिनिधियों का कहना था कि एक ही परियोजना से प्रभावित होने के बावजूद अलग-अलग श्रेणियों में बांटकर लाभ देना सामाजिक और कानूनी दोनों दृष्टि से अनुचित है।

प्रतिनिधिमंडल ने यह भी जानकारी दी कि इस संबंध में 7 जनवरी 2026 को प्रशासन को विस्तृत आवेदन सौंपा गया था, लेकिन अब तक इस पर कोई ठोस निर्णय सामने नहीं आया है। इससे विस्थापित परिवारों में नाराजगी और असंतोष लगातार बढ़ रहा है।कलेक्टर गौरव बैनल ने प्रतिनिधियों की बातों को गंभीरता से सुना और उन्हें आश्वस्त किया कि मोरवा विस्थापन से जुड़ी सभी विसंगतियों की गहन समीक्षा की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रशासन विस्थापितों की समस्याओं के प्रति संवेदनशील है और एक सप्ताह के भीतर समाधान की दिशा में आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। कलेक्टर ने यह भी स्पष्ट किया कि विस्थापितों के हितों की अनदेखी नहीं होने दी जाएगी और कानून के दायरे में रहते हुए न्यायसंगत निर्णय लिया जाएगा।बैठक के बाद विस्थापन संघर्ष समिति के सदस्यों ने उम्मीद जताई कि कलेक्टर के हस्तक्षेप से मोरवा विस्थापन से जुड़ी वर्षों पुरानी समस्याओं का शीघ्र निराकरण होगा और सभी प्रभावित परिवारों को उनका हक मिल सकेगा। अब एक सप्ताह के भीतर प्रशासन की कार्रवाई पर विस्थापितों और पूरे जिले की नजरें टिकी हुई हैं।

जयनगर बस्ती में बिजली व्यवस्था सुदृढ़ करने की दिशा में बड़ी पहल

सिंगरौली, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। वार्ड क्रमांक 36 अंतर्गत जुवाड़ी एवं जयनगर बस्ती में लंबे समय से चली आ रही बिजली संबंधी गंभीर समस्याओं के समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाए गए हैं। क्षेत्र में कई स्थानों पर बिजली का हाई टेंशन तार काफी समय से जर्जर अवस्था में घरों के ऊपर लटक रहा था, जिससे कभी भी बड़ा हादसा होने की आशंका बनी रहती थी। साथ ही सड़क पर पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था न होने के कारण रात्रि के समय अंधेरा रहता था, जिससे आम नागरिकों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ता था।स्थानीय लोगों ने यह भी शिकायत की थी कि जुवाड़ी बस्ती में बिजली का लोड अधिक होने के कारण बार-बार फॉल्ट की स्थिति बनती थी और तार जल जाने से बिजली आपूर्ति बाधित हो जाती थी। इन समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए पार्षद प्रेम सागर मिश्रा के प्रयासों से बिजली विभाग के अधिकारियों एवं तकनीकी टीम के साथ संयुक्त रूप से क्षेत्र का निरीक्षण कराया गया।निरीक्षण के दौरान आवश्यकताओं का आकलन कर जर्जर तारों को बदलने, नए बिजली खंभे लगाने तथा अतिरिक्त लोड को संतुलित करने के लिए नया ट्रांसफार्मर स्थापित करने का कार्य प्रारंभ कराया गया है। पार्षद प्रेम सागर मिश्रा ने बताया कि यह कार्य शीघ्र ही पूर्ण किया जाएगा, जिससे आने वाले दिनों में क्षेत्रवासियों को बेहतर प्रकाश व्यवस्था मिलेगी और बिजली कटौती व फॉल्ट की समस्या से राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस कार्य के पूरा होने से न केवल सुरक्षा व्यवस्था मजबूत होगी, बल्कि नागरिकों को निर्बाध एवं सुरक्षित बिजली आपूर्ति सुनिश्चित होगी। क्षेत्रवासियों ने भी इस पहल का स्वागत करते हुए पार्षद और बिजली विभाग के प्रति आभार व्यक्त किया है।

परीक्षा के दौरान पकड़े गए तीन परीक्षार्थी

गाजीपुर, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में गुरुवार को वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल जौनपुर की बीएड प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा अपराह्न 2:00 बजे से 5:00 के मध्य संपन्न हुई। महाविद्यालय को बी एड परीक्षा हेतु के कुल आठ शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों का परीक्षा केंद्र बनाया गया है। परीक्षा के दौरान कुल पंजीकृत 711 विद्यार्थी में से 684 परीक्षार्थी उपपस्थित तथा 25 अनुपस्थित रहे। परीक्षा के दौरान प्राचार्य/केंद्र व्यवस्थापक प्रोफेसर डॉ अनीता कुमारी के निर्देशन में महाविद्यालय की मुख्य अनुशासक एवं उड़ाका दल की प्रभारी डॉ सारिका सिंह के नेतृत्व में परीक्षा समिति के सदस्यों ने सघन जांच करते हुए पुनः 3 परीक्षार्थियों को अनुचित साधन का उपयोग करते हुए पकड़ा तथा वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के निदेर्शानुसार उनके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की संस्तुति की गई। इसे मिलाकर अब तक कुल 15 परीक्षार्थी बीएड परीक्षा में अनुचित साधन का प्रयोग करते हुए पकड़े गए हैं। प्राचार्य प्रोफेसर अनीता कुमारी के अनुसार महाविद्यालयी परीक्षा समिति विश्वविद्यालय के निदेर्शानुसार नकल विहीन परीक्षा कराने के लिए कृत संकल्पित है।

30 एवं 31 जनवरी को आयोजित विशेष अभियान के दौरान फॉर्म-6 भरकर मतदाता सूची में अपना नाम अवश्य दर्ज कराएं

सोनभद्र, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिला निर्वाचन अधिकारी बी0एन0 सिंह ने जनपद के समस्त पात्र नागरिकों से अपील की है कि जिनका नाम अभी तक मतदाता सूची में दर्ज नहीं हो पाया है, वे 30 एवं 31 जनवरी को आयोजित विशेष अभियान के दौरान फॉर्म-6 भरकर मतदाता सूची में अपना नाम अवश्य दर्ज कराएं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि यह अभियान विशेष रूप से उन नागरिकों के लिए संचालित किया जा रहा है, जो किसी कारणवश अब तक मतदाता सूची में नाम जुड़वाने से वंचित रह गए हैं। अभियान के अंतर्गत सभी ग्राम पंचायतों, नगर निकायों एवं निर्धारित मतदान केंद्रों पर आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र को सशक्त बनाने में मतदाता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए सभी पात्र नागरिक इस अवसर का लाभ उठाएं और समय रहते अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज कराकर अपने मताधिकार का प्रयोग सुनिश्चित करें। अभियान की सतत निगरानी की जा रही है तथा लापरवाही किसी भी स्तर पर स्वीकार नहीं की जाएगी।

निर्विवाद वरासत का निस्तारण करें

जौनपुर , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चंद्र की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित जनसुनवाई कक्ष में में चकबंदी विभाग की समीक्षा बैठक हुई। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि लंबित एवं पुराने वादों का शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। निर्देशित किया कि निर्विवाद वरासत संबंधी प्रकरणों का निस्तारण संबंधित एसीओ द्वारा समयबद्ध तरीके से किया जाए। मुख्य राजस्व अधिकारी अजय अंबष्ट, एसओसी शैलेंद्र, डीडीसी रामकिशोर पांडेय सहित चकबंदी विभाग के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

ओटीडी में अच्छी नहीं थी रिपोर्ट

जौनपुर , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चंद्र की अध्यक्षता में जिला ओटीडी सेल की त्रैमासिक समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में हुई। मुख्य रूप से कृषि, पशुधन, वानिकी, मत्स्य,निर्माण, विनिर्माण संबंधित विद्युत गैस तथा जल संपूर्ति निर्माण व्यापार पैटर्न होटल एवं परिवहन वित्तीय सेवाएं आदि से संबंधित विभाग की चर्चा की गई जिस विभाग की त्रैमासिक प्रोग्रेस रिपोर्ट अच्छी नहीं थी उनको निर्देशित किया गया कि वे अपनी प्रमाण प्रोग्रेस रिपोर्ट अच्छी से बढाने का प्रयास करें। जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी डॉ0 अरुण यादव जिला उद्यान अधिकारी सीमा सिंह राणा, डीएमजीआईसी अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

जरुरतमंद को अतुल तिवारी ने रक्तदान किया

जौनपुर , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। आम आदमी पार्टी के जिला मीडिया प्रभारी एवं अखिल भारतीय हिंदू सेवा दल उ.प्र. के प्रदेश संगठन मंत्री अतुल कुमार को सूचना मिली कि एक निजी अस्पताल में भर्ती मरीज को रक्त की सख्त जरूरत है, रात 10 बजे वे तत्काल जिला अस्पताल सदर पहुँचे और जरूरतमंद के लिए स्वतः रक्तदान किया। समाजसेवी ने ना केवल रक्तदान किया, यह आश्वासन दिया कि अगर और भी ब्लड की जरूरत पड़ेगी तो उपलब्ध कराया जाएगा। अतुल तिवारी ने कहा कि, दीन-दुखियों की सेवा का संस्कार मुझे मेरे परिवार से मिला है। किसी का जीवन बचाना ही सबसे बडा धर्म है।

नहीं रहे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मोतीलाल

जौनपुर , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)।नगर पंचायत बदलापुर में स्थित समाजसेवी व कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मोतीलाल गुप्ता नहीं रहे, वे आजीवन कांग्रेस में रहकर अपना एक चेहरा बनाए रखें । उन्होंने कभी भी पार्टी में दल बदल का काम नहीं किया, और पार्टी को आगे बढने का काम हमेशा किया, जिन्होंने आज अपने शरीर को छोडकर पंचतत्व में विलिन हो गए।जिनको क्षेत्र के लोगो द्वारा बार-बार नमन किया जा रहा है, मौके पर रामचंद्र मिश्रा, कमलाकांत तिवारी चंद्रशेखर व कांग्रेस के तमाम लोग श्रद्धांजलि अर्पित किया।

एसआईआर को लेकर प्रेक्षक ने किया औचक निरीक्षण

जौनपुर , 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। सिरकोनी विकास खण्ड मुख्यालय पर गुरुवार को संयुक्त सचिव युवा एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार ध्विशेष प्रेक्षक कुणाल ने एसआईआर के चल रहे कार्यों का औचक निरीक्षण किया।इस दौरान जिलाधिकारी दिनेश चंद्र भी मौजूद रहे। उन्होंने एसआईआर को लेकर अहम जानकारियां लिया।उन्होंने खण्ड विकास अधिकारी नीरज जायसवाल से ब्लॉक में 2003 का डाक्यूमेंट नही देने तथा नही देने वाले लोगो की जानकारी लिया।खण्ड विकास अधिकारी ने उन सभी मतदाताओं की जानकारी दिया।उसके बाद प्रेक्षक ने ब्लॉक में नोटिस जारी होने के बाद ब्लॉक पर अपने दस्तावेजों के साथ आये लोगों से भी पूछताछ किया।उन्हें बताया कि जिन लोगों की मैपिंग नही हुई है।उन्हें नोटिस मिला है।वह लोग 2003 के वैद्य दस्तावेज के साथ आकर अपने मतदाता सूची को सही करवा लें। बीडीओ सहित पांचों ईआरओ एहतेशामूल हक,सुनील कुमार गुप्ता,ऋत्विक श्रीवास्तव, अंशुल त्रिपाठी को आवश्यक निर्देश दिया।

देवसर विधानसभा के ग्राम पंचायत सखौहा में मनरेगा बचाओ संग्राम कार्य क्रम हुआ संपन्न

सिंगरौली, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष जीतु पटवारी जी के आदेशानुसार एवं सिंगरौली ग्रामीण के जिलाध्यक्ष आदरणीया श्रीमती सरस्वती सिंह जी के निदेर्शानुसार मनरेगा प्रभारी ब्लाक कांग्रेस कमेटी खुटार अखिलेश कुमार पाण्डेय के सतत निगरानी में एवं खुटार ब्लाक अन्तर्गत ग्राम पंचायत सखौहा में राजू शाह के आयोजन में मनरेगा बचाओ संग्राम अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ महात्मा गांधी जी के प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर तथा उनके सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया तथा कांग्रेस के बरिष्ठ नेता पूर्व प्रदेश सचिव अमित द्विवेदी जी के मुख्य आतिथ्य में तथा पारसनाथ प्रजापति की अध्यक्षता मे मनरेगा बचाओ संग्राम कार्यक्रम संपन्न हुआ।तथा मुख्य अतिथि अमित द्विवेदी ने अपने उद्बोधन मे कहा कि बीजेपी सरकार मनरेगा का नाम बदलकर जनता को गुमराह कर रही है तथा जनता को इस योजना से कोई लाभ नही मिल पा रहा है। तथा मनरेगा के प्रभारी श्री अखिलेश पाण्डेय जी ने अपने उद्बोधन मे जनता को संबोधित करते हुए मनरेगा के संबंध मे विस्तार से बताया तथा गांव मे रहने वाले गरीब आम लोगो को कोई इखढ सरकार लाभ मिलने का कोई दूर दूर तक उम्मीद नही है।

उक्त अवसर पर कांग्रेस के पूर्व प्रदेश सचिव श्री अमित द्विवेदी मुख्य आतिथि, अखिलेश कुमार पाण्डेय (मनरेगा प्रभारी) ब्लाक कांग्रेस कमेटी खुटार,अध्यक्षता कर रहे पारसनाथ प्रजापति (जनपद सदस्य),विशिष्ट अतिथि के रूप में दयानिधि दुबे, श्यामपति कुशवाहा पूर्व सरपंच, दिलीप कुमार शाह सरपंच सखौहा, अरविंद जायसवाल इछअ सखोहा, राजू शाह (आयोजक),चंदा शाह, विजय सिंह तथा सैकड़ो की संख्या में देवतुल्य ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

लटियां महोत्सव मे भाग लेने के लिए 02 फरवरी को जमानियां पहुंचे -गीता मौर्या

देवकली(गाजीपुर), 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। सम्राट अशोक क्लब के तत्वाधान मे आगामी 02 फरवरी 26 को 30 वीं धम्म लटिया महोत्सव सम्राट अशोक स्तम्भ जमानियां परिसर मे आयोजित किया गया है।जिसमें नेपाल,थाइलैण्ड सहित देश विदेश के सैकडों दार्शनिक,इतिहास विद भाग लेगे।महोत्सव मे र्अतराष्ट्रीय संबधों को मधुर बनाने मे तथागत बुध्द एवं सम्राट अशोक महान के विचारों की प्रासंगितार्र विषय पर परिचर्चा आयोजित है।लटिया महोत्सव को सफल बनाने के लिए सम्राट अशोक क्लब महिला विंग के संयोजक गीता मौर्या ने देवकली,सैदपुर,सादात,करण्डा व सदर ब्लाक के दर्जनों गावों मे जनसम्पर्क कर 02 फरवरी को लटियां महोत्सव मे भाग लेने के लिए न्योता दिया।जन सम्पर्क के दौरान कहा कि सम्राट अशोक महान द्वारा 2251 वर्ष पूर्व मे निर्मित तथा अलेक्जेडर कनिंघन द्वारा खोजी गयी आठ सिंहों वाली दो लाटो में से एक लाट जमानियां तथा दूसरी लाट तक्षशिला में है।इन दोनो लाटों में पीठ से पीठ सटाए हुए आठ शेरों द्वारा आठों दिशायों में धम्म गर्जना की प्रस्तुती हैं।जो गौरवशाली इतिहास का प्रतीक है।जिसके चलते यवनों की गुलामी से आजाद होकर भारत विश्वगुरू व विश्व विजेता कहलाया। तथागत बुध्द तथा सम्राट अशोक महान के विचार आज भी प्रासंगिक है उनके पद चिन्हों पर चलकर भारत पूरे विश्व मे विश्वगुरु बन सकता है।उनके विचारों को जन जन तक पहुंचाने के लिए 02 फरवरी 26 को लटिया महोत्सव जमानियां मे आयोजित है जिसमे भारी संख्या मे जमानियां पहुंचने का आहवान किया। इस अवसर पर महिला विंग के रेनू मौर्या,सरोज मौर्या,रीता मौर्या,,निशा मौर्या,,पूजा मौर्या,राम अशीष मौर्या,चन्द्रभान मौर्या,अनिल मौर्या,नरेन्द्र कुमार मौर्या आदि लोग प्रमुख रुप से मौजूद थे।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार युवती की मौत, वाराणसी ट्रामा सेंटर में तोड़ा दम

भांवरकोल/गाजीपुर । थाना क्षेत्र अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग-31 पर बुधवार पूर्वाह्न फखनपुरा (मदरगढ़हा) के पास ट्रक की टक्कर से लोचाइन निवासी रंजन देवी (19), पत्नी धर्मेंद्र कुमार, गंभीर रूप से घायल हो गईं। इलाज के दौरान वाराणसी ट्रामा सेंटर में उनकी मौत हो गई।समाचार लिखे जाने तक मृतका का शव घर नहीं पहुंचा था, लेकिन मौत की सूचना मिलते ही गांव में कोहराम मच गया। परिवार के करुण क्रंदन से पूरे गांव का माहौल शोकमग्न हो गया।बताया जा रहा है कि धर्मेंद्र कुमार अपनी पत्नी रंजन देवी के साथ बुधवार को आधार कार्ड में संशोधन कराने बाइक से मुहम्मदाबाद जा रहे थे।

वीडियो कांफ्रेंसिंग भवन में 30-31 जनवरी को होगा मतदान

सोनभद्र, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। उत्तर प्रदेश बार काउंसिल सदस्य के 25 पदों के लिए सोनभद्र में 30 व 31 जनवरी को मतदान कराया जाएगा। कुल 333 प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे हैं। जिसमें एक महिला समेत तीन प्रत्याशी सोनभद्र के हैं। सोनभद्र जिले के कुल 1620 सीओपी धारक वकील मतदाता मतदान कर सकेंगे। जिसमें 1348 वकील मतदाता जनपद न्यायालय सोनभद्र परिसर स्थित वीडियो कांफ्रेंसिंग भवन में मतदान करेंगे, जबकि 272 वकील मतदाता दुद्धी में मतदान करेंगे।

विशेष न्यायाधीश एससी/एसटी एक्ट, सोनभद्र/पीठासीन अधिकारी निर्वाचन बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश, सोनभद्र आबिद शमीम ने अवगत कराया है कि यूपी बार काउंसिल सदस्य 25 पदों के लिए कुल 333 प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे हैं। जिसके लिए सोनभद्र जिले में 30 व 31 जनवरी को मतदान कराया जाएगा। सोनभद्र जिले में कुल 1620 सीओपी धारक वकील मतदाता हैं जो मतदान में हिस्सा लेंगे। जिसमें सर्वाधिक 1348 वकील मतदाता जनपद न्यायालय परिसर स्थित वीडियो कांफ्रेंसिंग भवन में तथा 272 वकील मतदाता दुद्धी में मतदान करेंगे।

बता दें कि अबकी बार यूपी बार काउंसिल सदस्य 25 पदों के लिए कुल 333 प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे हैं। जिसमें सोनभद्र जिले के तीन प्रत्याशी क्रमशः राकेश शरण मिश्र एडवोकेट, विनोद कुमार पांडेय एडवोकेट जो वर्तमान में सदस्य हैं के साथ ही सुषमा यादव एडवोकेट शामिल हैं। अबकी बार विद्वान अधिवक्ताओं द्वारा स्थानीय प्रत्याशियों के पक्ष में प्रथम, द्वितीय व तृतीय मत देने का मुंड दिख रहा है। हालांकि वाराणसी के वरिष्ठ अधिवक्ता एवं वर्तमान सदस्यगण श्रीनाथ त्रिपाठी व हरिशंकर सिंह, लखनऊ के वरिष्ठ अधिवक्ता एवं वर्तमान सदस्य जयनारायण पांडेय, राकेश पाठक, प्रयागराज के अधिवक्ता एवं वर्तमान सदस्य देवेंद्र मिश्र नगहरा, अरुण कुमार त्रिपाठी, पांचूराम मौर्य, परेश मिश्र आदि को सोनभद्र से हमेशा प्रथम व द्वितीय वरीयता का मत मिलता रहा है, जिन्हें भी उम्मीद है कि मत जरूर मिलेगा। अब देखना है कि विद्वान वकील मतदाता पुराने सदस्यों पर भरोसा जताते हैं या स्थानीय प्रत्याशियों अथवा नए प्रत्याशियों पर भरोसा जताते हैं

जिलाधिकारी ने ई वी एम गोदाम का किया निरीक्षण

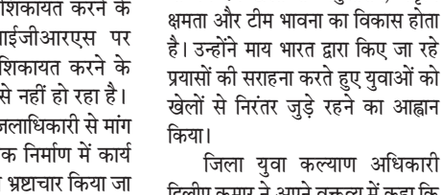

गाजीपुर, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी अविनाश कुमार ने आज जिला निर्वाचन कार्यालय स्थित ई०वी०एम० गोदाम का मासिक निरीक्षण (बाह्य) किया गया। निरीक्षण के दौरान ई०वी०एम० एवं वी०वी०पैट मशीनों की सुरक्षा व्यवस्था, सीसीटीवी कैमरों की स्थिति, सुरक्षा कार्मिकों की तैनाती और अन्य सुरक्षा मानकों की विस्तृत समीक्षा की गई। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी ने स्ट्रांग रूम में लगे सभी सुरक्षा प्रोटोकॉल की जांच करते हुए संतोष व्यक्त किया गया । इस अवसर पर दिनेश कुमार, अपर जिलाधिकारी (वि०/रा०) दिनेश कुमार, ए0 आर 0को-आपरेटिव विपिन कुमार उपस्थित रहे ।

आदिवासियों की जमीन कब्जा करने वालों के विरुद्ध दर्ज होगी एफआईआर

सोनभद्र, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। आदिवासियों की जमीन कब्जा करने वालों के विरुद्ध विशेष न्यायाधीश एससी/एसटी एक्ट सोनभद्र आबिद शमीम की अदालत ने बुधवार को रामपुर बरकोनिया इंस्पेक्टर को एफआईआर दर्ज कर सीओ से मामले की विवेचना कराने व परिणाम से कोर्ट को अवगत कराने का आदेश दिया है। यह आदेश विफनी देवी पत्नी स्वर्गीय हीरा व रामविलास गोड़ पुत्र स्वर्गीय जनकलाल गोड़ निवासीगण बिरनचुआ, थाना रामपुर बरकोनिया, जिला सोनभद्र द्वारा अधिवक्ता सीपी द्विवेदी एवं आनंद ओझा एडवोकेट के जरिए दाखिल 173(4) बीएनएसएस के प्रार्थना पत्र पर कोर्ट ने दिया है। दिए प्रार्थना पत्र में आरोप लगाया गया है कि अनुसूचित जनजाति की जमीन पर भू माफिया कृष्ण कुमार जायसवाल, रीता जायसवाल निवासी सिद्धि कला थाना रॉबर्ट्सगंज, जिला सोनभद्र हाल पता प्रभात नगर कालोनी नगवां, थाना लंका, जिला वाराणसी, सिंघासन, राजू मौर्य निवासी सिद्धि खुर्द, थाना रॉबर्ट्सगंज, जिला सोनभद्र व सरोज गुप्ता निवासी बीरबन, थाना रॉबर्ट्सगंज, जिला सोनभद्र व 4-5 अन्य व्यक्ति नाम पता अज्ञात 23 नवंबर 2025 को सुबह 9-10 बजे एक ट्रैक्टर मय चालक को लेकर आए और उनकी जमीन जोतकर सरसों बुआने लगे।

डीएम ने फार्मर रजिस्ट्री केंद्र का किया निरीक्षण

सोनभद्र, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिले में फार्मर रजिस्ट्री के कार्य को तेज गति से पूर्ण कराने के उद्देश्य से डीएम बी0एन0 सिंह ने गुरूवार को रावर्ट्सगंज ब्लाक के ग्राम पंचायत लोढ़ी में फार्मर रजिस्ट्री केन्द्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत, कृषि विभाग एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीम गठित कर अभियान मोड में फार्मर रजिस्ट्री का कार्य किया जाए, जिससे प्रत्येक पात्र किसान का पंजीकरण सुनिश्चित हो सके। फार्मर रजिस्ट्री कार्य में किसी भी प्रकार की शिथिलता, लापरवाही या उदासीनता पाए जाने पर संबंधित अधिकारियों व कर्मचारियों की जवाबदेही तय करते हुए कठोर कार्रवाई की जाएगी। श्री सिंह ने पंचायत भवन में बनाए जा रहे फार्मर रजिस्ट्री केंद्र का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पंजीकरण प्रक्रिया, अभिलेखों एवं व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा किसानों से संवाद कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसानों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो और फार्मर रजिस्ट्री का कार्य पारदर्शी, सुचारु एवं समयबद्ध तरीके से पूर्ण किया जाए। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी बगीश कुमार शुक्ला, जिला विकास अधिकारी हेमंत कुमार सिंह उपनिदेशक कृषि वीरेंद्र कुमार, जिला पंचायत राज अधिकारी नामित शरण, जिला पूर्ति अधिकारी, सहित कृषि विभाग राजस्व विभाग व ग्राम पंचायत विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

घटिया सड़क निर्माण पर भड़के ग्रामीण, नारेबाजी कर किया विरोध-प्रदर्शन

सोनभद्र, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। पीडब्लूडी विभाग द्वारा घटिया सड़क निर्माण कराए जाने पर वृहस्पतिवार को ग्रामीण भड़क उठे और जमकर नारेबाजी करते हुए विरोध प्रदर्शन किया। ग्रामीणों ने मानक के अनुरूप कार्य कराए जाने की मांग उठाई।

बता दें कि पन्नूगंज मेन रोड से ओरगाईं होते हुए निपनिया नहर लगभग तीन किलोमीटर तक सड़क का निर्माण कार्य पीडब्लूडी प्रांतीय खंड द्वारा करवाया जा रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि सड़क निर्माण कार्य में मानक की अनदेखी की जा रही है, मानक के विपरीत घटिया सड़क निर्माण कराया जा रहा है जो दो महीने भी नहीं चलने वाला। ग्रामीणों ने कहा कि तारकोल नाम मात्र का छीड़क कर पेंटिंग किया जा रहा है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि विभाग के अधिकारियों से शिकायत करने के बाद भी और आईजीआरएस पर मुख्यमंत्री के यहां शिकायत करने के बाद भी काम ठीक से नहीं हो रहा है।

ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से मांग की है कि उक्त सड़क निर्माण में कार्य कर रही संस्था द्वारा भ्रष्टाचार किया जा रहा है। इस पर सख्त कार्रवाई करें और सड़क निर्माण गुणवत्ता के अनुसार किया जाए। प्रदर्शन करने वालों में मुख्य रूप से लल्लू पटेल, सुनील कुमार सिंह, मुकेश कुमार सिंह, शिवनारायण सिंह, अनिल कुमार सिंह, संतोष कुमार, बलवंत पटेल, रामप्यारे पटेल आदि रहे।

गाजीपुर में दो दिवसीय जिला खेल प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

गाजीपुर, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। माय भारत गाजीपुर, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा बुद्धा हॉस्टल छावनी लाइन में आयोजित दो दिवसीय जिला खेल प्रतियोगिता के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि नगर पालिका परिषद की अध्यक्ष सरिता अग्रवाल ने कहा कि खेल युवाओं के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम हैं। खेलों से अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और टीम भावना का विकास होता है। उन्होंने माय भारत द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए युवाओं को खेलों से निरंतर जुड़े रहने का आह्वान किया।

जिला युवा कल्याण अधिकारी दिलीप कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि माय भारत युवा कार्यक्रम, खेल मंत्रालय भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जो युवाओं को खेल, सामाजिक सेवा और राष्ट्र निर्माण से जोड़ने का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है।

जिला खेल अधिकारी अरविंद यादव ने अपना संबोधन देते हुए कहा कि ब्लॉक, जिला स्तरीय प्रतियोगिताएं भविष्य के राज्य और राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों की नींव होती हैं। उन्होंने प्रतिभागी खिलाड़ियों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि गाजीपुर जनपद में खेल प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। उन्होंने आयोजन से जुड़े सभी पदाधिकारियों, स्वयंसेवकों और सहयोगियों को सफल आयोजन के लिए बधाई दी। बाल कल्याण समिति गाजीपुर की अध्यक्ष सीमा पाठक ने कहा कि खेल केवल जीत-हार तक सीमित नहीं होते, बल्कि यह जीवन में संघर्ष, संयम और सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आयुष्मान भारत के डी सी रजनीश वर्मा ने कहा कि युवाओं को पढ़ाई के साथ साथ खेलो में भी रुचि लेना चाहिए।सभी का स्वागत माय भारत के उप निदेशक कपिल देव ने किया तथा प्रतियोगिता के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।कार्यक्रम के अंत में विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए। समूह गेम कबड्डी में विकास खंड मोहम्मदाबाद विजेता एवं कासिमाबाद उपविजेता रहा । वालीबाल मे मुहम्मदाबाद विजेता एवं सदर उपविजेता रहा। लंबी कूद में आशुतोष सिंह कासिमाबाद प्रथम एवं शुभम यादव सादात ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। ऊंचीकूद में शुभम यादव सादात प्रथम तथा अक्षय राव कासिमाबाद द्वितीय स्थान पर रहे।बैडमिंटन में प्रिया सादात विजेता एवं श्रेया बिरनो उप विजेता रही। 100 मीटर दौड़ में प्रिया यादव सादात प्रथम,श्रेया चौहान बिरनो द्वितीय तथा बराबर अंकों पर अंजलि दीप सदर एवं सीमा कुमारी सदर को तृतीय स्थान मिला। संचालन अंगद सिंह यादव ने किया। सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन नवागत लेखा एवं कार्यक्रम सहायक नवीन सिंह ने किया। इस अवसर पर मेरा युवा भारत के पूर्व एपीएस सुभाष चंद्र प्रसाद,कालीचरण चौहान,पारस यादव ,रामाधार यादव, मनोज यादव, वंशराज कुशवाहा, हरेंद्र कुशवाहा स्वाती मौर्य,राजीव कुमार सहित आयोजन में बड़ी संख्या में खिलाड़ी, प्रशिक्षक, स्वयंसेवक एवं खेल प्रेमी उपस्थित रहे।

मऊ का भविष्य सुरक्षित हाथों में रहे इसके लिए सजग रहने की जरूरत - एके शर्मा

माफिया मुक्त मऊ भय के दौर से निकलकर अब प्रगति के पथ पर अग्रसर

मऊ, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने नगर पालिका कम्युनिटी हाल, में आयोजित महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं संविधान सभा सदस्य स्वर्गीय पंडित अलगू राय शास्त्री जी की जयंती समारोह में सहभागिता की। उन्होंने पंडित अलगू राय शास्त्री जी को नमन करते हुए कहा कि ऐसे महापुरुषों का जीवन और विचार आज भी लोकतंत्र, राष्ट्र निर्माण और सामाजिक चेतना को मजबूत करने का कार्य करते हैं। श्री शर्मा ने कहा कि मऊ का अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है, लेकिन एक समय राजनीतिक भटकाव के कारण जनपद को भारी नुकसान उठाना पड़ा और जो कार्य समय पर होने चाहिए थे, वे नहीं हो सके। एक दौर ऐसा भी आया जब मऊ पूरी तरह माफियाओं की गिरफ्त में चला गया था। इससे कानून व्यवस्था कमजोर हुई, शिक्षा और व्यापार प्रभावित हुए। वर्तमान सरकार की सख्त नीतियों, निर्णायक कार्रवाई और जीरो टॉलरेंस के चलते आज

मऊ माफिया मुक्त हो चुका है। उन्होंने कहा कि यह बदलाव केवल प्रशासन का नहीं, बल्कि जनता के विश्वास और सहयोग की जीत है। अब सभी को सजग रहते हुए इस उपलब्धि को स्थायी बनाना होगा, ताकि मऊ की पहचान भय नहीं बल्कि विकास और विश्वास से बने। मंत्री श्री शर्मा ने विश्वास दिलाया कि अब मऊ के विकास को कोई रोक नहीं सकता। उन्होंने कहा कि पूर्व में शिक्षा का अवमूल्यन हुआ, जिसके कारण युवा पीढ़ी गलत रास्तों की ओर भटकती गई। वर्तमान सरकार बच्चों और युवाओं को अपराध के दलदल से निकालकर गुणवत्तापूर्ण और आधुनिक शिक्षा से जोड़ने के लिए लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने बताया कि अमिला में आकांक्षी नगर विकास योजना के अंतर्गत एक भव्य डिजिटल लाइब्रेरी का लोकार्पण हो चुका है, जहां बच्चे आधुनिक तकनीक के माध्यम से अध्ययन कर रहे हैं। इसी क्रम में उन्होंने नगर पालिका परिषद में बनने वाली डिजिटल लाइब्रेरी का नामकरण पंडित श्याम नारायण पांडेय के नाम पर करने की घोषणा की। कहा कि यदि पंडित श्याम नारायण पांडेय न होते, तो महाराणा प्रताप इतिहास में उतनी मजबूती से अमर न हो पाते। मंत्री श्री शर्मा ने बहुउद्देशीय भवन ह्यमंगलमह्व तथा गायघाट के सुंदरीकरण कार्य का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि ये परियोजनाएं मऊ को आधुनिक सुविधाओं से लैस करने के साथ-साथ उसकी सांस्कृतिक पहचान को भी सशक्त बनाएंगी। मऊ अब अराजकता या अपराध से नहीं, बल्कि शिक्षा, संस्कृति और समग्र विकास के लिए जाना जाएगा।

कार्यक्रम के दौरान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों सगुना सिंह, अभिमन्यु मल्ल, श्यामसुंदर मिश्र, हरगोविंद राय, रघुवर कुर्मी, अब्दुल लतीफ नोमानी, राजकिशोर गुप्ता, शारदानंद वर्मा, रामविलास पांडेय, बाबू उमराव सिंह सहित अन्य सेनानियों के परिजनों को मंत्री श्री शर्मा ने सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि यह सम्मान देश की आजादी के लिए किए गए त्याग और बलिदान के प्रति समाज की कृतज्ञता का प्रतीक है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता राम जी उपाध्याय ने की। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष मनोज राय, ऋषिकेश राय, अतुल राय, धनंजय सिंह, देव प्रकाश राय, सुजीत सिंह, हौसला प्रसाद उपाध्याय, शारदानंद, अमरेश पांडेय, रामाश्रय राय सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिजन तथा बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

बाबू मैनेजर सिंह की जयंती पर प्रदेश का चौथा मैराथन भव्यता के साथ संपन्न

बैरिया,बलिया,29जनवरी,(देवव्रत संवाद)। में बाबू मैनेजर सिंह की जयंती के अवसर पर आयोजित 42.195 किलोमीटर फुल मैराथन सहित विभिन्न दौड़ प्रतियोगिताएं रविवार को ऐतिहासिक और भव्य रूप से संपन्न हुईं इस मैराथन में अफ्रीकी

देश इथियोपिया की धाविका फिरोनिशा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया उन्होंने 2 घंटे 8 मिनट में दूरी पूरी की फुल मैराथन में मुजफ्फरनगर के अक्षय कुमार ने द्वितीय तथा दिल्ली के अमरेश प्रजापति ने तृतीय स्थान प्राप्त किया हाफ मैराथन व अन्य वर्गों के परिणाम इस प्रकार हैं - 21 किमी हाफ मैराथन वाराणसी के शंकर कुमार प्रथम, अयोध्या के धीरज यादव द्वितीय, आगरा के मनीष सिंह तृतीय-10 किमी दौड़ वाराणसी के प्रिंस राज मिश्र प्रथम, वाराणसी के ही आशीष पाण्डेय द्वितीय, बलिया के राकेश वर्मा तृतीय- 5 किमी दौड़ वाराणसी की सोनी प्रथम, निधि चौहान द्वितीय, रूबी पाल तृतीय पुरस्कार वितरण फुल मैराथन की विजेता फिरोनिशा को प्रभारी मंत्री गिरीश चंद्र यादव द्वारा 225 लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले अक्षय कुमार को 125 लाख रुपये तथा तृतीय स्थान पर रहे अमरेश प्रजापति को 75 हजार रुपये दिए गए।

सिकन्दरपुर में यूजीसी नये कानून के विरोध में प्रदर्शन

सिकन्दरपुर, बलिया,29जनवरी,(देवव्रत संवाद)। यूजीसी के नये कानून के विरोध में सिकंदरपुर के जागरूक लोगों ने प्रदर्शन किया और सरकार से इसे वापस लेने की मांग की। उपजिलाधिकारी सिकन्दरपुर, बलिया के माध्यम से महामहीम माननीय राज्यपाल महोदया उत्तर प्रदेश को पत्रक भेजा गया है।प्रदर्शनकारियों का कहना है कि इस नये कानून से शिक्षण संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में शैक्षिक माहौल खराब होगा और जातीयता की भावना प्रबल होगी। इससे आपसी मेलजोल में भय और शंका व्याप्त रहेगा। मांग करने वालों में भोला सिंह पूर्व जिला पंचायत सदस्य, अमरनाथ सिंह प्रदेश उपाध्यक्ष क्षत्रिय महासभा, बृजेश मिश्रा, पुष्कर राय, आनन्द सिंह, ध्रुवनारायन सिंह, श्यामू पाण्डेय, अखिलेश सिंह, अशोक श्रीवास्तव एडवोकेट, सुरेश सिंह, रणजीत राय, मनिष सिंह, लक्ष्मण पाण्डेय इत्यादि शामिल थे।

मुरली छपरा ब्लॉक अंतर्गत मूर्ति विसर्जन के दौरान मारपीट की घटना

बैरिया ,बलिया,29जनवरी,(देवव्रत संवाद)। बुधवार को शाम शाम मुरली छपरा ब्लॉक अंतर्गत मूर्ति विसर्जन के दौरान मारपीट की घटना सामने आई है। बताया जा रहा है कि एक मूर्ति ठेकहा चट्टी से तथा दूसरी मूर्ति टोला सिवान राय से विसर्जन के लिए माझी घाट की ओर ले जाई जा रही थी। जब दोनों मूर्तियाँ एनएच-31 पर वन विभाग कार्यालय के पास, घाट से कुछ दूरी पहले पहुँचीं, तभी कुछ युवकों के बीच कहासुनी हो गई, जो देखते-देखते मारपीट में बदल गई। इस घटना में एक युवक को हल्की चोट आई, जिससे मौके पर कुछ देर के लिए अफरा-तफरी मच गई। इस दौरान मौके पर मौजूद लोगों ने आरोप लगाया कि यदि चांद चौकी प्रभारी समय रहते मौके पर मौजूद होते, तो यह स्थिति उत्पन्न नहीं होती। मूर्ति विसर्जन में शामिल उदय गुप्ता, ठेका अंकित गुप्ता, जीतू राम (आर्केस्ट्रा संचालक) सहित दो दर्जन से अधिक लोग मौके पर मौजूद थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, विसर्जन के दौरान बाइक से हल्का धक्का लगने को लेकर विवाद शुरू हुआ था। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुँची और स्थिति को नियंत्रित किया। घायल युवक को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र वर्षा भेजा गया। इस संबंध में बैरिया थाना प्रभारी निरीक्षक विपिन सिंह ने बताया कि मूर्ति विसर्जन के दौरान बाइक से हल्का धक्का लगने के कारण विवाद हुआ था। वापसी के समय इसी बात को लेकर कहासुनी और मारपीट हो गई, जिसमें एक युवक को हल्की चोट आई है। मामले की जांच की जा रही है तथा आगे वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।घटना के बाद क्षेत्र में स्थिति सामान्य बताई जा रही है।

महावीर धाम दादर आश्रम में दानपेटिका तोड़कर चोरी, आस्था पर प्रहार

सिकन्दरपुर,बलिया,29जनवरी,(देवव्रत संवाद)। महावीर धाम दादर आश्रम प्रांगण में स्थित दानपेटिका को तोड़कर अज्ञात चोरों द्वारा नकदी चोरी कर ली गई। यह दान श्रद्धालुओं द्वारा मंदिर विकास, कीर्तन-भजन मंच और सामाजिक कार्यों के लिए दिया जाता था। आश्रम परिसर में दो दानपेटिकाएं लगी हुई हैं, जिनसे प्राप्त राशि में और सहयोग मांगकर हर वर्ष धार्मिक एवं सामाजिक कार्य किए जाते हैं। हाल ही में दान पेटिका के सहयोग से मंच निर्माण लगभग पूरा किया गया था।इस चोरी की घटना से स्थानीय लोगों में आक्रोश है, और प्रशासन से मांग की जा रही है कि जल्द से जल्द मामले की जांच कर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की जाए, ताकि धार्मिक स्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इस संबंध में महावीर धाम सोसाइटी के अध्यक्ष भोला सिंह ने बताया है कि धार्मिक स्थल भी अब चोरों के निशाने से नहीं बच पा रहे हैं आए दिन मंदिरों दरगाह मस्जिदों में इस तरह की घटनाएं हो रही है यह प्रशासन की लचर व्यवस्था की देन है अगर समय-समय पर पेट्रोलिंग की जाती तो इस तरह की स्थिति पैदा नहीं होती।

अपहरण के मामले में वांछित गिरफ्तार

मऊ, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। पुलिस अधीक्षक इलामारन जी के निर्देशन में अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार के पर्यवेक्षण में क्षेत्राधिकारी मधुबन अंजनी कुमार पाण्डेय के नेतृत्व में वृहस्पतिवार को थाना रामपुर पुलिस ने कमलसागर ग्राउन्ड के पास से मु0अ0स0 06/26 धारा 137(2),87 बीएनएस में वाछित अभियुक्त सुजीत कुमार पुत्र राजेन्द्र प्रजापति निवासी बस्ती वर्सी निधियांव को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया।गिरफ्तार करने वाली टीम मे उ0नि0 श्यामजी यादव, आत्मा यादव और संतोष प्रजापति शामिल रहे ।

सिकंदरपुर में मतदाता सूची से नाम कटवाने का आरोप

सिकन्दरपुर, बलिया,29 जनवरी, (देवव्रत संवाद)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चलाए जा रहे एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) अभियान के तहत सिकंदरपुर विधानसभा क्षेत्र में मतदाता सूची से एक खास वर्ग के मतदाताओं के नाम कथित रूप से गलत तरीके से हटाए जाने के आरोपों को लेकर समाजवादी पार्टी सिकंदरपुर इकाई ने गुरुवार को जोरदार विरोध दर्ज कराया। क्षेत्रीय विधायक मोहम्मद जियाउद्दीन रिजवी के नेतृत्व में सपा कार्यकताओं ने नगरा मोड़ से जुलूस निकालते हुए तहसील परिसर तक नारेबाजी की और जिलाधिकारी के नाम संबोधित ज्ञापन उप जिलाधिकारी सिकंदरपुर सुनील कुमार को सौंपकर निष्पक्ष जांच व कार्रवाई की मांग की।

समाजवादी पार्टी का आरोप है कि सिकंदरपुर तहसील अंतर्गत एआरओ (सहायक रिटर्निंग ऑफिसर) मनोज पाण्डेय, जो वर्तमान में चकबंदी अधिकारी भी हैं, की भूमिका इस पूरे मामले में संदिग्ध है। आरोप है कि भाजपा द्वारा नामित बीएलओ को बुलाकर जबरन फॉर्म-7 भरवाया जा रहा है, ताकि पीडीए वर्ग के मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटाए जा सकें, जबकि संबंधित मतदाता अपने घरों पर निवासरत हैं।

सपा नेताओं ने उदाहरण देते हुए बताया कि ग्राम सिवानकलां में भाजपा द्वारा नामित बीएलओ मनीष राजभर, छद्दू शर्मा, अमित यादव और गुड्डू राजभर द्वारा दबाव बनाकर फॉर्म-7 भरवाने का प्रयास किया गया। आरोप है कि इसी गांव में करीब 146 मतदाताओं के नाम काटने की कोशिश की जा रही है।

यूजीसी के विरोध में अधिवक्ताओं ने किया प्रदर्शन

राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौपा

मऊ, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के विरोध को लेकर वृहस्पतिवार को अधिवक्ताओं ने दीवानी कचहरी परिसर से जूलूस निकाल कर नारेबाजी करते हुए कलेक्ट्रेट पहुंच कर प्रदर्शन किया। तथा राष्ट्रपति को संबोधित एक.ज्ञापन जिलाधिकारी प्रवीण मिश्र को सौप कर यूजीसी को वापस लेने की मांग किया। जिलाधिकारी को दिए ज्ञापन में उल्लेख किया कि जनपद के अधिवक्ता विधि व्यवसाय से जुडे नागरिक संविधान में आस्था रखने वाले लोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा हाल ही में अधिसूचित तथाकथित समानता के सवर्धन हेतु बनाये नियमो पर ध्यान आकृष्ट कराना चाहते हैं। जिसका व्यावहारिक एवं विधिक प्रभाव संविधान की समानता की भावना के विपरीत परिलक्षित हो रहा है।

भारत का संविधान समानता को मात्र औपचारिक नहीं बल्कि वास्तविक संतुलित एवं न्यायोचित समानता के रूप में स्वीकार करता है। लेकिन यूजीसी द्वारा बनाए गए नए नियमों के कारण एकतरफा प्रभाव एक वर्ग विशेष के विद्यार्थियों पर पड़ रहा है। जो न्यायिक दृष्टि से मनमाने तथा भेदभाव की श्रेणी में आता है। इस विनियमन के दुरूपयोग की पूरी सम्भावना है। क्योकि गलत शिकायत करने वालो

के विरुद्ध इसमें कोई प्राविधान नहीं किया गया है । इसलिए यह नियम केवल जातीय संघर्ष एवं समाज में खाई पैदा करने का काम करेगा जिससे विश्वविद्यालय व उच्च शिक्षा केन्द्रो में पठन पाठन का माहौल समाप्त हो जायेगा। अधिवक्ताओं का कहना है कि ज्ञापन किसी भी वर्ग, जाति या समुदाय के विरुद्ध नहीं बल्कि नीतिगत असंतुलन संवैधानिक विचलन एवं उसके सम्भावित दुष्परिणामों के विरूद्ध दिया जा रहा है।

अधिवक्ताओं की मांग है कि यूजीसी द्वारा समानता के नाम अधिसूचित विनियमन 2026 की संवैधानिक वैधता एवं व्यवहारिक दुष्प्रभाव की उच्च स्तरीय समीक्षा कर उसे वापस लेने की मांग किया। इस दौरान अश्विनी सिंह, प्रदीप कुमार सिंह, दिनेश कुमार सिंह, अजय श्रीवास्तव, बालवेंदू भूषण सिंह, नीरज सिंह, विवेक कुमार सिंह आदि अधिवक्ता शामिल रहे। उधर तहसील सदर के अधिवक्ताओं ने भी यूजीसी के विरोध में प्रदर्शन किया तथा उसे वापस लेने की मांग किया। इस दौरान तहसील बार सदर के अध्यक्ष शिवनारायण राय, तेजबहादुर सिंह, बद्रीनाथ सिंह, अजीत कुमार श्रीवास्तव, बालमुकुंद सिंह आदि रहे।

जेएसपी का यूजीसी एक्ट 2026 को पूर्ण समर्थन-डा.आर.एस.पटेल

जनहित संकल्प पार्टी ने कहा- दबाव में यूजीसी एक्ट 2026 को वापस लिया गया तो होगा आन्दोलन

लखनऊ **29 जनवरी (देवव्रत संवाद)।** लखनऊ स्थित सूर्या होटल में जनहित संकल्प पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.आर.एस.पटेल ने प्रेसवार्ता कर मीडिया से मुखातिब हुए। प्रेसवार्ता के दौरान 13 जनवरी 2026 को जारी यूजीसी एक्ट 2026 का खुलकर समर्थन किया तथा इस एक्ट का विरोध कर रहे तथाकथित समूहों की कड़ी आलोचना की। डॉ. पटेल ने कहा कि यूजीसी एक्ट 2026 पर पूरे देश में तांडव इसलिए हो रहा है कि पहली बार इस एक्ट में ओबीसी समाज को भी वास्तविक रूप से संरक्षित किया गया है। उन्होंने कहा कि जैसे ही कुछ लोगों को यह पता चला कि यूजीसी एक्ट 2026 में एससी-एसटी के साथ-साथ ओबीसी वर्ग को भी शामिल किया गया है,उसी क्षण से विरोध की राजनीति शुरू हो गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने ओबीसी समाज को न्याय देने का काम किया, तो उनके खिलाफ गाली-गलौज क्यों की जा रही है? यह केवल विरोध नहीं, बल्कि राष्ट्रविरोधी मानसिकता का परिचायक है।

डॉ. पटेल ने सवाल उठाया– जब यूजीसी एक्ट 2026 की इक्विटी कमेटी में एससी, एसटी, ओबीसी, दिव्यांग, महिलाएं और ईडब्ल्यूएस को शामिल किया गया है,तो इससे सवर्ण समाज के एक वर्ग को इतनी परेशानी क्यों है? उन्होंने बताया कि देश में 54 से अधिक केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं,लेकिन उनकी जानकारी के अनुसार एससी-एसटी-ओबीसी वर्ग से केवल 5 कुलपति हैं, शेष सभी ओपन कैटेगरी से आते हैं। जबकि इस एक्ट में यह भी प्रावधान है कि इक्विटी कमेटी का अध्यक्ष विश्वविद्यालय का पदेन कुलपति होगा, फिर भी विरोध क्यों? डॉ. पटेल ने दो टूक शब्दों में कहाकि अगर मुट्ठीभर लोगों के दबाव में यूजीसी एक्ट 2026 को वापस लिया गया, तो जनहित संकल्प पार्टी के नेतृत्व में पूरे उत्तर प्रदेश सहित देशभर में एससी-एसटी-ओबीसी समाज सड़क पर उतरने को बाध्य होगा। 90% आबादी के इस आंदोलन से उत्पन्न स्थिति की पूरी जिम्मेदारी शासन-प्रशासन और सरकार की होगी। उन्होंने ओबीसी प्रधानमंत्री के खिलाफ की जा रही गाली-गलौज को राष्ट्रद्रोह की श्रेणी में बताते हुए कठोर कार्रवाई की मांग भी की।

सहायक रजिस्ट्रार, फर्म्स, सोसाइटीज एवं चिट्स, आजमगढ़ नए भवन में हुआ स्थानान्तरित

मऊ, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। सहायक रजिस्ट्रार, फर्म्स, सोसाइटीज एवं चिट्स, आजमगढ़ मण्डल दीपक कुमार सिंह ने बताया कि कार्यालय सहायक रजिस्ट्रार, फर्म्स, सोसाइटीज एवं चिट्स, आजमगढ़ मण्डल वर्तमान में हजारीबाग, मऊ रोड, सिधारी, जिला-आजमगढ़ से स्थानान्तरित होकर नये भवन लल्लन सिंह, घोरठ, निकट सर्वोदय पब्लिक स्कूल के सामने, जिला-आजमगढ़ में स्थापित हो चुका है तथा वर्तमान में दिनांक 02 फरवरी 2026 से कार्यालय का कार्य पूर्णरूप से नये भवन से जनहित / शासकीय हित में सम्पादित किया जायेगा।

सड़क सुरक्षा को लेकर किया जागरूक

मऊ। सड़क सुरक्षा माह के 29 वें दिन वृहस्पतिवार को रामस्वरूप भारती इंटर कॉलेज शिवजी मठ भीटी में सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा के तत्वावधान में सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा की प्रेरणा से विद्यालय के स्काउट गाइड के भैया बहनों ने एआरटीओ सुहेल अहमद व प्रधानाचार्य विजय सिंह के सानिध्य में संगोष्ठी का आयोजन किया।

सिविल डिफेंस के तहत सुरक्षा सैनिक व सुपरवाइजर की होगी भर्ती

मऊ, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। मुख्य विकास अधिकारी प्रशांत नागर ने बताया कि जनपद के 9 विकास खण्ड मुख्यालयों में एसआईएस इंडिया लि0 सिविल डिफेंस के तत्वाधान में जिले के बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराने हेतु तिथिवार शिविर का आयोजन किया जाएगा।

दिनांक 5 व 6 फरवरी को रतनपुरा ब्लॉक, 7 व 9 फरवरी को परदहा, 10 व 11 फरवरी को कोपागंज, 12 व 13 फरवरी को घोसी, 16 व 17 फरवरी को बडराव, 18 व 19 को मुहम्दाबाद गोहना, 20 व 21 को फतेहपुर मंडाव, 23 व 24 को रानीपुर, 25 व 26 को दोहरीघाट ब्लॉक में भर्ती शिविर का आयोजन किया जाएगा।

डिप्टी कमांडेंट रजनीश कुमार राय ने बताया कि एसआईएस इंडिया लि0 भारत की बहुराष्ट्रीय कम्पनी है, जो सिविल डिफेंस के तहत एनडीआरफ द्वारा ट्रेनिंग सभी प्रशिक्षु को दिया जाता है। सुरक्षा प्रदान करने का कार्य पूरे भारत व विदेशो में कर रही है। इस शिविर में सुरक्षा सैनिक, सुपरवाइजर की नियुक्ति की जाती है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि जौनपुर ट्रेनिंग सेंटर सुरक्षा सैनिक एवं सुपरवाइजर और पद के लिए शारीरिक माप दण्ड जिसमें लम्बाई 167.5 सेंमी, सीना 80-85 सेंमी तथा उम्र 19 से 40 के बीच, वजन 56 से ज्यादा 90 से कम नही तथा योग्यता हाईस्कूल पास होना चाहिए। वही सुपरवाइजर के लिए इंटर पास होना चाहिए और लंबाई 170 सेमी उम्र 19 से 40 वर्ष जो देखने में होनहार हो। ऐसे इच्छुक बेरोजगार युवकों को उक्त निर्धारित तिथियों में अपनी सुविधानुसार संबंधित विकास खण्डों में निर्धारित शिविर में साक्षात्कार हेतु प्रतिभाग कर सकते है। जिसमें चयनित अभ्यर्थियों का पंजीकरण करने के लिए 350 रू0 ऑनलाइन जमा करना होगा। पंजीकृत चयनित अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण अथवा ट्रेनिंग के लिए जौनपुर भेजा जायेगा, जहाँ प्रत्येक चयनित एवं इच्छुक उम्मीदवारों को प्रशिक्षण के दौरान एक माह प्रशिक्षण के उपरान्त उन्हें सरकारी एवं गैर सरकारी जगहों के तैनाती स्थलो पर सुरक्षा के कार्य में स्थाई तैनाती की जाएगी। जैसे बनारस, गाजीपुर, मऊ प्रसिद्ध होटलों, मंदिरों, रेलवे मेट्रो, हॉस्पिटलों, विश्वनाथ मंदिर, अयोध्या मंदिर, ताज होटल इत्यादि जगहों में तैनात किया जाएगा। जहाँ नौकरी के दौरान पीएफ, ईएसआई, ग्रेच्युटी, बोनस, फंड्स दिया जायेगा।

सपा नेता ने 100 बेड अस्पताल चालू करने की मांग,20 फरवरी तक शुरू न होने पर धरना प्रदर्शन

बलिया। बलिया कलक्ट्रेट में गुरुवार को समाजवादी पार्टी (सपा) नेता अंगद मिश्र फौजी ने सोनवरषा स्थित 100 बेड के अस्पताल को जल्द चालू करने की मांग की। उन्होंने इस संबंध में जिलाधिकारी (डीएम) को संबोधित एक पत्रक प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा।

अंगद मिश्र ने चेतावनी दी है कि यदि 20 फरवरी तक अस्पताल पूरी तरह से क्रियाशील नहीं होता है, तो बैरिया विधानसभा क्षेत्र के लोग धरना प्रदर्शन करेंगे। अंगद मिश्र फौजी ने बताया कि सोनवरषा का यह 100 बेड का अस्पताल पिछले डेढ़ साल से केवल कागजों में चल रहा है, लेकिन अभी तक यह पूरी तरह से क्रियाशील नहीं हो पाया है। इस कारण द्वाबा और बैरिया विधानसभा क्षेत्र के लगभग 5 लाख लोगों को उचित चिकित्सा सुविधा नहीं मिल पा रही है।उन्होंने कहा कि छोटे-मोटे एक्सीडेंट होने पर भी सोनवरषा अस्पताल केवल एक रेफर सेंटर बनकर रह गया है। मरीजों को पहले बलिया और फिर वहां से वाराणसी रेफर कर दिया जाता है, जिससे स्थानीय जनता को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

सपा नेता ने जोर दिया कि यदि यह अस्पताल पूरी तरह से चालू हो जाए, तो ऐसी स्थिति नहीं आएगी और सभी का इलाज मुफ्त में हो सकेगा, जिससे जनता को बड़ी राहत मिलेगी। उन्होंने अपनी चेतावनी दोहराते हुए कहा कि यदि 20 फरवरी तक अस्पताल चालू नहीं होता है, तो वे संवैधानिक नियमों के तहत धरना प्रदर्शन करेंगे।

पीएम विश्वकर्मा योजना के तहत आयोजित जागरूकता कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

मऊ, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के अंतर्गत ब्रांच एमएसएमई विकास एवं सुविधा कार्यालय, वाराणसी द्वारा पीएम विश्वकर्मा योजना के लाभार्थियों हेतु एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई), सहादतपुर में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा प्रवीण गुप्ता ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। स्वागत संबोधन आर. के. बरनवाल, सहायक निदेशक, शाखा एमएसएमई-विकास कार्यालय, वाराणसी ने किया। इसके पश्चात शिव भारद्वाज, सहायक आयुक्त उद्योग, जिला उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केंद्र तथा अरुण यादव, प्रधानाचार्य, राजकीय आईटीआई ने लाभार्थियों को अवगत कराया कि पी०एम० विश्वकर्मा योजना अन्तर्गत 05 दिवसीय निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है। शासन स्तर से लाभार्थी

को 400 हजार नगद एवं 15000 की निःशुल्क टुल्स प्राप्त कर सकते है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रवीण गुप्ता, डोमेन एक्सपर्ट पी एम विश्वकर्मा व पूर्व जिला अध्यक्ष, भाजपा, मऊ रहे, जिन्होंने पीएम विश्वकर्मा योजना को पारंपरिक कारीगरों एवं शिल्पकारों के लिए अत्यंत लाभकारी बताते हुए अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। तकनीकी सत्र में अनिल कुमार सिन्हा, एलडीएम, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने योजना से संबंधित वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण, टूलकिट एवं ऋण सुविधाओं की विस्तृत जानकारी दी। विपणन सहयोग विषय पर ज्योति, ब्रांच मैनेजर, इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक, ने जानकारी साझा की। वहीं पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग पर प्रशांत विश्वकर्मा, शोधार्थी, डिजाइन इनोवेशन सेंटर, बीएचयू, वाराणसी ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत में वी. के. राणा, सहायक निदेशक, ब्रांच एमएसएमई-डीएफओ, वाराणसी ने धन्यवाद ज्ञापन किया । कार्यक्रम में योगेंद्र यादव अखिलेश कुमार, गोपाल दुबे, डी०पी०एम०यू पी०एम० विश्वकर्मा, अभिषेक शर्मा, द्वारिका मिश्रा, रमेश यादव, सतेन्द्र, आर्यन्त, राजकुमार, शिवकुमार, विकास, श्रीप्रकाश प्रहालाद यादव, आदित्य एवं लगभग 150 पीएम विश्वकर्मा योजना के लाभार्थी उपस्थित आदिं उपस्थित रहे।

दहेज हत्या के मामले में आरोपी की जमानत अर्जी खारिज

मऊ, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजय कुमार यादव ने दहेज को लेकर विवादित की हुई हत्या के मामले में नामजद राधिका की जमानत अर्जी खारिज कर दिया। जिला जज ने यह आदेश बचाव पक्ष और प्रभारी डीजीसी फौजदारी अजय कुमार सिंह के तर्कों को सुनने तथा केस डायरी का अवलोकन करने के बाद पारित किया। मामला कोतवाली घोसी क्षेत्र का है। अभियोजन के अनुसार बलिया जनपद के कुकुरहा हजौली निवासी द्रोपदी देवी पत्नी लल्लन राजभर की तहरीर पर एफआईआर दर्ज हुई। वादिनी का कथन है कि उसकी लड़की आरती राजभर की शादी मनोज राजभर के साथ हुई थी। आरोप है कि दहेज को लेकर 29 नवंबर 25 को उसके ससुराल वाले मारपीट कर आरती की हत्या कर दिए। मामले में आरोपी कोतवाली घोसी क्षेत्र के पकड़ी बुजुर्ग मठिया गांव निवासी राधिका पत्नी राममिलन की ओर से जमानत के लिए अर्जी दी गई । जिसे सुनवाई के बाद खारिज कर दिया।

दैनिक देवव्रत
www.dainikdevvrat.in
हिन्दी दैनिक, आजमगढ़
शुक्रवार, 30 जनवरी, 2026

सरकारी कर्मचारी का दर्जा और मानदेय में वृद्धि को लेकर प्रदर्शन

आंगनवाड़ी संयुक्त मोर्चा ने डीएम को दिया मांगपत्र, 8 मार्च को लखनऊ कूच की चेतावनी

आजमगढ़, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। आंगनवाड़ी संयुक्त मोर्चा उत्तर प्रदेश के आह्वान पर जनपद इकाई के पदाधिकारियों ने अपनी लंबित एवं जायज मांगों तथा वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं के समाधान को लेकर जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री को संबोधित मांगपत्र जिलाधिकारी को सौंपा। जिलाध्यक्ष श्रीमती हेमा गुप्ता ने कहा कि आंगनवाड़ी कार्यकत्रियां एवं सहायिकाएं विगत कई दशकों से महिला एवं बाल विकास विभाग की आधारशिला के रूप में पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, टीकाकरण एवं मातृ–शिशु देखभाल जैसी योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू कर रही हैं, इसके बावजूद उन्हें आज तक न तो पूर्णकालिक सरकारी कर्मचारी का दर्जा मिला है और न ही सामाजिक सुरक्षा व सम्मानजनक सुविधाएं।

उन्होंने कहा कि सरकार को कई बार ज्ञापन दिए जाने के बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई, जिससे कार्यकर्ताओं का मानसिक व आर्थिक शोषण बढ़ता जा रहा है। उन्होंने मांग की कि काम कराने से पहले आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाएं, सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाए, मानदेय में वृद्धि की जाए तथा राजनीतिक कार्यक्रमों में जबरन भीड़ के रूप में उपयोग करने की प्रवृत्ति पर रोक लगाई जाए। जिलाध्यक्ष नीतू पांडेय ने कहा कि ऑफलाइन से ऑनलाइन कार्य प्रणाली में बदलाव के बाद आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने ई–केवाईसी व एफआरएस योजनाओं को सफल बनाने का भरपूर प्रयास किया, लेकिन विभाग द्वारा दिए गए घटिया मोबाइल और कमजोर नेटवर्क के कारण टीएचआर वितरण में भारी दिक्कतें आ रही हैं। उन्होंने पोषण ट्रैकर के लिए उच्च गुणवत्ता का 5ळ मोबाइल खरीदने हेतु कम से कम ध्20,000 तथा प्रतिमाह ध्2,500 रिचार्ज एवं डाटा भत्ता दिए जाने की मांग की। जिलाध्यक्ष कंचन यादव ने कहा कि 20 से 40 वर्षों की सेवा के बावजूद आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को न प्रमोशन मिला, न पेंशन, न ग्रेच्युटी, न भविष्य निधि और न ही सामाजिक सुरक्षा। कम मानदेय में परिवार का भरण–पोषण भी मुश्किल हो गया है। उन्होंने संघों के साथ नियमित सरकारी बैठकों की व्यवस्था की मांग की। नेतृत्व ने चेतावनी दी कि यदि समय रहते मांगों पर विचार नहीं किया गया तो आंगनवाड़ी कार्यकर्ता 08 मार्च 2026 को लखनऊ कूच करेंगी, जिसकी पूरी जिम्मेदारी शासन–प्रशासन की होगी। ज्ञापन सौंपने के दौरान गूंजा बरनवाल, प्रेमशीला यादव, सुशीला देवी, रेखा बिंद, शशिकला यादव, पूनम सिंह, सुनीला देवी, वंदना मौर्या, अमिता सिंह, किरन, सुनीता, गीता, नीलम, शोभावती, संध्या, पूनम, अनीता, सीता, रिंकू, मधुबाला, मीरा, मनीता, संगीता, सुषमा, आशा, सरिता, विमला, सीमा, प्रमिला, प्रतिभा, ऊषा सहित बड़ी संख्या में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताएं उपस्थित रहीं।

अंतरजनपदीय जहरखुरानी-नकबजनी गिरोह का खुलासा

बदमाशों से मुठभेड़ में एक को लगी गोली, तीन गिरफ्तार

आजमगढ़, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। जनपद के थाना कप्तानगंज पुलिस ने बुधवार को बड़ी कार्रवाई की। पुलिस ने जहरखुरानी, झपट्टामारी और नकबजनी की घटनाओं में शामिल एक अंतरजनपदीय गिरोह का पर्दाफाश किया। मुठभेड़ के दौरान एक अभियुक्त गोली लगने से घायल हो गया, जबकि उसके दो अन्य साथियों को मौके से गिरफ्तार कर लिया गया। दो अभियुक्त अंधेरे का लाभ उठाकर भाग गए, जिनकी तलाश में पुलिस टीमें लगातार दबिश दे रही हैं। जानकारी के अनुसार, बुधवार को थाना कप्तानगंज पुलिस शांति व्यवस्था बनाए रखने, वांछित अभियुक्तों की तलाश और संदिग्ध व्यक्ति व वाहनों की चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि जहरखुरानी व नकबजनी की घटनाओं में शामिल अभियुक्त गौरा पुलिया के पास किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में हैं। सूचना पर पुलिस ने घेराबंदी की, लेकिन खुद को घिरता देख बदमाशों ने पुलिस टीम पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग शुरू कर दी। पुलिस द्वारा आत्मरक्षार्थ की गई नियंत्रित जवाबी कार्रवाई में एक अभियुक्त अमन निषाद के दाहिने पैर में गोली लग गई। घायल अभियुक्त अमन निषाद निवासी डाही शम्भूपुर थाना अहरौला को उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया। मौके से उसके दो साथी आनन्द उर्फ बाबी और अमन निषाद को गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में अभियुक्तों ने थाना कप्तानगंज और थाना अहरौला क्षेत्र में हुई कई आपराधिक घटनाओं में अपनी संलिप्तता स्वीकार की। अभियुक्तों ने बताया कि 24 जनवरी को ग्राम भवानीपट्टी में एक महिला को नशीला पदार्थ खिलाकर उसकी नाक की सोने की कील झपट ली गई थी। इसके अलावा 25/26 जनवरी तथा 27 जनवरी की रात में दुकानों में सेंध लगाकर नकदी और सामान चोरी किया गया था। पुलिस ने अभियुक्तों के कब्जे से एक देशी तमंचा, कारतूस, नकबजनी के औजार, सोने की नाक की कील, किराना सामान, करीब 10 किलो अरहर की दाल, तेल और 5300 रुपये नकद बरामद किया है। गिरफ्तार अभियुक्तों के खिलाफ बीएनएस की सुसंगत धाराओं एवं आर्म्स एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्रवाई की जा रही है। एसपी ग्रामीण चिराग जैन ने कहा कि फरार अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं, साथ ही गिरोह के अन्य आपराधिक कनेक्शनों की भी जांच की जा रही है।

22 फरवरी को होगा मेगा विधिक सहायता एवं सेवा शिविर का आयोजन

आजमगढ़, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दीवानी न्यायालय आजमगढ़ निताका राजन ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ एवं उसके कार्यपालक अध्यक्ष/वरिष्ठ न्यायमूर्ति के अनुमोदन के उपरांत आम जनता के विधिक सशक्तीकरण के उद्देश्य से जनपद स्तर पर 22 फरवरी 2026 को मेगा/वृहद विधिक सहायता एवं सेवा शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस मेगा शिविर में जिले के सभी विभाग प्रतिभाग करेंगे और विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं के अंतर्गत पात्र व्यक्तियों को लाभ प्रदान किया जाएगा।

शिविर का उद्देश्य जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क विधिक सहायता, मार्गदर्शन और सरकारी योजनाओं से जोड़ना है। सचिव नितिका राजन ने बताया कि शिविर का मुख्य उद्देश्य समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को कानूनी रूप से सशक्त बनाना है, ताकि कोई भी व्यक्ति केवल जानकारी के अभाव में न्याय से वंचित न रह जाए।

डिस्ट्रिक्ट टैक्स बार एसोसिएशन के चुनाव में भारी अनियमितता का आरोप, दोबारा चुनाव की तिथि घोषित

आजमगढ़, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। डिस्ट्रिक्ट टैक्स बार एसोसिएशन आजमगढ़ के चुनाव को लेकर गंभीर विवाद सामने आया है। एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रकाश यादव (एडवोकेट) एवं सचिव अनूप कुमार विश्वकर्मा (एडवोकेट) ने चुनाव प्रक्रिया में नियमों के उल्लंघन और धांधली का आरोप लगाते हुए दोबारा चुनाव कराने की घोषणा की है।

जानकारी के अनुसार एसोसिएशन का चुनाव 20 जनवरी 2026 को शाम 4 बजे निर्धारित था। इससे पूर्व दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक वार्षिक बैठक आयोजित की गई। बैठक में वरिष्ठ अधिवक्ता व पूर्व अध्यक्ष अजय श्रीवास्तव ने बताया कि 5 जुलाई 2024 को हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि एल्डर कमेटी का कार्यकाल दो वर्ष पूर्ण होने के बावजूद एक वर्ष के लिए बढ़ाया जाए, जो 5 जुलाई 2025 को समाप्त हो गया। इसके बाद नई एल्डर कमेटी के चेयरमैन का चुनाव होना था, लेकिन कथित रूप से धांधली की मंशा से यह चुनाव नहीं कराया गया।

बताया गया कि वर्तमान चुनाव अधिकारी जय प्रकाश यादव (एडवोकेट) ने 2 जनवरी 2026 को चुनाव कार्यक्रम घोषित किया था, लेकिन बाद में एल्डर कमेटी के चेयरमैन द्वारा संतोष कुमार मिश्रा को चुनाव अधिकारी नियुक्त कर चुनाव की तिथि बदलकर 20 जनवरी 2026 कर दी गई। आरोप है कि 20 जनवरी को चुनाव अधिकारी ने उसी दिन नामांकन पत्रों की वैधता पर आपत्ति उठाते हुए चुनाव कराने से इंकार कर दिया, जबकि नियमों के अनुसार नामांकन की जांच चुनाव तिथि से पूर्व होनी चाहिए। इसके बाद वे बैठक छोड़कर चले गए, जबकि बड़ी संख्या में अधिवक्ता मतदान के लिए उपस्थित थे। इतना ही नहीं, आरोप लगाया गया कि बार के पत्रों का दुरुपयोग कर फर्जी तरीके से चुनाव संपन्न दिखाते हुए समाचार पत्रों में प्रकाशन कराया गया, जिसकी बार के सदस्यों ने कड़ी निंदा की। इसके बाद कार्यकारिणी की बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि चुनाव पुनः कराया जाए तथा वर्तमान अध्यक्ष को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया जाए। इस प्रस्ताव पर 50 से अधिक सदस्यों ने हस्ताक्षर कर सहमति जताई। नया चुनाव कार्यक्रम के अनुसार, नामांकन दाखिल 30 जनवरी 2026, नामांकन पत्रों की जांचः 31 जनवरी 2026, नाम वापसी 2 फरवरी 2026 व मतदान 4 फरवरी 2026 को होगा एसोसिएशन पदाधिकारियों ने स्पष्ट किया कि चुनाव पूरी पारदर्शिता एवं नियमों के अनुरूप कराया जाएगा।

अप्राकृतिक दुष्कर्म के आरोपी को सात साल कारावास व अर्थदंड की सजा

आजमगढ़, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। पांच वर्ष के मासूम बच्चे के साथ अप्राकृतिक दुष्कर्म किए जाने के मुकदमे में सुनवाई पूरी करने के बाद अदालत ने एक आरोपी को सात वर्ष के सश्रम कारावास तथा पंद्रह हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। यह फैसला विशेष न्यायाधीश पॉक्सो कोर्ट के जज संतोष कुमार यादव ने गुरुवार को सुनाया। अभियोजन कहानी के अनुसार बरदह थाना क्षेत्र के एक गांव में तीन मार्च 2016 की शाम चार बजे आरोपी बच्चू लाल सोनकर पीड़ित बच्चे को टॉफी देने के बहाने बुलाकर अपने घर ले गया और उसके साथ और प्राकृतिक दुष्कर्म किया। पीड़ित बच्चे ने जब यह बात अपने घर वालों को बताने के बाद जब पीड़ित के पिता ने शिकायत की तब बच्चू लाल सोनकर ने पीड़ित के पिता को जान से मारने की धमकी दी इस मामले में पुलिस ने जांच पूरी करने के बाद आरोपी के विरुद्ध चार्जशीट न्यायालय में प्रस्तुत किया।अभियोजन पक्ष की तरफ से विशेष लोक अभियोजक अवधेश कुमार मिश्रा तथा दौलत राम यादव ने कुल आठ गवाहों को न्यायालय में परीक्षित कराया। दोनों पक्षों के दलीलों को सुनने के बाद अदालत ने आरोपी बच्चू लाल सोनकर को सात वर्ष के सश्रम कारावास तथा पंद्रह हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई।

तहसील दिवस में अनुपस्थित रहने पर तीन विभागों को नोटिस

फूलपुर, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। तहसील दिवस के दौरान अनुपस्थित रहने वाले विभागीय अधिकारियों के खिलाफ उपजिलाधिकारी फूलपुर अशोक कुमार ने सख्त रुख अपनाया है। एसडीएम ने 17 जनवरी को आयोजित तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस में अनुपस्थित रहने पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फूलपुर के अधीक्षक, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पवई के अधीक्षक तथा विद्युत वितरण खंड–3 फूलपुर के सहायक अभियंता को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। एसडीएम अशोक कुमार ने संबंधित अधिकारियों को तीन दिन के भीतर अपना स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है।

संविधान पर चर्चा व कार्यकर्ता सम्मेलन 1 फरवरी को

आजमगढ़, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। पिछडा वर्ग विभाग कांग्रेस कमेटी द्वारा ब्लाक हरैया में परिवर्तन प्रतिज्ञा संकल्प संविधान पर चर्चा एवं कार्य कर्ता सम्मेलन 1 फरवरी को आयोजित किया गया है जिसमे मुख्य अतिथि मनोज यादव विशिष्ठ अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में संगठन महासचिव अनिल यादव है। शहर कार्यालय बलरामपुर मोड पर बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता गौतम मौर्या शहर अध्यक्ष ने किया संचालन संदीप ने किया बैठक में जिलाध्यक्ष पिछडा वर्ग कांग्रेस कमेटी ओम प्रकाश यादव ने बताया कि प्रदेश में बढ़ती हुई महंगाई व बेरोजगारी शैक्षिक क्षेत्रों में निरंतर गिरावट हो रही है। इस लिए संविधान के महत्व और उपयोगिता के लिए संविधान पर चर्चा आवश्यक है। जिससे क्षेत्र में भाई चारा और मोहब्बत पैगाम दिया जा सके।

83 हजार डुप्लीकेट मतदाताओं के सत्यापन के बाद ऑनलाइन फीडिंग में जुटे पंचायत सहायक

फूलपुर, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव 2026 को लेकर मतदाता सूची को शुद्ध करने का कार्य तेज़ कर दिया गया है। विकास खंड फूलपुर क्षेत्र में संभावित डुप्लीकेट मतदाताओं के सत्यापन के बाद पंचायत सहायकों द्वारा ऑनलाइन फीडिंग का कार्य किया जा रहा है।

विकास खंड फूलपुर की 89 ग्राम पंचायतों में कुल 83 हजार संभावित डुप्लीकेट मतदाताओं की सूची तैयार की गई है। इन मतदाताओं का सत्यापन ग्राम पंचायतों में नियुक्त बीएलओ (बूथ लेवल अधिकारी) के माध्यम से कराया जा रहा है। सत्यापन के दौरान मतदाता के आधार कार्ड के अंतिम चार अंक दर्ज करना अनिवार्य किया गया है। निर्धारित जानकारी उपलब्ध न होने की स्थिति में संबंधित मतदाता का नाम मतदाता सूची से हटाया जा सकता है। ग्राम स्तर पर सत्यापन के उपरांत बीएलओ द्वारा तैयार की गई सूची को ब्लॉक मुख्यालय पर पंचायत सहायकों के माध्यम से ऑनलाइन फीड किया जा रहा है। इस कार्य की निगरानी खंड प्रेरक स्वच्छ भारत मिशन अनूप मौर्य द्वारा की जा रही है। ऑनलाइन फीडिंग कार्य में पंचायत सहायक रवि कुमार, विकास, नीलांजली, करिश्मा चौरसिया, शीबा, आकांक्षा सहित अन्य कर्मचारी सक्रिय रूप से लगे हुए हैं। प्रशासन का उद्देश्य पंचायत चुनाव से पूर्व मतदाता सूची को पूरी तरह त्रुटिरहित बनाना है।

रेलवे सुरक्षा के प्रति बच्चों को किया जागरूक

सठियांव, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। आरपीएफ थाना आजमगढ़ के उप निरीक्षक संजय कुमार शुक्ला ने अपने स्टाफ के साथ आजमगढ़दृमुहम्मदाबाद रेलवे स्टेशन के मध्य स्थित गेट संख्या 15/C (बनियापार) एवं गेट संख्या 20A (सठियांव) पर विशेष जागरूकता अभियान चलाया। इसके साथ ही रेलवे क्षेत्र सठियांव के निकट स्थित प्राथमिक विद्यालय सठियांव (प्रथम) में भी बच्चों और स्थानीय लोगों को रेलवे सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया। अभियान के दौरान उप निरीक्षक संजय कुमार शुक्ला ने लोगों को ट्रेनों पर पत्थर न फेंकने, अवैध रूप से रेलवे ट्रैक पार न करने तथा बंद रेलवे फाटक को पार करने से होने वाले गंभीर हादसों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस तरह की लापरवाही न केवल जान–माल के लिए खतरा बनती है, बल्कि कानूनी अपराध भी है, जिसके लिए सख्त कार्रवाई का प्रावधान है। विद्यालय परिसर में बच्चों को सरल भाषा में समझाया गया कि रेलवे ट्रैक पर खेलना, शॉर्टकट के तौर पर पटरी पार करना और फाटक बंद होने के बावजूद निकलने की कोशिश करना कितना खतरनाक हो सकता है। बच्चों को यह भी प्रेरित किया गया कि वे अपने परिवार और आसपास के लोगों को भी रेलवे सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक करें। आरपीएफ कर्मियों ने स्थानीय राहगीरों से अपील की कि वे रेलवे नियमों का पालन करें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि या असुरक्षित स्थिति की जानकारी तुरंत रेलवे सुरक्षा बल या संबंधित अधिकारियों को दें। अभियान का उद्देश्य दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाना और आमजन में रेलवे सुरक्षा को लेकर सतर्कता बढ़ाना रहा।

राजकीय इंटर कॉलेज जमुडी में 12वीं के छात्रों को दी गई विदाई

सठियांव, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। शिक्षा क्षेत्र सठियांव के राजकीय इंटर कॉलेज जमुडी के प्रांगण में बृहस्पतिवार को कक्षा 12 के छात्रदृछात्राओं के सम्मान में भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम शिक्षा, संस्कार और स्मृतियों के भावनात्मक संगम का साक्षी बना, जहाँ उत्साह, आत्मीयता और उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ एक साथ देखने को मिलीं। समारोह का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इसके बाद कनिष्ठ कक्षाओं के छात्रदृछात्राओं ने स्वागत गीत, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और प्रेरणादायक वक्तव्यों से वातावरण को उल्लासपूर्ण व भावुक बना दिया। प्रस्तुतियों में विद्यालय के प्रति सम्मान, गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता और वरिष्ठ छात्रों के प्रति स्नेह झलकता रहा। विदाई प्राप्त कर रहे छात्र–छात्राओं ने मंच से अपने अनुभव साझा करते हुए विद्यालय में बिताए गए सुनहरे पलों को याद किया।

उन्होंने शिक्षकों के मार्गदर्शन, अनुशासन और सहयोग के लिए आभार जताते हुए कहा कि विद्यालय से मिले संस्कार और शिक्षा उनके जीवन भर पथप्रदर्शक बनेंगे। कई विद्यार्थी इस दौरान भावुक भी नजर आए। विद्यालय के प्रधानाचार्य अंगद मौर्या ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि सफलता का आधार निरंतर परिश्रम, अनुशासन और नैतिक मूल्यों का पालन है। उन्होंने कहा कि विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण की प्रयोगशाला है, जहाँ से प्राप्त अनुभव जीवन को दिशा देते हैं। अन्य शिक्षकों ने भी विद्यार्थियों को लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने की प्रेरणा दी। समारोह के अंत में छात्रदृछात्राओं को स्मृति–चिन्ह भेंट किए गए तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। इस अवसर पर प्रवक्ता सुनीता पानी, वरिष्ठ अध्यापक ज्ञान प्रकाश राय, उदिता सिंह, विभा बरनवाल, प्रियंका, राजेश चौहान सहित अन्य शिक्षकगण एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

बच्चे ठान लें तो बिना हेलमेट और सीट बेल्ट लगाए घर से बाहर नहीं निकल सकते अभिभावक

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के तहत बच्चों को दिलाई सुरक्षा की शपथ

आजमगढ़, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत 29 जनवरी को प्रतिभा निकेतन इंटर कॉलेज के प्रांगण में परिवहन विभाग द्वारा हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एआरटीओ अतुल कुमार यादव ने छात्र–छात्राओं को सड़क सुरक्षा नियमों की विस्तृत जानकारी दी तथा नियमों की अनदेखी से होने वाली दुर्घटनाओं और उनके दुष्परिणामों से अवगत कराया। उन्होंने बच्चों को शपथ दिलाई कि वे अपने अभिभावकों को बिना हेलमेट और बिना सीट बेल्ट वाहन नहीं चलाने देंगे। इस अवसर पर सभी छात्र–छात्राओं एवं शिक्षकों ने अभियान को आगे बढ़ाने के लिए हस्ताक्षर कर अपनी सहमति और समर्थन व्यक्त किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ध्रुवचंद्र मौर्य ने एआरटीओ एवं परिवहन विभाग का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जीवन को सुरक्षित रखने के लिए सड़क नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। वहीं विद्यालय के प्रबंधकरमाकांत वर्मा ने कहा कि यदि बच्चे ठान लें तो अभिभावक बिना हेलमेट और सीट बेल्ट लगाए घर से बाहर नहीं निकल सकते। बच्चों की जागरूकता समाज में बड़ा बदलाव ला सकती है। कार्यक्रम के माध्यम से छात्रों में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने और दुर्घटनाओं को कम करने का संदेश दिया गया।

मछुआरों के लिए 31 जनवरी को लगेगा वृहद पंजीकरण शिविर

आजमगढ़, 29 जनवरी (देवव्रत संवाद)। प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि सह–योजना के अंतर्गत जनपद के मछुआरों, नाविकों एवं मत्स्य व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए सुनहरा अवसर आने वाला है। मत्स्य पालक विकास अभिकरण द्वारा 31 जनवरी को सुबह 10 बजे ग्राम गोपालीपट्टी, ब्लॉक अतरौलिया, आजमगढ़ में नेशनल फिशरीज डिजिटल प्लेटफॉर्म पंजीकरण हेतु वृहद शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य मछुआरों की आय में वृद्धि, मत्स्य उत्पादन को बढ़ावा देना तथा रोजगार के नए अवसर सृजित करना है। मुख्य कार्यकारी अधिकारी राम नारायण तिवारी ने जानकारी देते हुए बताया कि घाघरा नदी क्षेत्र के नाविक, मत्स्य आखेटक, मत्स्य पालक एवं मत्स्य व्यवसाय से जुड़े सभी व्यक्ति इस शिविर में पहुंचकर एनएफडीपी पोर्टल पर अपना पंजीकरण करा सकते हैं।